53. altich.

| 1500 | |
|--------------|--|
| ALL STREET | |
| Class PS1020 | |
| Book E81 | |
| PRESENTED BY | |
| | |

e N



Books by Thomas Bailey Aldrich. THE STORY OF A BAD BOY. Illustrated, 12mo, \$1.50. MARJORIE DAW AND OTHER PEOPLE. With frontispiece. 12mo, \$1.50. MARJORIE DAW AND OTHER STORIES. In "River-side Aldine Series." 16mo, \$1.00. PRUDENCE PALFREY. With frontispiece, 12mo, \$1.50. THE SAME. 16mo, paper covers, 50 cents. THE QUEEN OF SHEBA. 12mo, \$1.50. THE STILLWATER TRAGEDY. 12mo, \$1.50. THE SAME. 16mo, paper covers, 50 cents. FROM PONKAPOG TO PESTH. Travel Sketches. 16mo. \$1.25. CLOTH OF GOLD AND OTHER POEMS. 12mo, \$1.50. FLOWER AND THORN. Poems. 12mo, \$1.25. BABY BELL. Illustrated. Small 4to, \$1.50. XXXVI LYRICS AND XII SONNETS. Vellum, 18mo, \$1.00. FRIAR JEROME'S BEAUTIFUL BOOK, etc. Vellum, 18mo, \$1.00 POEMS. Ho Holiday Edition. With Portrait and 28 Illustrations. 8vo, \$3.50. POEMS. Household Edition. With Portrait. 12mo, \$1.75; full gilt, \$2.25. MERCEDES AND LATER LYRICS. Crown 8vo, \$1.25. THE STORY OF A CAT. From the French. Illustrated. Izmo, \$1.00. NOVELS AND POEMS. Including "The Story of a Bad Boy," "Marjorie Daw," etc. "Prudence Palfrey," "The Queen of Sheba," "The Stillwater Tragedy," and Poems. Household Edition. The six vols., uniform, 12mo, \$9.00. HOUGHTON, MIFFLIN & CO., Publishers, BOSTON AND NEW YORK.

ALDRICH'S POEMS

•

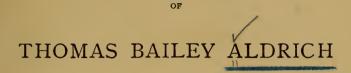
.-





J.B. albrich.

THE POEMS

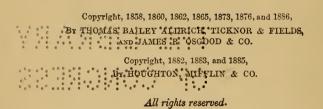


household Edition

WITH ILLUSTRATIONS



BOSTON AND NEW YORK HOUGHTON, MIFFLIN AND COMPANY (The Riverside Press, Cambridge 1887



PS1020

The Riverside Press, Cambridge: Electrotyped and Printed by H. O. Houghton & Co.

| | | | | | | | | | | | | | | | | I | AGE |
|--------------|--------------------|-----|------|------|-----|-----|----|---|---|---|---|---|---|---|---|---|-----|
| FLOWE | R AND THORN . | • | | • | | ٠ | | • | | • | | • | | • | | • | 13 |
| I . C | LOTH OF GOLD. | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | Proem | | | | | | | | | | | | | | | | 17 |
| | An Arab Welcome | | | | | | | | | | | | | | | | 17 |
| | A Turkish Legend | | | | | | | | | | | | | | | | 18 |
| | The Crescent and t | | | | | | | | | | | | | | | | 19 |
| | The Unforgiven | | | | | | | | | | | | | | | | 20 |
| | Dressing the Bride | | | | | | | | | | | | | | | | 21 |
| | Two Songs from th | e] | Per | sia | ın | • | | | | | | | | | | | 22 |
| | Tiger-Lilies | | • | | • | | | | | | | | | | | | 23 |
| | The Sultana . | | | | | | | • | | | | | | | | | 24 |
| | The World's Way | | | | | | • | | | | • | | | | | | 25 |
| | Latakia | | | • | | • | | | | | | | | | | | 26 |
| | When the Sultan g | oes | s to | o Is | spa | aha | ın | | • | | • | | | | | | 28 |
| | Hascheesh . | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | | 30 |
| | A Prelude | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 31 |
| II. II | NTERLUDES. | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | Hesperides . | | | | | | | | | | | | | | | | 35 |
| | Before the Rain . | | | | | | | | | | | | | | | | 36 |
| | After the Rain | | | | | | | | | | | | | | | | 36 |
| | Castles | | | | | | | | | | | | | | | | 37 |
| | Ingratitude . | | | | | | | | | | | | | | | | 38 |
| | December | | | | | | | | | | | | | | | | 39 |
| | The Faded Violet | | | | | | | | | | | | | | | | 41 |
| | Ballad | | | | | | | | | | | | | | | | 42 |
| | The Lunch . | | | | | | | | | | | | | | | | 42 |
| | The One White Ro | se | | | | | | | | | | | | | | | 43 |
| | Nameless Pain | | | | | | | | | | | | | | | | 43 |
| | At Two-and-Twent | у | | | | | | | | | | | | | | | 44 |
| | Song-Time . | • | | • | | | | • | | | | | | | | | 45 |
| | The Dæmon Lover | | | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 45 |
| | Palabras Cariñosas | | | • | | • | | | | • | | • | | • | | | 46 |
| | May | | | | | | | | | | | | | | | | 47 |

| | The Bluebells of New England 4 | 8 |
|--------------|---|---|
| | Wedded 4 | 9 |
| | Romance 5 | 0 |
| | Wedded . <td>1</td> | 1 |
| | Unsung 5 | 2 |
| | Destiny . </td <td>3</td> | 3 |
| | Landscape | 3 |
| | Landscape | ŧ |
| | Haunted | 5 |
| | Fable 5 | 6 |
| | | 7 |
| | Across the Street | 7 |
| | Across the Street . | 8 |
| | Nocturne | Э |
| | Nocturne .< | 0 |
| | Rencontre 6 | 1 |
| | A Winter Piece | 1 |
| | Love's Calendar 6 | 2 |
| | Palinode 6 | 2 |
| TTT | | |
| <u>111</u> . | SPRING IN NEW ENGLAND AND OTHER POEMS. | |
| | Spring in New England 6 Baby Bell | 7 |
| | Baby Bell | 3 |
| | | 4 |
| | Sorcery 8 Invocation to Sleep 8 Seadrift 8 In the Old Church Tower 8 Nin the Old Church Tower 8 | 0 |
| | Invocation to Sleep 8 | 1 |
| | Seadrift 8 | 3 |
| | In the Old Church Tower 8 | 5 |
| | Piscataqua River 8 | 0 |
| | Piscataqua River8The Flight of the Goddess8 | 8 |
| | On an Integlic Head of Minerya | 0 |
| | An Old Castle 9 | 2 |
| | An Old Castle 9 Lost at Sea 9 The Queen's Ride 9 Dirge 9 On Lynn Terrace 9 The Piazza of St. Mark at Midnight 10 The Network-basis 10 | 5 |
| | The Queen's Ride 9 | 7 |
| | Dirge 9 | 8 |
| | On Lynn Terrace | 0 |
| | The Piazza of St. Mark at Midnight 10 | 3 |
| | The Metempsychosis 10 | 4 |
| IV | FRIAR JEROME'S BEAUTIFUL BOOK, ETC. | |
| A | Friar Jerome's Beautiful Book | 1 |
| | | 4 |
| | Miantowona | 7 |
| | The Guerdon . . <th< td=""><td>0</td></th<> | 0 |
| | The Jew's Gift . | 1 |
| | Tita's Tears | * |

vi

| The Lady of Castelnore | • | | | | • | • | 136 |
|------------------------|---|--|--|--|---|---|-----|
| In an Atelier | | | | | | | 140 |
| The Tragedy | | | | | | | 143 |
| Pepita | | | | | | | 146 |
| The Legend of Ara-Cœli | | | | | | | 149 |
| Judith. | | | | | | | |
| I. Judith in the Tower | | | | | | | 164 |
| 11. The Camp of Assur | | | | | | | 174 |
| III. The Flight . | | | | | | | 185 |

V. SONNETS AND QUATRAINS.

SONNETS.

| "Sick of myself and all that keeps the light" 201 |
|---|
| "The increasing moonlight drifts across my bed" . 202 |
| "When I behold what pleasure is Pursuit" 202 |
| "Fantastic Sleep is busy with my eyes" 203 |
| "Thus spake the Preacher: O, my friends, beware" . 204 |
| |
| "Now if Euterpe held me not in scorn" 204 |
| "Pleasant it is to lie amid the grass" 205 |
| "Those forms we fancy shadows, those strange lights" 206 |
| "The soft new grass is creeping o'cr the graves" . 203 |
| "Enamored architect of airy rhyme" |
| "Herewith I send you three pressed withered flowers". 208 |
| "Stand here and look, and softly hold your breath" . 208 |
| "You by the Arno shape your marble dream" 209 |
| "While men pay reverence to mighty things" 210 |
| "Yonder we see it from the steamer's deck" 210 |
| "In scarlet clusters o'er the grav stone-wall" 211 |
| "They never crowned him, never knew his worth" . 212 |
| |
| "Touched with the delicate green of early May" . 212 |
| "Thus spake his dust, so seemed it as I read" 213 |
| "While yet my lip was breathing youth's first breath" 214 |
| |
| "When to soft Sleep we give ourselves away". 215 |

QUATRAINS.

| Day and Night . | | | | | | | | | | | | | 216 |
|---------------------|-----|--|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|-----|
| Maple Leaves . | | | | | | | | | | | | | 216 |
| A Child's Grave . | | | | | | | | | | | | • | 217 |
| Pessimist and Optim | i-t | | | | | | | | | | | | 217 |
| Grace and Strength | | | | | • | | | | | | | | 217 |
| Among the Pines | | | | | | | | • | | • | | | 218 |
| From the Spanish . | | | • | | | | | | | | | • | 218 |
| Masks | • | | | • | | • | | • | | • | • | | 218 |
| Coquette | | | • | | • | | • | | • | | | • | 219 |

| Epitaphs . | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | | | 219 |
|---|-----|-----|------------|----|-----|----|-----|-----|---|----|---|---|---|---|---|----|-------------|
| Popularity . | | | | | | | | | | | | | | | | | 219 |
| Human Ignoran | ce | | | | | | | | | | | | | | | | 220 |
| Spendthrift . | | | | | | | | | | | | | | | | | 220 |
| The Iron Age | | | | | | | | | | | | | | | | | 220 |
| Epicaphs Popularity Human Ignorand Spendthrift The Iron Age Myrtilla On her Blushing On a Volume of Fame | | | | | | | | | | | | | | | | | 221 |
| On her Blushing | | | | Ť | | Ť | | | | ÷. | | Ť | | | | Ť. | 221 |
| On a Volume of | A | or | • • • • | mo | ng | P | Nen | ng | • | | • | | • | | • | | 991 |
| Fame | | 101 | .,,, | | ub | - | | 1.5 | | • | | 1 | | • | | • | 999 |
| The Difference | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 000 |
| On Reading - | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 444 999 |
| The Perce | | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 444 002 |
| Moonrise et See | | • | | • | | • | | • | | • | | * | | • | | • | 220 |
| Domes and Iulia | | | • | | • | | • | | • | | • | | * | | • | | 223 |
| Romeo and June | τ | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 223 |
| Omar Khayyam | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 224 |
| Circumstance . | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 224 |
| Herrick . | • | | • | | • | | • | | • | | • | | ٠ | | • | | 224 |
| Memories . | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 225 |
| From Eastern Se | our | ces | 5 | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 225 |
| On a Volume of Fame . The Difference On Reading — The Rose . Moonrise at Sea Romeo and Julie Omar Khayyám Circumstance . Herrick . Memories . From Eastern So Evil easier than The Parcæ . | Go | od | | • | | • | | | | • | | • | | • | | • | 226 |
| The Parcæ . | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 2 26 |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Mercedes. | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1. The Bivouac 11. At Arguano | | | | | | | | | | | | | | | | | 229 |
| II At Arguano | | | | | | Ť | | Ť | | | | Ť | | | | | 243 |
| 11. 110 1115 unio | • | | | | | | 1 | | | | 1 | | | | | | |
| LATER LYRICS. | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Interlies | | | | | | | | | | | | | | | | | 269 |
| Turios and Enjoy | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 270 |
| Lyrics and Epics | 5 | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 270 |
| Herealty . | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 971 |
| Comedy . | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 070 |
| Prescience . | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 072 |
| One Woman | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 1 | | 273 |
| Realism | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 273 |
| Discipline . | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 274 |
| Appreciation . | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | 275 |
| Thorwaldsen | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | 275 |
| LATER LYRICS. Intaglios Lyrics and Epics Heredity . Comedy . Prescience . One Woman Realism . Discipline . Appreciation . Thorwaldsen The Voice of the Knowledge . In the Belfry of Apparitions . Maréchal Niel . Bayard Taylor Epilogue . | e S | ea | | • | | • | | • | | | | • | | • | | • | 276 |
| Knowledge . | | | | | | | | | • | | • | | • | | • | | 276 |
| In the Belfry of | the | e N | ie | uw | e : | Ke | rk | | | • | | | | • | | • | 277 |
| Apparitions . | | | | | | | | | | | | | | | | | 278 |
| Maréchal Niel . | | | | | | | | | | | | | | | | | 278 |
| Bayard Taylor | | | | | | | | | | | | | | | | | 279 |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | 000 |
| Epilogue . | | | | | | • | | • | | | | | | • | | • | 280 |

VI.

VII.

LIST OF ILLUSTRATIONS.

| | | | _ | | _ | | | | | | | | | | |
|-----------------------|----|---|-----|----|----|---|---|---|---|---|---|-----|-----|-----|------|
| | | | | | | | | | | | | | | | PAGE |
| PORTRAIT | | • | | • | | • | | • | | • | | Fro | nti | spi | ece. |
| DRESSING THE BRIDE | | | • | | • | | • | | • | | • | • | | | 21 |
| WHEN THE SULTAN GOES | то | I | SP. | AH | AN | • | | • | | • | | • | | | 287 |
| FABLE | | | • | | • | | • | | • | | • | • | | • | 56⊀ |
| Spring in New England | > | • | | • | | • | | | | • | | | | | 68 × |
| HEAD OF BABY BELL. | | | • | | • | | • | | • | | • | • | | • | 73 |
| THE QUEEN'S RIDE . | | • | | | | • | | • | | • | | • | | | 98 |
| FRIAR JEROME | • | | • | | • | | • | | • | | • | - | | | 116 |
| LEGEND OF ARA-CŒLI . | | • | | • | | • | | • | | • | | • 1 | | | 163 |
| JUDITH | • | | • | | • | | | | • | | • | | | | 173 |
| Egypt | | • | | • | | • | | • | | • | | • | | | 203 |
| MOONRISE AT SEA . | • | | | | • | | • | | • | | • | | | • | 223 |

.

FLOWER AND THORN.

.

.

~

· ·

FLOWER AND THORN.

TO L. A.

I.

- AT Shiraz, in a sultan's garden, stood A tree whereon a curious apple grew, One side like honey, and one side like rue.
- Thus sweet and bitter is the life of man, The sultan said, for thus together grow Bitter and sweet, but wherefore none may know.
- Herewith together you have flower and thorn, Both rose and brier, for thus together grow Bitter and sweet, but wherefore none may know.

п.

Take them and keep them, Silvery thorn and flower, Plucked just at random In the rosy weather — Snowdrops and pansies, Sprigs of wayside heather, And five-leaved wild-rose Dead within an hour. (13)

FLOWER AND THORN.

Take them and keep them : Who can tell? some day, dear, (Though they be withered, Flower and thorn and blossom,)
Held for an instant Up against thy bosom,
They might make December Seem to thee like May, dear !

.

·

PROEM.

You ask us if by rule or no Our many-colored songs are wrought: Upon the cunning loom of thought, We weave our fancies, so and so.

The busy shuttle comes and goes Across the rhymes, and deftly weaves A tissue out of autumn leaves, With here a thistle, there a rose.

With art and patience thus is made The poet's perfect Cloth of Gold: When woven so, nor moth nor mould Nor time can make its colors fade.

AN ARAB WELCOME.

BECAUSE thou com'st, a weary guest, Unto my tent, I bid thee rest.

(17)

This cruse of oil, this skin of wine, These tamarinds and dates are thine; And while thou eatest, Medjid, there, Shall bathe the heated nostrils of thy mare.

Illah il' Allah! Even so An Arab chieftain treats a foe, Holds him as one without a fault Who breaks his bread and tastes his salt; And, in fair battle, strikes him dead With the same pleasure that he gives him bread!

A TURKISH LEGEND.

A CERTAIN Pasha, dead these thousand years, Once from his harem fled in sudden tears,

And had this sentence on the city's gate Deeply engraven, "Only God is great."

So those four words above the city's noise Hung like the accents of an angel's voice,

And evermore, from the high barbacan, Saluted each returning caravan.

Lost is that city's glory. Every gust Lifts, with crisp leaves, the unknown Pasha's dust.

And all is ruin — save one wrinkled gate Whereon is written, "Only God is great."

THE CRESCENT AND THE CROSS.

KIND was my friend who, in the Eastern land, Remembered me with such a gracious hand, And sent this Moorish Crescent which has been Worn on the haughty bosom of a queen.

No more it sinks and rises in unrest To the soft music of her heathen breast; No barbarous chief shall bow before it more, No turbaned slave shall envy and adore.

I place beside this relic of the Sun A Cross of Cedar brought from Lebanon, Once borne, perchance, by some pale monk who trod The desert to Jerusalem — and his God.

Here do they lie, two symbols of two creeds, Each meaning something to our human needs, Both stained with blood, and sacred made by faith, By tears, and prayers, and martyrdom, and death.

That for the Moslem is, but this for me! The waning Crescent lacks divinity: It gives me dreams of battles, and the woes Of women shut in dim seraglios.

But when this Cross of simple wood I see, The Star of Bethlehem shines again for me, And glorious visions break upon my gloom — The patient Christ, and Mary at the Tomb!

THE UNFORGIVEN.

- NEAR my bed, there, hangs the picture jewels could not buy from me:
- 'T is a Siren, a brown Siren, in her sea-weed drapery,
- Playing on a lute of amber, by the margin of a sea.
- In the east, the rose of morning seems as if 't would blossom soon,
- But it never, never blossoms, in this picture; and the moon
- Never ceases to be crescent, and the June is always June.
- And the heavy-branched banana never yields its creamy fruit;
- In the citron-trees are nightingales forever stricken mute;
- And the Siren sits, her fingers on the pulses of the lute.

20



"DRESSING THE BRIDE." Page 21.

- In the hushes of the midnight, when the heliotropes grow strong
- With the dampness, I hear music hear a quiet, plaintive song —
- A most sad, melodious utterance, as of some immortal wrong —
- Like the pleading, oft repeated, of a Soul that pleads in vain,
- Of a damnéd Soul repentant, that would fain be pure again!—
- And I lie awake and listen to the music of her pain.
- And whence comes this mournful music? whence, unless it chance to be
- From the Siren, the brown Siren, in her sea-weed drapery,
- Playing on a lute of amber, by the margin of a sea.

DRESSING THE BRIDE.

A FRAGMENT.

So, after bath, the slave-girls brought The broidered raiment for her wear, The misty izar from Mosul, The pearls and opals for her hair,

The slippers for her supple feet, (Two radiant crescent moons they were,) And lavender, and spikenard sweet, And attars, nedd, and richest musk. When they had finished dressing her, (The eye of morn, the heart's desire!) Like one pale star against the dusk, A single diamond on her brow Trembled with its imprisoned fire!

TWO SONGS FROM THE PERSIAN.

I.

O CEASE, sweet music, let us rest! Too soon the hateful light is born; Henceforth let day be counted night, And midnight called the morn.

O cease, sweet music, let us rest! A tearful, languid spirit lies, Like the dim scent in violets, In beauty's gentle eyes.

There is a sadness in sweet sound That quickens tears. O music, lest We weep with thy strange sorrow, cease! Be still, and let us rest.

п.

Ah! sad are they who know not love, But, far from passion's tears and smiles, Drift down a moonless sea, beyond The silvery coasts of fairy isles.

And sadder they whose longing lips Kiss empty air, and never touch The dear warm mouth of those they love — Waiting, wasting, suffering much.

But clear as amber, fine as musk, Is life to those who, pilgrim-wise, Move hand in hand from dawn to dusk, Each morning nearer Paradise.

O, not for them shall angels pray! They stand in everlasting light, They walk in Allah's smile by day, And nestle in his heart by night.

TIGER-LILIES.

I LIKE not lady-slippers, Nor yet the sweet-pea blossoms, Nor yet the flaky roses, Red, or white as snow;

I like the chaliced lilies, The heavy Eastern lilies, The gorgeous tiger-lilies, That in our garden grow.

For they are tall and slender; Their mouths are dashed with carmine; And when the wind sweeps by them,

On their emerald stalks They bend so proud and graceful— They are Circassian women, The favorites of the Sultan, Adown our garden walks!

And when the rain is falling,
I sit beside the window
And watch them glow and glisten, How they burn and glow!
O for the burning lilies,
The tender Eastern lilies,
The gorgeous tiger-lilies,

That in our garden grow

THE SULTANA.

In the draperies' purple gloom, In the gilded chamber she stands, I catch a glimpse of her bosom's bloom, And the white of her jewelled hands.

24

Each wandering wind that blows By the lattice, seems to bear From her parted lips the scent of the rose, And the jasmine from her hair.

Her dark-browed odalisques lean To the fountain's feathery rain, And a paroquet, by the broidered screen, Dangles its silvery chain.

But pallid, luminous, cold, Like a phantom she fills the place, Sick to the heart, in that cage of gold, With her sumptuous disgrace!

THE WORLD'S WAY.

AT Haroun's court it chanced, upon a time, An Arab poet made this pleasant rhyme:

"The new moon is a horseshoe, wrought of God, Wherewith the Sultan's stallion shall be shod."

On hearing this, his highness smiled, and gave The man a gold-piece. Sing again, O slave!

Above his lute the happy singer bent, And turned another gracious compliment.

And, as before, the smiling Sultan gave The man a sekkah. Sing again, O slave!

Again the verse came, fluent as a rill That wanders, silver-footed, down a hill.

The Sultan, listening, nodded as before, Still gave the gold, and still demanded more.

The nimble fancy that had climbed so high Grew weary with its climbing by and by:

Strange discords rose; the sense went quite amiss; The singer's rhymes refused to meet and kiss:

Invention flagged, the lute had got unstrung, And twice he sang the song already sung.

The Sultan, furious, called a mute, and said, O Musta, straightway whip me off his head!

Poets! not in Arabia alone You get beheaded when your skill is gone.

LATAKIA.

I.

WHEN all the panes are hung with frost, Wild wizard-work of silver lace,

CLOTH OF GOLD.

I draw my sofa on the rug Before the ancient chimney-place. Upon the painted tiles are mosques And minarets, and here and there A blind muezzin lifts his hands And calls the faithful unto prayer. Folded in idle, twilight dreams, I hear the hemlock chirp and sing As if within its ruddy core It held the happy heart of Spring. Ferdousi never sang like that, Nor Saadi grave, nor Hafiz gay: I lounge, and blow white rings of smoke, And watch them rise and float away.

II.

The curling wreaths like turbans seem Of silent slaves that come and go — Or Viziers, packed with craft and crime, Whom I behead from time to time, With pipe-stem, at a single blow.

And now and then a lingering cloud Takes gracious form at my desire, And at my side my lady stands, Unwinds her veil with snowy hands— A shadowy shape, a breath of fire!

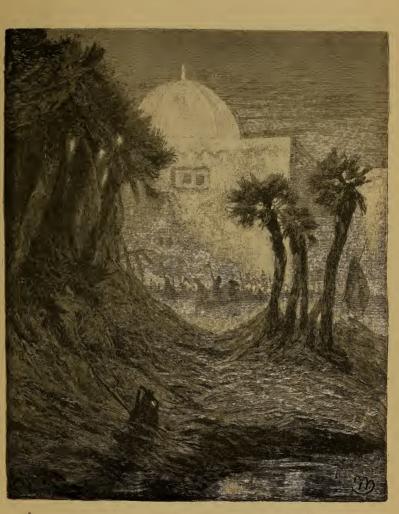
O Love, if you were only here Beside me in this mellow light, 27

CLOTH OF GOLD.

Though all the bitter winds should blow, And all the ways be choked with snow, 'T would be a true Arabian night!

WHEN THE SULTAN GOES TO ISPAHAN.

When the Sultan Shah-Zaman Goes to the city Ispahan, Even before he gets so far As the place where the clustered palm-trees are, At the last of the thirty palace-gates, The flower of the harem, Rose-in-Bloom, Orders a feast in his favorite room-Glittering squares of colored ice, Sweetened with syrop, tinctured with spice, Creams, and cordials, and sugared dates, Syrian apples, Othmanee quinces, Limes, and citrons, and apricots, And wines that are known to Eastern princes; And Nubian slaves, with smoking pots Of spicéd meats and costliest fish And all that the curious palate could wish, Pass in and out of the cedarn doors; Scattered over mosaic floors Are anemones, myrtles, and violets, And a musical fountain throws its jets Of a hundred colors into the air. The dusk Sultana loosens her hair.



"WHEN THE SULTAN GOES TO ISPAHAN." Page 28.

CLOTH OF GOLD.

And stains with the henna-plant the tips Of her pointed nails, and bites her lips Till they bloom again; but, alas, *that* rose Not for the Sultan buds and blows! Not for the Sultan Shah-Zaman When he goes to the city Ispahan.

Then at a wave of her sunny hand The dancing-girls of Samarcand Glide in like shapes from fairy-land, Making a sudden mist in air Of fleecy veils and floating hair And white arms lifted. Orient blood Runs in their veins, shines in their eyes. And there, in this Eastern Paradise, Filled with the breath of sandal-wood, And Khoten musk, and aloes and myrrh, Sits Rose-in-Bloom on a silk divan, Sipping the wines of Astrakhan ; And her Arab lover sits with her. That 's when the Sultan Shah-Zaman Goes to the city Ispahan.

Now, when I see an extra light, Flaming, flickering on the night From my neighbor's casement opposite, I know as well as I know to pray, I know as well as a tongue can say, That the innocent Sultan Shah-Zaman Has gone to the city Ispahan. 29

HASCHEESH.

I.

STRICKEN with dreams, I wandered through the night;

The heavens leaned down to me with splendid fires; The south-wind breathing upon unseen lyres Made music as I went; and to my sight A Palace shaped itself against the skies: Great sapphire-studded portals suddenly Opened on vast Ionic galleries Of gold and porphyry, and I could see, Through half-drawn curtains that let in the day, Dim tropic gardens stretching far away.

II.

Ah! what a wonder fell upon my soul, When from that structure of the upper airs I saw unfold a flight of crystal stairs For my ascending. . . . Then I heard the roll Of unseen oceans clashing at the Pole. . . . A terror seized upon me . . . a vague sense Of near calamity. "O, lead me hence!" I shrieked, and lo! from out a darkling hole That opened at my feet, crawled after me, Up the broad staircase, creatures of huge size, Fanged, warty monsters, with their lips and eyes Hung with slim leeches sucking hungrily. —

CLOTH OF GOLD.

Away, vile drug! I will avoid thy spell, Honey of Paradise, black dew of Hell!

A PRELUDE.

HASSAN BEN ABDUL at the Ivory Gate Of Bagdad sat and chattered in the sun, Like any magpie chattered to himself And four lank, swarthy Arab boys that stopt A gambling game with peach-pits, and drew near. Then Iman Khan, the friend of thirsty souls, The seller of pure water, ceased his cry, And placed his water-skins against the gate --They looked so like him, with their sallow cheeks Puffed out like Iman's. Then a eunuch came And swung a pack of sweetmeats from his head, And stood — a hideous pagan cut in jet. And then a Jew, whose sandal-straps were red With desert-dust, limped, cringing, to the crowd -He, too, would listen; and close after him A jeweller that glittered like his shop. Then two blind mendicants, who wished to go Six diverse ways at once, came stumbling by, But hearing Hassan chatter, sat them down. And if the Khaleef had been riding near, He would have paused to listen like the rest, For Hassan's fame was ripe in all the East. From white-walled Cairo to far Ispahan,

31

CLOTH OF GOLD.

From Mecca to Damascus, he was known, Hassan, the Arab with the Singing Heart. His songs were sung by boatmen on the Nile, By Beddowee maidens, and in Tartar camps, While all men loved him as they loved their eyes; And when he spake, the wisest, next to him, Was he who listened. And thus Hassan sung. — And I, a stranger lingering in Bagdad, Half English and half Arab, by my beard ! Caught at the gilded epic as it grew, And for my Christian brothers wrote it down.

82

II. , INTERLUDES.

- 7

HESPERIDES.

IF thy soul, Herrick, dwelt with me, This is what my songs would be: Hints of our sea-breezes, blent With odors from the Orient: Indian vessels deep with spice; Star-showers from the Norland ice: Wine-red jewels that seem to hold Fire, but only burn with cold; Antique goblets, strangely wrought, Filled with the wine of happy thought; Bridal measures, vain regrets, Laburnum buds and violets : Hopeful as the break of day; Clear as crystal; new as May; Musical as brooks that run O'er yellow shallows in the sun; Soft as the satin fringe that shades The eyelids of thy fragrant maids; Brief as thy lyrics, Herrick, are, And polished as the bosom of a star. (35)

BEFORE THE RAIN.

WE knew it would rain, for all the morn, A spirit on slender ropes of mist Was lowering its golden buckets down Into the vapory amethyst

Of marshes and swamps and dismal fens — Scooping the dew that lay in the flowers, Dipping the jewels out of the sea, To sprinkle them over the land in showers.

We knew it would rain, for the poplars showed The white of their leaves, the amber grain Shrunk in the wind — and the lightning now Is tangled in tremulous skeins of rain!

AFTER THE RAIN.

THE rain has ceased, and in my room The sunshine pours an airy flood; And on the church's dizzy vane The ancient Cross is bathed in blood.

From out the dripping ivy-leaves, Antiquely carven, gray and high,

A dormer, facing westward, looks Upon the village like an eye:

And now it glimmers in the sun, A square of gold, a disk, a speck: And in the belfry sits a Dove With purple ripples on her neck.

CASTLES.

THERE is a picture in my brain
That only fades to come again —
The sunlight, through a veil of rain
To leeward, gilding
A narrow stretch of brown sea-sand,
A lighthouse half a league from land,
And two young lovers, hand in hand,
A castle-building.

Upon the budded apple-trees The robins sing by twos and threes, And ever, at the faintest breeze, Down drops a blossom; And ever would that lover be

The wind that robs the burgeoned tree, And lifts the soft tress daintily On Beauty's bosom.

Ah, graybeard, what a happy thing It was, when life was in its spring, To peep through love's betrothal ring At fields Elysian,

To move and breathe in magic air, To think that all that seems is fair — Ah, ripe young mouth and golden hair, Thou pretty vision!

Well, well, I think not on these two But the old wound breaks out anew, And the old dream, as if 't were true,

In my heart nestles; Then tears come welling to my eyes, For yonder, all in saintly guise, As 't were, a sweet dead woman lies Upon the trestles.

INGRATITUDE.

FOUR bluish eggs all in the moss! Soft-lined home on the cherry-bough! Life is trouble, and love is loss — There's only one robin now.

O robin up in the cherry-tree, Singing your soul away, Great is the grief befallen me, And how can you be so gay?

Long ago when you cried in the nest, The last of the sickly brood, Scarcely a pinfeather warming your breast, Who was it brought you food?

Who said, "Music, come fill his throat, Or ever the May be fied"?Who was it loved the low sweet note And the bosom's sea-shell red?

Who said, "Cherries, grow ripe and big, Black and ripe for this bird of mine"? How little bright-bosom bends the twig, Sipping the black-heart's wine!

Now that my days and nights are woe, Now that I weep for love's dear sake — There you go singing away as though Never a heart could break!

DECEMBER.

ONLY the sea intoning, Only the wainscot-mouse, Only the wild wind moaning Over the lonely house.

Darkest of all Decembers Ever my life has known,

Sitting here by the embers, Stunned and helpless, alone —

Dreaming of two graves lying Out in the damp and chill: One where the buzzard, flying, Pauses at Malvern Hill;

The other—alas! the pillows Of that uneasy bed Rise and fall with the billows Over our sailor's head.

Theirs the heroic story — Died, by frigate and town ! Theirs the Calm and the Glory, Theirs the Cross and the Crown.

Mine to linger and languish Here by the wintry sea. Ah, faint heart! in thy anguish, What is there left to thee?

Only the sea intoning, Only the wainscot-mouse, Only the wild wind moaning Over the lonely house.

THE FADED VIOLET.

WHAT thought is folded in thy leaves ! What tender thought, what speechless pain ! I hold thy faded lips to mine, Thou darling of the April rain !

I hold thy faded lips to mine, Though scent and azure tint are fled — O dry, mute lips! ye are the type Of something in me cold and dead:

Of something wilted like thy leaves; Of fragrance flown, of beauty dim; Yet, for the love of those white hands That found thee by a river's brim —

That found thee when thy dewy mouth Was purpled as with stains of wine — For love of her who love forgot, I hold thy faded lips to mine.

That thou shouldst live when I am dead, When hate is dead, for me, and wrong, For this, I use my subtlest ϵ rt, For this, I fold thee in my song.

BALLAD.

THE blackbird sings in the hazel-brake, And the squirrel sits on the tree; And Blanche she walks in the merry greenwood, Down by the summer sea.

The blackbird lies when he sings of love, And the squirrel, a thief is he; And Blanche is an arrant flirt, I swear, And light as light can be.

O blackbird, die in the hazel-brake! And squirrel, starve on the tree!

And Blanche — you may walk in the merry greenwood.

You are nothing more to me.

THE LUNCH.

A GOTHIC window, where a damask curtain Made the blank daylight shadowy and uncertain: A slab of agate on four eagle-talons Held trimly up and neatly taught to balance: A porcelain dish, o'er which in many a cluster Black grapes hung down, dead-ripe and without lustre:

A melon cut in thin, delicious slices: A cake that seemed mosaic-work in spices: Two China cups with golden tulips sunny, And rich inside with chocolate like honey: And she and I the banquet-scene completing With dreamy words — and very pleasant eating !

THE ONE WHITE ROSE.

A SORROWFUL woman said to me, "Come in and look on our child." I saw an Angel at shut of day, And it never spoke — but smiled.

I think of it in the city's streets, I dream of it when I rest — The violet eyes, the waxen hands, And the one white rose on the breast!

NAMELESS PAIN.

IN my nostrils the summer wind Blows the exquisite scent of the rose: O for the golden, golden wind, Breaking the buds as it goes!

Breaking the buds and bending the grass, And spilling the scent of the rose.

O wind of the summer morn, Tearing the petals in twain, Wafting the fragrant soul Of the rose through valley and plain, I would you could tear my heart to-day And scatter its nameless pain !

AT TWO-AND-TWENTY.

MARIAN, May, and Maud Have not passed me by — Archéd foot, and rosy mouth, And bronze-brown eye!

When my hair is gray, Then I shall be wise; Then, thank Heaven! I shall not care For bronze-brown eyes.

Then let Maud and May And Marian pass me by: So they do not scorn me now, What care I?

SONG-TIME.

FROM out the blossomed cherry-tops Sing, blithesome robin, chant and sing; With chirp, and trill, and magic-stops Win thou the listening ear of Spring!

For while thou lingerest in delight, An idle poet, with thy rhyme, The summer hours will take their flight And leave thee in a barren clime.

Not all the autumn's rustling gold, Nor sun, nor moon, nor star shall bring The jocund spirit which of old Made it an easy joy to sing!

So said a poet — having lost The precious time when he was young — Now wandering by the wintry coast With empty heart and silent tongue.

THE DÆMON LOVER.

UNDER the night, In the white moonshine,

Sit thou with me, By the graveyard tree, Imogene.

The fire-flies swarm In the white moonshine, Each with its light For our bridal night, Imogene.

Blushing with love, In the white moonshine, Lie in my arms, So, safe from alarms, Imogene.

Paler art thou Than the white moonshine. Ho! thou art lost — Thou lovest a Ghost, Imogene.

PALABRAS CARIÑOSAS.

(SPANISH AIR.)

GOOD-NIGHT! I have to say good-night To such a host of peerless things!

Good-night unto the fragile hand All queenly with its weight of rings; Good-night to fond, uplifted eyes, Good-night to chestnut braids of hair, Good-night unto the perfect mouth, And all the sweetness nestled there —

The snowy hand detains me, then I'll have to say Good-night again!

But there will come a time, my love, When, if I read our stars aright, I shall not linger by this porch With my adieus. Till then, good-night! You wish the time were now? And I. You do not blush to wish it so? You would have blushed yourself to death To own so much a year ago —

What, both these snowy hands! ah, then I'll have to say Good-night again!

MAY.

\$

HEBE's here, May is here! The air is fresh and sunny; And the miser-bees are busy Hoarding golden honey.

See the knots of buttercups, And the purple pansies —

Thick as these, within my brain, Grow the wildest fancies.

Let me write my songs to-day. Rhymes with dulcet closes — Four-line epics one might hide In the hearts of roses.

THE BLUEBELLS OF NEW ENGLAND.

THE roses are a regal troop, And modest folk the daisies; But, Bluebells of New England, To you I give my praises —

To you, fair phantoms in the sun, Whom merry Spring discovers, With bluebirds for your laureates, And honey-bees for lovers.

The south-wind breathes, and lo! you throng This rugged land of ours: I think the pale blue clouds of May Drop down, and turn to flowers!

By cottage doors along the roads You show your winsome faces, And, like the spectre lady, haunt The lonely woodland places.

All night your eyes are closed in sleep, Kept fresh for day's adorning: Such simple faith as yours can see God's coming in the morning!

You lead me by your holiness To pleasant ways of duty; You set my thoughts to melody, You fill me with your beauty.

Long may the heavens give you rain, The sunshine its caresses, Long may the woman that I love Entwine you in her tresses!

WEDDED.

(PROVENÇAL AIR.)

THE happy bells shall ring, Marguerite;
The summer birds shall sing, Marguerite —
You smile, but you shall wear
Orange-blossoms in your hair, Marguerite.

Ah me! the bells have rung, Marguerite;

The summer birds have sung, Marguerite — But cypress leaf and rue Make a sorry wreath for you, Marguerite.

ROMANCE.

I.

I HAVE placed a golden Ring upon the hand Of the blithest little Lady in the land!

When the early roses Scent the sunny air, She shall gather white ones To tremble in her hair!

Hasten, happy roses, Come to me by May — In your folded petals Lies my wedding-day.

II.

The chestnuts shine through the cloven rind, And the woodland leaves are red, my dear; The scarlet fuchsias burn in the wind — Funeral plumes for the Year!

The Year which has brought me so much woe That if it were not for you, my dear, I could wish the fuchsias' fire might glow For me as well as the Year.

III.

Out from the depths of my heart Had arisen this single cry, Let me behold my belovéd, Let me behold her, and die.

At last, like a sinful soul At the portals of Heaven I lie, Never to walk with the blest, Ah, never! . . . only to die.

DESTINY.

THREE roses, wan as moonlight and weighed down Each with its loveliness as with a crown, Drooped in a florist's window in a town.

The first a lover bought. It lay at rest, Like flower on flower, that night, on Beauty's breast.

The second rose, as virginal and fair, Shrunk in the tangles of a harlot's hair.

The third, a widow, with new grief made wild, Shut in the icy palm of her dead child.

UNSUNG.

As sweet as the breath that goes From the lips of the white rose, As weird as the elfin lights That glimmer of frosty nights, As wild as the winds that tear The curled red leaf in the air, Is the song I have never sung.

In slumber, a hundred times I have said the mystic rhymes, But ere I open my eyes This ghost of a poem flies; Of the interfluent strains Not even a note remains: I know by my pulses' beat It was something wild and sweet, And my heart is strangely stirred By an unremembered word !

I strive, but I strive in vain, To recall the lost refrain. On some miraculous day Perhaps it will come and stay;

In some unimagined Spring I may find my voice, and sing The song I have never sung.

FROST-WORK.

THESE winter nights, against my window-pane Nature with busy pencil draws designs Of ferns and blossoms and fine spray of pines, Oak-leaf and acorn and fantastic vines, Which she will make when summer comes again — Quaint arabesques in argent, flat and cold, Like curious Chinese etchings. . . . By and by, I in my leafy garden as of old, These frosty fantasies shall charm my eye In azure, damask, emerald, and gold.

LANDSCAPE.

TWILIGHT.

GAUNT shadows stretch along the hill; Cold clouds drift slowly west; Soft flocks of vagrant snow-flakes fill The redwing's empty nest.

By sunken reefs the hoarse sea roars; Above the shelving sands, Like skeletons the sycamores Uplift their wasted hands.

The air is full of hints of grief, Strange voices touched with pain — The pathos of the falling leaf And rustling of the rain.

In yonder cottage shines a light, Far-gleaming like a gem — Not fairer to the Rabbins' sight Was star of Bethlehem!

ROCOCO.

Br studying my lady's eyes I've grown so learnéd day by day, So Machiavelian in this wise, That when I send her flowers, I say

To each small flower (no matter what, Geranium, pink, or tuberose, Syringa, or forget-me-not, Or violet) before it goes:

"Be not triumphant, little flower, When on her haughty heart you lie, But modestly enjoy your hour: She'll weary of you by and by."

HAUNTED.

A NOISOME mildewed vine Crawls to the rotting eaves; The gate has dropped from the rusty hinge, And the walks are stamped with leaves.

Close by the shattered fence The red-clay road runs by To a haunted wood, where the hemlocks groan And the willows sob and sigh.

Among the dank lush flowers The spiteful fire-fly glows, And a woman steals by the stagnant pond Wrapt in her burial clothes.

There's a dark blue scar on her throat, And ever she makes a moan, And the humid lizards gleam in the grass, And the lichens weep on the stone;

And the Moon shrinks in a cloud, And the traveller shakes with fear,

And an Owl on the skirts of the wood Hoots, and says, Do you hear?

Go not there at night, For a spell hangs over all — The palsied elms, and the dismal road, And the broken garden-wall.

O, go not there at night, For a curse is on the place; Go not there, for fear you meet The Murdered face to face!

FABLE.

ROME, 1875.

A CERTAIN bird in a certain wood, Feeling the spring-time warm and good, Sang to it, in melodious mood. On other neighboring branches stood Other birds who heard his song: Loudly he sang, and clear and strong; Sweetly he sang, and it stirred their gall There should be a voice so musical. They said to themselves: "We must stop that bird,

He's the sweetest voice was ever heard.



"FABLE." Page 56.



That rich, deep chest-note, crystal-clear, Is a mortifying thing to hear. We have sharper beaks and hardier wings, Yet we but croak : *this* fellow sings!" So they planned and planned, and killed the bird With the sweetest voice was ever heard.

Passing his grave one happy May, I brought this English daisy away.

A SNOW-FLAKE.

ONCE he sang of summer, Nothing but the summer; Now he sings of winter, Of winter bleak and drear: Just because there's fallen A snow-flake on his forehead. He must go and fancy 'T is winter all the year!

ACROSS THE STREET.

WITH lash on cheek, she comes and goes; I watch her when she little knows: I wonder if she dreams of it.

Sitting and working at my rhymes, I weave into my verse at times Her sunny hair, or gleams of it.

Upon her window-ledge is set A box of flowering mignonette;

Morning and eve she tends to them — The senseless flowers, that do not care About that loosened strand of hair,

As prettily she bends to them.

If I could once contrive to get Into that box of mignonette

Some morning when she tends to them — She comes! I see the rich blood rise From throat to cheek! — down go the eyes,

Demurely, as she bends to them !

IDENTITY.

SOMEWHERE - in desolate wind-swept space -

In Twilight-land — in No-man's-land — Two hurrying Shapes met face to face, And bade each other stand.

- "And who are you?" cried one a-gape, Shuddering in the gloaming light.
- "I know not," said the second Shape, "I only died last night!"

NOCTURNE.

BELLAGGIO.

UP to her chamber window A slight wire trellis goes, And up this Romeo's ladder Clambers a bold white rose.

I lounge in the ilex shadows, I see the lady lean, Unclasping her silken girdle, The curtain's folds between.

She smiles on her white-rose lover, She reaches out her hand And helps him in at the window — I see it where I stand !

To her scarlet lip she holds him, And kisses him many a time — Ah, me! it was he that won her Because he dared to climb!

INTERLUDES.

AN UNTIMELY THOUGHT.

I WONDER what day of the week — I wonder what month of the year — Will it be midnight, or morning, And who will bend over my bier?

- What a hideous fancy to come As I wait, at the foot of the stair, While Lilian gives the last touch To her robe, or the rose in her hair.

Do I like your new dress — pompadour? And do I like you? On my life, You are eighteen, and not a day more, And have not been six years my wife.

Those two rosy boys in the crib Up-stairs are not ours, to be sure ! — You are just a sweet bride in her bloom, All sunshine, and snowy, and pure.

As the carriage rolls down the dark street The little wife laughs and makes cheer — But . . . I wonder what day of the week, I wonder what month of the year.

INTERLUDES.

RENCONTRE.

TOILING across the Mer de Glace, I thought of, longed for thee; What miles between us stretched, alas! — What miles of land and sea!

My foe, undreamed of, at my side Stood suddenly, like Fate. For those who love, the world is wide, But not for those who hate.

A WINTER PIECE.

Sous le voile qui vous protége, Défiant les regards jaloux, Si vous sortez par cette neige, Redoutez vos pieds andalous. Théophile GAUTIER.

BENEATH the heavy veil you wear, Shielded from jealous eyes you go; But of your pretty feet have care If you should venture through the snow.

Howe'er you tread, a dainty mould Betrays that light foot all the same; Upon this glistening, snowy fold

INTERLUDES.

Thus guided, one might come too close Upon the slyly-hidden nest Where Psyche, with her cheek's cold rose, On Love's warm bosom lies at rest.

LOVE'S CALENDAR.

THE Summer comes and the Summer goes; Wild-flowers are fringing the dusty lanes, The swallows go darting through fragrant rains, Then, all of a sudden — it snows.

Dear Heart, our lives so happily flow, So lightly we heed the flying hours, We only know Winter is gone — by the flowers, We only know Winter is come — by the snow.

PALINODE.

I.

WHEN I was young and light of heart I made sad songs with easy art: Now I am sad, and no more young, My sorrow cannot find a tongue. п.

Pray, Muses, since I may not sing Of Death or any grievous thing, Teach me some joyous strain, that I May mock my youth's hypocrisy!



III.

SPRING IN NEW ENGLAND

AND OTHER POEMS.

SPRING IN NEW ENGLAND

AND OTHER POEMS.

SPRING IN NEW ENGLAND.

I.

THE long years come and go, And the Past, The sorrowful, splendid Past, With its glory and its woe,

Seems never to have been. The bugle's taunting blast Has died away by Southern ford and glen: The mock-bird sings unfrightened in its dell; The ensanguined stream flows pure again; Where once the hissing death-bolt fell, And all along the artillery's level lines

Leapt flames of hell, The farmer smiles upon the sprouting grain, And tends his vines.

Seems never to have been?

O sombre days and grand,

How ye crowd back once more, Seeing our heroes' graves are green

SPRING IN NEW ENGLAND.

By the Potomac and the Cumberland, And in the valley of the Shenandoah!

II.

Now while the pale arbutus in our woods Wakes to faint life beneath the dead year's leaves, And the bleak North lets loose its wailing broods Of winds upon us, and the gray sea grieves Along our coast; while yet the Winter's hand Heavily presses on New England's heart, And Spring averts the sunshine of her eyes Lest some vain cowslip should untimely start — While we are housed in this rude season's gloom,

In this rude land,

Bereft of warmth and bloom,

We know, far off beneath the Southern skies, Where the flush blossoms mock our drifts of snow And the lithe vine unfolds its emerald sheen — On many a sunny hillside there, we know

Our heroes' graves are green.

III.

The long years come, but they Come not again! Through vapors dense and gray Steals back the May,

But they come not again -

Swept by the battle's fiery breath

Down unknown ways of death.

How can our fancies help but go



"SPRING IN NEW ENGLAND." Page 68.

~

SPRING IN NEW ENGLAND.

Out from this realm of mist and rain, Out from this realm of sleet and snow, When the first Southern violets blow?

IV.

While yet the year is young Many a garland shall be hung

In our gardens of the dead; On obelisk and urn Shall the lilac's purple burn,

And the wild-rose leaves be shed. And afar in the woodland ways, Through the rustic church-yard gate Matrons and maidens shall pass, Striplings and white-haired men, And, spreading aside the grass, Linger at name and date, Remembering old, old days! And the lettering on each stone Where the mould's green breath has blown Tears shall wash clear again !

v.

- But far away to the South, in the sultry, stricken land —
- On the banks of silvery streams gurgling among their reeds,
- By many a drear morass, where the long-necked pelican feeds,
- By many a dark bayou, and blinding dune of sand,

- By many a cypress swamp where the cayman seeks its prey,
- In many a moss-hung wood, the twilight's haunt by day,
- And down where the land's parched lip drinks at the salt sea-waves,
- And the ghostly sails glide by there are piteous, nameless graves.

Their names no tongue may tell, Buried there where they fell, The bravest of our braves! Never sweetheart, or friend,

Wan pale mother, or bride,

Over these mounds shall bend,

Tenderly putting aside

The unremembering grass!

Never the votive wreath

For the unknown brows beneath, Never a tear, alas!

How can our fancies help but go Out from this realm of mist and rain, Out from this realm of sleet and snow, When the first Southern violets blow? How must our thought bend over them. Blessing the flowers that cover them —

Piteous, nameless graves!

VI.

Ah, but the life they gave Is not shut in the grave:

SPRING IN NEW ENGLAND.

The valorous spirits freed Live in the vital deed! Marble shall crumble to dust. Plinth of bronze and of stone. Carved escutcheon and crest — Silently, one by one, The sculptured lilies fall: Softly the tooth of the rust Gnaws through the brazen shield: Broken, and covered with stains, The crossed stone swords must yield: Mined by the frost and the drouth, Smitten by north and south, Smitten by east and west, Down comes column and all! But the great deed remains.

VII.

When we remember how they died — In dark ravine and on the mountain-side, In leaguered fort and fire-encircled town, Upon the gun-boat's splintered deck, And where the iron ships went down — How their dear lives were spent, In the crushed and reddened wreck, By lone lagoons and streams, In the weary hospital-tent, In the cockpit's crowded hive — How they languished and died In the black stockades — it seems

71

Ignoble to be alive! Tears will well to our eyes, And the bitter doubt will rise — But hush! for the strife is done, Forgiven are wound and scar; The fight was fought and won Long since, on sea and shore, And every scattered star Set in the blue once more: We are one as before, With the blot from our scutcheon gone!

VIII.

So let our heroes rest, Upon your sunny breast:

Keep them, O South, our tender hearts and true, Keep them, O South, and learn to hold them dear From year to year ! Never forget,

Dying for us, they died for you. This hallowed dust should knit us closer yet.

IX.

Hark! 't is the bluebird's venturous strain High on the old fringed elm at the gate — Sweet-voiced, valiant on the swaying bough, Alert, elate, Dodging the fitful spits of snow, New England's poet-laureate Telling us Spring has come again !



"BABY BELL." Page 73.

BABY BELL.

BABY BELL.

I.

HAVE you not heard the poets tellHow came the dainty Baby BellInto this world of ours?The gates of heaven were left ajar:With folded hands and dreamy eyes,Wandering out of Paradise,She saw this planet, like a star,

Hung in the glistening depths of even — Its bridges, running to and fro, O'er which the white-winged Angels go,

Bearing the holy Dead to heaven. She touched a bridge of flowers — those feet, So light they did not bend the bells Of the celestial asphodels, They fell like dew upon the flowers : Then all the air grew strangely sweet! And thus came dainty Baby Bell

Into this world of ours.

II.

She came and brought delicious May,

The swallows built beneath the eaves;

Like sunlight, in and out the leaves The robins went, the livelong day; The lily swung its noiseless bell;

BABY BELL.

And o'er the porch the trembling vine Seemed bursting with its veins of wine. How sweetly, softly, twilight fell! O, earth was full of singing-birds And opening springtide flowers, When the dainty Baby Bell

Came to this world of ours!

m.

O Baby, dainty Baby Bell, How fair she grew from day to day!

What woman-nature filled her eyes, What poetry within them lay — Those deep and tender twilight eyes,

So full of meaning, pure and bright

As if she yet stood in the light Of those oped gates of Paradise. And so we loved her more and more:

Ah, never in our hearts before

Was love so lovely born! We felt we had a link between This real world and that unseen —

The land beyond the morn; And for the love of those dear eyes, For love of her whom God led forth, (The mother's being ceased on earth When Baby came from Paradise,) — For love of Him who smote our lives,

And woke the chords of joy and pain, We said, *Dear Christ!* — our hearts bent down Like violets after rain.

IV.

And now the orchards, which were white

And red with blossoms when she came, Were rich in autumn's mellow prime; The clustered apples burnt like flame, The soft-cheeked peaches blushed and fell, The folded chestnut burst its shell, The grapes hung purpling in the grange: And time wrought just as rich a change In little Baby Bell.

Her lissome form more perfect grew, And in her features we could trace, In softened curves, her mother's face.

Her angel-nature ripened too:

We thought her lovely when she came,

But she was holy, saintly now . . .

Around her pale angelic brow We saw a slender ring of flame.

v.

God's hand had taken away the seal

That held the portals of her speech; And oft she said a few strange words

Whose meaning lay beyond our reach. She never was a child to us, We never held her being's key; We could not teach her holy things: She was Christ's self in purity.

vī.

It came upon us by degrees, We saw its shadow ere it fell — The knowledge that our God had sent His messenger for Baby Bell. We shuddered with unlanguaged pain, And all our hopes were changed to fears, And all our thoughts ran into tears Like sunshine into rain. We cried aloud in our belief, "O, smite us gently, gently, God! Teach us to bend and kiss the rod, And perfect grow through grief." Ah! how we loved her, God can tell; Her heart was folded deep in ours. Our hearts are broken, Baby Bell!

VII.

At last he came, the messenger,

The messenger from unseen lands: And what did dainty Baby Bell? She only crossed her little hands, She only looked more meek and fair! We parted back her silken hair, We wove the roses round her brow — White buds, the summer's drifted snow, — Wrapt her from head to foot in flowers . . . And thus went dainty Baby Bell

Out of this world of ours!

PAMPINA.

LYING by the summer sea I had a dream of Italy.

Chalky cliffs and miles of sand, Mossy reefs and salty caves, Then the sparkling emerald waves, Faded; and I seemed to stand, Myself a languid Florentine, In the heart of that fair land. And in a garden cool and green, Boccaccio's own enchanted place, I met Pampina face to face ----A maid so lovely that to see Her smile is to know Italy. Her hair was like a coronet Upon her Grecian forehead set. Where one gem glistened sunnily Like Venice, when first seen at sea. I saw within her violet eyes The starlight of Italian skies, And on her brow and breast and hand The olive of her native land.

And, knowing how in other times Her lips were ripe with Tuscan rhymes Of love and wine and dance, I spread

PAMPINA.

My mantle by an almond-tree, And "Here, beneath the rose," I said, "I'll hear thy Tuscan melody." I heard a tale that was not told In those ten dreamy days of old, When Heaven, for some divine offence, Smote Florence with the pestilence; And in that garden's odorous shade The dames of the Decameron. With each a loval lover, strayed, To laugh and sing, at sorest need, To lie in the lilies in the sun With glint of plume and silver brede. And while she whispers in my ear, The pleasant Arno murmurs near, The dewy, slim chameleons run Through twenty colors in the sun; The breezes blur the fountain's glass, And wake Æolian melodies, And scatter from the scented trees The lemon-blossoms on the grass.

The tale? I have forgot the tale — A Lady all for love forlorn, A rosebud, and a nightingale That bruised his bosom on the thorn; A jar of rubies buried deep, A glen, a corpse, a child asleep, A Monk, that was no monk at all, In the moonlight by a castle-wall.

PAMPINA.

Now while the large-eyed Tuscan wove The gilded thread of her romance — Which I have lost by grievous chance — The one dear woman that I love, Beside me in our seaside nook, Closed a white finger in her book, Half vext that she should read, and weep For Petrarch, to a man asleep! And scorning me, so tame and cold, She rose, and wandered down the shore, Her wine-dark drapery, fold in fold, Imprisoned by an ivory hand; And on a bowlder, half in sand, She stood, and looked at Appledore.

And waking, I beheld her there Sea-dreaming in the moted air, A siren lithe and debonair, With wristlets woven of scarlet weeds, And oblong lucent amber beads Of sea-kelp shining in her hair. And as I thought of dreams, and how The something in us never sleeps, But laughs, or sings, or moans, or weeps, She turned — and on her breast and brow I saw the tint that seemed not won From kisses of New England sun; I saw on brow and breast and hand The olive of a sunnier land ! She turned — and, lo! within her eyes

SORCERY.

There lay the starlight of Italian skies. Most dreams are dark, beyond the range Of reason; oft we cannot tell If they are born of heaven or hell: But to my soul it seems not strange That, lying by the summer sea, With that dark woman watching me, I slept and dreamed of Italy!

SORCERY.

Go on your way, and let me pass. You stop a wild despair. I would that I were turned to brass Like that chained lion there,

Which, couchant by the postern gate, In weather foul or fair, Looks down serenely desolate, And nothing does but stare!

Ah, what's to me the burgeoned year, The sad leaf or the gay? Let Launcelot and Queen Guinevere Their falcons fly this day.

'T will be as royal sport, pardie, As falconers have tried

INVOCATION TO SLEEP.

At Astolat — but let me be! I would that I had died.

There was a woman in the glade: Her hair was soft and brown, And long bent silken lashes weighed Her ivory eyelids down.

I kissed her hand, I called her blest, I held her leal and fair — She turned to shadow on my breast, And melted into air!

And, lo! about me, fold on fold, A writhing serpent hung — An eye of jet, a skin of gold, A garnet for a tongue!

O, let the petted falcons fly Right merry in the sun; But let me be! for I shall die Before the year is done.

INVOCATION TO SLEEP.

I.

THERE is a rest for all things. On still nights There is a folding of a million wings — The swarming honey-bees in unknown woods, The speckled butterflies, and downy broods

In dizzy poplar heights:

Rest for innumerable nameless things,

Rest for the creatures underneath the Sea, And in the Earth, and in the starry Air . . . Why will it not unburden me of care?

It comes to meaner things than my despair.

O weary, weary night, that brings no rest to me!

II.

Spirit of dreams and silvern memories, Delicate Sleep! One who is sickening of his tiresome days Brings thee a soul that he would have thee keep A captive in thy mystical domain, With Puck and Ariel, and the grotesque train That people slumber. Give his sight Immortal shapes, and bring to him again His Psyche that went out into the night!

III.

Thou who dost hold the priceless keys of rest, Strew lotus-leaves and poppies on my breast,

And bear me to thy castle in the land Touched with all colors like a burning west — The Castle of Vision, where the unchecked thought Wanders at will upon enchanted ground,

> Making no sound In all the corridors . . .

The bell sleeps in the belfry — from its tongue A drowsy murmur floats into the air, Like thistle-down. Slumber is everywhere. The rook 's asleep, and, in its dreaming, caws; And silence mopes where nightingales have sung; The Sirens lie in grottos cool and deep,

The Naiads in the streams: But I, in chilling twilight, stand and wait At the portcullis, at thy castle gate, Yearning to see the magic door of dreams Turn on its noiseless hinges, delicate Sleep!

SEADRIFT.

- SEE where she stands, on the wet sea-sands, Looking across the water: Wild is the night, but wilder still The face of the fisher's daughter.
- What does she there, in the lightning's glare, What does she there, I wonder? What dread demon drags her forth In the night and wind and thunder?
- Is it the ghost that haunts this coast?— The cruel waves mount higher, And the beacon pierces the stormy dark With its javelin of fire.

SEADRIFT.

Beyond the light of the beacon bright A merchantman is tacking; The hoarse wind whistling through the shrouds,

And the brittle topmasts cracking.

The sea it moans over dead men's bones, The sea it foams in anger;

The curlews swoop through the resonant air With a warning cry of danger.

The star-fish clings to the sea-weed's rings In a vague, dumb sense of peril; And the spray, with its phantom-fingers, grasps At the mullein dry and sterile.

O, who is she that stands by the sea, In the lightning's glare, undaunted? — Seems this now like the coast of hell By one white spirit haunted!

The night drags by; and the breakers die Along the ragged ledges;

The robin stirs in his drenchéd nest, The hawthorn blooms on the hedges.

In shimmering lines, through the dripping pines, The stealthy morn advances;

And the heavy sea-fog straggles back Before those bristling lances. Still she stands on the wet sea-sands; The morning breaks above her,

And the corpse of a sailor gleams on the rocks — What if it were her lover?

IN THE OLD CHURCH TOWER.

In the old church tower Hangs the bell;And above it on the vane,In the sunshine and the rain,Cut in gold, St. Peter stands,With the keys in his claspt hands,And all is well.

In the old church tower Hangs the bell; You can hear its great heart beat, Ah! so loud, and wild, and sweet, As the parson says a prayer Over wedded lovers there,

And all is well.

In the old church tower Hangs the bell; Deep and solemn, hark! again, Ah, what passion and what pain!

PISCATAQUA RIVER.

With her hands upon her breast, Some poor Soul has gone to rest Where all is well.

In the old church tower Hangs the bell — An old friend that seems to know All our joy and all our woe; It is glad when we are wed, It is sad when we are dead, And all is well!

PISCATAQUA RIVER.

THOU singest by the gleaming isles, By woods, and fields of corn, Thou singest, and the sunlight smiles Upon my birthday morn.

But I within a city, I, So full of vague unrest, Would almost give my life to lie An hour upon thy breast!

To let the wherry listless go, And, wrapt in dreamy joy, Dip, and surge idly to and fro, Like the red harbor-buoy;

PISCATAQUA RIVER.

To sit in happy indolence, To rest upon the oars, And catch the heavy earthy scents That blow from summer shores;

To see the rounded sun go down, And with its parting fires Light up the windows of the town And burn the tapering spires;

And then to hear the muffled tolls From steeples slim and white, And watch, among the Isles of Shoals, The Beacon's orange light.

O River! flowing to the main Through woods, and fields of corn, Hear thou my longing and my pain This sunny birthday morn;

And take this song which sorrow shapes To music like thine own, And sing it to the cliffs and capes And crags where I am known!

THE FLIGHT OF THE GODDESS.

88

THE FLIGHT OF THE GODDESS.

A MAN should live in a garret aloof, And have few friends, and go poorly clad, With an old hat stopping the chink in the roof, To keep the Goddess constant and glad.

Of old, when I walked on a rugged way, And gave much work for but little bread, The Goddess dwelt with me night and day, Sat at my table, haunted my bed.

The narrow, mean attic, I see it now! — Its window o'erlooking the city's tiles, The sunset's fires, and the clouds of snow, And the river wandering miles and miles.

Just one picture hung in the room, The saddest story that Art can tell — Dante and Virgil in lurid gloom Watching the Lovers float through Hell.

Wretched enough was I sometimes, Pinched, and harassed with vain desires; But thicker than clover sprung the rhymes As I dwelt like a sparrow among the spires.

Midnight filled my slumbers with song; Music haunted my dreams by day. Now I listen and wait and long, But the Delphian airs have died away.

I wonder and wonder how it befell: Suddenly I had friends in crowds; I bade the house-tops a long farewell; "Good-by," I cried, "to the stars and clouds!

"But thou, rare soul, thou hast dwelt with me, Spirit of Poesy! thou divine Breath of the morning, thou shalt be, Goddess! for ever and ever mine."

And the woman I loved was now my bride, And the house I wanted was my own; I turned to the Goddess satisfied — But the Goddess had somehow flown!

Flown, and I fear she will never return; I am much too sleek and happy for her, Whose lovers must hunger, and waste, and burn, Ere the beautiful heathen heart will stir!

I call — but she does not stoop to my cry; I wait — but she lingers, and ah! so long! It was not so in the years gone by, When she touched my lips with chrism of song.

I swear I will get me a garret again, And adore, like a Parsee, the sunset's fires,

90 ON AN INTAGLIO HEAD OF MINERVA. And lure the Goddess, by vigil and pain, Up with the sparrows among the spires.

For a man should live in a garret aloof, And have few friends, and go poorly clad, With an old hat stopping the chink in the roof, To keep the Goddess constant and glad.

ON AN INTAGLIO HEAD OF MINERVA.

BENEATH the warrior's helm, behold The flowing tresses of the woman! Minerva, Pallas, what you will — A winsome creature, Greek or Roman.

Minerva? No! 't is some sly minx In cousin's helmet masquerading; If not — then Wisdom was a dame For sonnets and for serenading!

I thought the goddess cold, austere, Not made for love's despairs and blisses: Did Pallas wear her hair like that? Was Wisdom's mouth so shaped for kisses?

The Nightingale should be her bird, And not the Owl, big-eyed and solemn:

ON AN INTAGLIO HEAD OF MINERVA. 91

How very fresh she looks, and yet She 's older far than Trajan's Column!

The magic hand that carved this face, And set this vine-work round it running, Perhaps ere mighty Phidias wrought Had lost its subtle skill and cunning.

Who was he? Was he glad or sad,Who knew to carve in such a fashion?Perchance he graved the dainty headFor some brown girl that scorned his passion.

Perchance, in some still garden-place, Where neither fount nor tree to-day is, He flung the jewel at the feet Of Phryne, or perhaps 't was Laïs.

But he is dust; we may not know His happy or unhappy story: Nameless, and dead these centuries, His work outlives him — there 's his glory!

Both man and jewel lay in earth Beneath a lava-buried city; The countless summers came and went With neither haste, nor hate, nor pity.

Years blotted out the man, but left The jewel fresh as any blossom,

AN OLD CASTLE.

Till some Visconti dug it up-To rise and fall on Mabel's bosom!

O nameless brother! see how Time Your gracious handiwork has guarded: See how your loving, patient art Has come, at last, to be rewarded.

Who would not suffer slights of men, And pangs of hopeless passion also, To have his carven agate-stone

On such a bosom rise and fall so!

AN OLD CASTLE.

I.

THE gray arch crumbles, And totters and tumbles; The bat has built in the banquet hall; In the donjon-keep Sly mosses creep; The ivy has scaled the southern wall: No man-at-arms Sounds quick alarms A-top of the cracked martello tower: The drawbridge-chain Is broken in twain — The bridge will neither rise nor lower.

AN OLD CASTLE.

Not any manner Of broidered banner Flaunts at a blazoned herald's call. Lilies float In the stagnant moat; And fair they are, and tall.

п.

Here, in the old Forgotten springs, Was wassail held by queens and kings; Here at the board Sat clown and lord, Maiden fair and lover bold, Baron fat and minstrel lean, The prince with his stars, The knight with his scars, The priest in his gabardine.

III.

Where is she Of the fleur-de-lys, And that true knight who wore her gages? Where are the glances That bred wild fancies In curly heads of my lady's pages? Where are those Who, in steel or hose, Held revel here, and made them gay? Where is the laughter That shook the rafter —

AN OLD CASTLE.

Where is the rafter, by the way? Gone is the roof, And perched aloof Is an owl, like a friar of Orders Gray. (Perhaps 't is the priest Come back to feast — He had ever a tooth for capon, he! But the capon's cold, And the steward 's old, And the butler 's lost the larder-key!) The doughty lords Sleep the sleep of swords. Dead are the dames and damozels. The King in his crown Hath laid him down, And the Jester with his bells.

IV.

All is dead here: Poppies are red here, Vines in my lady's chamber grow — If 't was her chamber Where they clamber Up from the poisonous weeds below. All is dead here, Joy is fled here; Let us hence. 'T is the end of all — The gray arch crumbles, And totters, and tumbles, And Silence sits in the banquet hall.

.

LOST AT SEA.

LOST AT SEA.

THE face that Carlo Dolci drew Looks down from out its leafy hood — The holly berries, gleaming through The pointed leaves, seem drops of blood.

Above the cornice, round the hearth, Are evergreens and spruce-tree boughs; 'T is Christmas morning: Christmas mirth And joyous voices fill the house.

I pause, and know not what to do; I feel reproach that I am glad: Until to-day, no thought of you, O Comrade! ever made me sad.

But now the thought of your blithe heart, Your ringing laugh, can give me pain, Knowing that we are worlds apart, Not knowing we shall meet again.

For all is dark that lies in store: Though they may preach, the brotherhood, We know just this, and nothing more, That we are dust, and God is good.

What life begins when death makes end? Sleek gownsmen, is 't so very clear?

LOST AT SEA.

How fares it with us? — O, my Friend, I only know you are not here!

That I am in a warm, light room, With life and love to comfort me, While you are drifting through the gloom, Beneath the sea, beneath the sea!

O wild green waves that lash the sands Of Santiago and beyond, Lift him, I pray, with gentle hands, And bear him on — true heart and fond !

To some still grotto far below The washings of the warm Gulf Stream Bear him, and let the winds that blow About the world not break his dream!

- I smooth my brow. Upon the stair I hear my children shout in glee, With sparkling eyes and floating hair, Bringing a Christmas wreath for me.

Their joy, like sunshine deep and broad, Falls on my heart, and makes me glad: I think the face of our dear Lord Looks down on them, and seems not sad.

THE QUEEN'S RIDE.

THE QUEEN'S RIDE.

AN INVITATION.

'T is that fair time of year, Lady mine, When stately Guinevere, In her sea-green robe and hood, Went a-riding through the wood, Lady mine.

And as the Queen did ride, Lady mine, Sir Launcelot at her side Laughed and chatted, bending over, Half her friend and all her lover, Lady mine.

And as they rode along, Lady mine, The throstle gave them song, And the buds peeped through the grass To see youth and beauty pass, Lady mine.

And on, through deathless time, Lady mine, These lovers in their prime, (Two fairy ghosts together!)

DIRGE.

Ride, with sea-green robe, and feather! Lady mine.

And so we two will ride, Lady mine, At your pleasure, side by side, Laugh and chat; I bending over, Half your friend and all your lover, Lady mine.

But if you like not this, Lady mine, And take my love amiss, Then I 'll ride unto the end, Half your lover, all your friend, Lady mine.

So, come which way you will, Lady mine, Vale, upland, plain, and hill Wait your coming. For one day Loose the bridle, and away! Lady mine.

DIRGE.

LET us keep him warm, Stir the dying fire:



[&]quot;THE QUEEN'S RIDE." Page 98.



DIRGE.

Upon his tired arm Slumbers young Desire.

Soon, ah, very soon We too shall not know Either sun or moon, Either grass or snow.

Others in our place Come to laugh and weep, Win or lose the race, And to fall asleep.

Let us keep him warm, Stir the dying fire: Upon his tired arm Slumbers young Desire.

What does all avail — Love, or power, or gold? Life is like a tale Ended ere 't is told.

Much is left unsaid, Much is said in vain — Shall the broken thread Be taken up again?

Let us keep him warm, Stir the dying fire:

ON LYNN TERRACE.

Upon his tired arm Slumbers young Desire.

Kisses one or two On his eyelids set, That, when all is through, He may not forget.

He has far to go — Is it East or West? Whither? Who may know! Let him take his rest.

Wind, and snow, and sleet — So the long night dies. Draw the winding-sheet, Cover up his eyes.

Let us keep him warm, Stir the dying fire: Upon his tired arm Slumbers young Desire.

ON LYNN TERRACE.

ALL day to watch the blue wave curl and break, All night to hear it plunging on the shore — In this sea-dream such draughts of life I take, I cannot ask for more.

ON LYNN TERRACE.

Behind me lie the idle life and vain, The task unfinished, and the weary hours; That long wave softly bears me back to Spain And the Alhambra's towers!

Once more I halt in Andalusian pass, To list the mule-bells jingling on the height; Below, against the dull esparto grass, The almonds glimmer white.

Huge gateways, wrinkled, with rich grays and browns,

Invite my fancy, and I wander through The gable-shadowed, zigzag streets of towns The world's first sailors knew.

Or, if I will, from out this thin sea-haze Low-lying cliffs of lovely Calais rise; Or yonder, with the pomp of olden days, Venice salutes my eyes.

Or some gaunt castle lures me up its stair;

I see, far off, the red-tiled hamlets shine,

And catch, through slits of windows here and there,

Blue glimpses of the Rhine.

Again I pass Norwegian fjord and fell, And through bleak wastes to where the sunset's fires

ON LYNN TERRACE.

Light up the white-walled Russian citadel, The Kremlin's domes and spires!

And now I linger in green English lanes, By garden-plots of rose and heliotrope; And now I face the sudden pelting rains On some lone Alpine slope.

Now at Tangier, among the packed bazars, I saunter, and the merchants at the doors Smile, and entice me: here are jewels like stars, And curved knives of the Moors;

Cloths of Damascus, strings of amber dates; What would Howadji . . . silver, gold, or stone? Prone on the sun-scorched plain outside the gates The camels make their moan.

All this is mine, as I lie dreaming here, High on the windy terrace, day by day; And mine the children's laughter, sweet and clear, Ringing across the bay.

For me the clouds; the ships sail by for me; For me the petulant sea-gull takes its flight; And mine the tender moonrise on the sea, And hollow caves of night.

THE PIAZZA OF ST. MARK AT MIDNIGHT. 103

THE PIAZZA OF ST. MARK AT MIDNIGHT.

HUSHED is the music, hushed the hum of voices; Gone is the crowd of dusky promenaders — Slender-waisted, almond-eyed Venetians, Princes and paupers. Not a single footfall Sounds in the arches of the Procuratie. One after one, like sparks in cindered paper, Faded the lights out in the goldsmiths' windows. Drenched with the moonlight lies the still Piazza.

Fair as the palace builded for Aladdin,
Yonder St. Mark uplifts its sculptured splendor —
Intricate fretwork, Byzantine mosaic,
Color on color, column upon column,
Barbaric, wonderful, a thing to kneel to!
Over the portal stand the four gilt horses,
Gilt hoof in air, and wide distended nostril,
Fiery, untamed, as in the days of Nero.
Skyward, a cloud of domes and spires and crosses ;
Earthward, black shadows flung from jutting stonework.

High over all the slender Campanile Quivers, and seems a falling shaft of silver!

Hushed is the music, hushed the hum of voices, From coigne and cornice and fantastic gargoyle, At intervals the moan of dove or pigeon, Fairly faint, floats off into the moonlight. This, and the murmur of the Adriatic, Lazily restless, lapping the mossed marble, Staircase or buttress, scarcely break the stillness. Deeper each moment seems to grow the silence, Denser the moonlight in the still Piazza. Hark ! on the Tower above the ancient gateway, The twin bronze Vulcans, with their ponderous hammers,

Hammer the midnight on their brazen bell there !

THE METEMPSYCHOSIS.

ABOVE the petty passions of the crowd I stand in frozen marble like a god, Inviolate, and ancient as the moon. The thing I am, and not the thing Man is, Fills my deep dreaming. Let him moan and die; For he is dust that shall be laid again: I know my own creation was divine. Strewn on the breezy continents I see The veinéd shells and burnished scales which once Enclosed my being - husks that had their use; I brood on all the shapes I must attain Before I reach the Perfect, which is God, And dream my dream, and let the rabble go; For I am of the mountains and the sea, The deserts, and the caverns in the earth, The catacombs and fragments of old worlds.

THE METEMPSYCHOSIS.

I was a spirit on the mountain-tops, A perfume in the valleys, a simoom On arid deserts, a nomadic wind Roaming the universe, a tireless Voice. I was ere Romulus and Remus were; I was ere Nineveh and Babylon; I was, and am, and evermore shall be, Progressing, never reaching to the end.

A hundred years I trembled in the grass, The delicate trefoil that muffled warm A slope on Ida; for a hundred years Moved in the purple gyre of those dark flowers The Grecian women strew upon the dead. Under the earth, in fragrant glooms, I dwelt; Then in the veins and sinews of a pine On a lone isle, where, from the Cyclades, A mighty wind, like a leviathan, Ploughed through the brine, and from those solitudes

Sent Silence, frightened. To and fro I swayed, Drawing the sunshine from the stooping clouds. Suns came and went, and many a mystic moon, Orbing and waning, and fierce meteors, Leaving their lurid ghosts to haunt the night. I heard loud voices by the sounding shore, The stormy sea-gods, and from fluted conchs Wild music, and strange shadows floated by, Some moaning and some singing. So the years Clustered about me, till the hand of God Let down the lightning from a sultry sky, Splintered the pine and split the iron rock; And from my odorous prison-house a bird, I in its bosom, darted: so we flew, Turning the brittle edge of one high wave, Island and tree and sea-gods left behind!

Free as the air from zone to zone I flew, Far from the tumult to the quiet gates Of daybreak; and beneath me I beheld Vineyards, and rivers that like silver threads Ran through the green and gold of pasture-lands, And here and there a hamlet, a white rose, And here and there a city, whose slim spires And palace-roofs and swollen domes uprose Like scintillant stalagmites in the sun; I saw huge navies battling with a storm By ragged reefs along the desolate coasts, And lazy merchantmen, that crawled, like flies, Over the blue enamel of the sea To India or the icy Labradors.

A century was as a single day. What is a day to an immortal soul? A breath, no more. And yet I hold one hour Beyond all price — that hour when from the sky I circled near and nearer to the earth. Nearer and nearer, till I brushed my wings Against the pointed chestnuts, where a stream, That foamed and chattered over pebbly shoals, Fled through the briony, and with a shout Leapt headlong down a precipice; and there, Gathering wild-flowers in the cool ravine,

THE METEMPSYCHOSIS.

Wandered a woman more divinely shaped Than any of the creatures of the air, Or river-goddesses, or restless shades Of noble matrons marvellous in their time For beauty and great suffering; and I sung, I charmed her thought, I gave her dreams, and then

Down from the dewy atmosphere I stole And nestled in her bosom. There I slept From moon to moon, while in her eyes a thought Grew sweet and sweeter, deepening like the dawn — A mystical forewarning ! When the stream, Breaking through leafless brambles and dead leaves, Piped shriller treble, and from chestnut boughs The fruit dropt noiseless through the autumn night, I gave a quick, low cry, as infants do: We weep when we are born, not when we die ! So was it destined ; and thus came I here To walk the earth and wear the form of Man, To suffer bravely as becomes my state, One step, one grade, one cycle nearer God.

And knowing these things, can I stoop to fret, And lie, and haggle in the market-place, Give dross for dross, or everything for naught? No! let me stand above the crowd, and sing, Waiting with hope for that miraculous change Which seems like sleep; and though I waiting starve,

I cannot kiss the idols that are set By every gate, in every street and park; I cannot fawn, I cannot soil my soul; For I am of the mountains and the sea, The deserts, and the caverns in the earth, The catacombs and fragments of old worlds. IV.

FRIAR JEROME'S BEAUTIFUL BOOK, ETC.



FRIAR JEROME'S BEAUTIFUL BOOK.

A. D. 1200.

THE Friar Jerome, for some slight sin, Done in his youth, was struck with woe. "When I am dead," quoth Friar Jerome, "Surely, I think my soul will go Shuddering through the darkened spheres, Down to eternal fires below! I shall not dare from that dread place To lift mine eyes to Jesus' face, Nor Mary's, as she sits adored At the feet of Christ the Lord. Alas! December 's all too brief For me to hope to wipe away The memory of my sinful May!" And Friar Jerome was full of grief That April evening, as he lay On the straw pallet in his cell. He scarcely heard the curfew-bell (111)

Calling the brotherhood to prayer; But he arose, for 't was his care Nightly to feed the hungry poor That crowded to the Convent door.

His choicest duty it had been: But this one night it weighed him down. "What work for an immortal soul, To feed and clothe some lazy clown? Is there no action worth my mood, No deed of daring, high and pure, That shall, when I am dead, endure, A well-spring of perpetual good?"

And straight he thought of those great tomes With clamps of gold — the Convent's boast — How they endured, while kings and realms Past into darkness and were lost; How they had stood from age to age, Clad in their yellow vellum-mail, 'Gainst which the Paynim's godless rage, The Vandal's fire, could naught avail: Though heathen sword-blows fell like hail, Though heathen sword-blows fell like hail, Though cities ran with Christian blood, Imperishable they had stood! They did not seem like books to him, But Heroes, Martyrs, Saints — themselves The things they told of, not mere books Ranged grimly on the oaken shelves.

To those dim alcoves, far withdrawn, He turned with measured steps and slow, Trimming his lantern as he went; And there, among the shadows, bent Above one ponderous folio, With whose miraculous text were blent Seraphic faces: Angels, crowned With rings of melting amethyst; Mute, patient Martyrs, cruelly bound To blazing fagots; here and there, Some bold, serene Evangelist, Or Mary in her sunny hair; And here and there from out the words A brilliant tropic bird took flight; And through the margins many a vine Went wandering - roses, red and white, Tulip, wind-flower, and columbine Blossomed. To his believing mind These things were real, and the wind, Blown through the mullioned window, took Scent from the lilies in the book.

"Santa Maria!" cried Friar Jerome, "Whatever man illumined this, Though he were steeped heart-deep in sin, Was worthy of unending bliss, And no doubt hath it! Ah! dear Lord, Might I so beautify Thy Word! What sacristan, the convents through, Transcribes with such precision? who

Does such initials as I do? Lo! I will gird me to this work, And save me, ere the one chance slips. On smooth, clean parchment I 'll engross The Prophet's fell Apocalypse; And as I write from day to day, Perchance my sins will pass away."

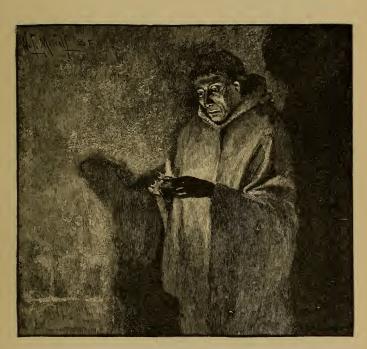
So Friar Jerome began his Book. From break of dawn till curfew-chime He bent above the lengthening page, Like some rapt poet o'er his rhyme. He scarcely paused to tell his beads, Except at night; and then he lay And tost, unrestful, on the straw, Impatient for the coming day -Working like one who feels, perchance, That, ere the longed-for goal be won, Ere Beauty bare her perfect breast, Black Death may pluck him from the sun. At intervals the busy brook, Turning the mill-wheel, caught his ear; And through the grating of the cell He saw the honeysuckles peer, And knew 't was summer, that the sheep In fragrant pastures lay asleep, And felt, that, somehow, God was near. In his green pulpit on the elm, The robin, abbot of that wood, Held forth by times; and Friar Jerome Listened, and smiled, and understood.

While summer wrapt the blissful land What joy it was to labor so, To see the long-tressed Angels grow Beneath the cunning of his hand, Vignette and tail-piece subtly wrought! And little recked he of the poor That missed him at the Convent door; Or, thinking of them, put the thought Aside. "I feed the souls of men Henceforth, and not their bodies!" — yet Their sharp, pinched features, now and then, Stole in between him and his Book, And filled him with a vague regret.

Now on that region fell a blight: The corn grew cankered in its sheath; And from the verdurous uplands rolled A sultry vapor fraught with death --A poisonous mist, that, like a pall, Hung black and stagnant over all. Then came the sickness - the malign, Green-spotted terror called the Pest, That took the light from loving eyes, And made the young bride's gentle breast A fatal pillow. Ah! the woe, The crime, the madness that befell! In one short night that vale became More foul than Dante's inmost hell. Men curst their wives; and mothers left Their nursing babes alone to die,

And wantoned, singing, through the streets, With shameless brow and frenzied eye; And senseless clowns, not fearing God — Such power the spotted fever had — Razed Cragwood Castle on the hill, Pillaged the wine-bins, and went mad. And evermore that dreadful pall Of mist hung stagnant over all: By day, a sickly light broke through The heated fog, on town and field; By night, the moon, in anger, turned Against the earth its mottled shield.

Then from the Convent, two and two, The Prior chanting at their head, The monks went forth to shrive the sick. And give the hungry grave its dead -Only Jerome, he went not forth, But hiding in his dusty nook, "Let come what will, I must illume The last ten pages of my Book!" He drew his stool before the desk, And sat him down, distraught and wan, To paint his daring masterpiece, The stately figure of Saint John. He sketched the head with pious care, Laid in the tint, when, powers of Grace! He found a grinning Death's-head there, And not the grand Apostle's face!



"FRIAR JEROME." Page 116.

Then up he rose with one long cry: "'T is Satan's self does this," cried he, "Because I shut and barred my heart When Thou didst loudest call to me! O Lord, Thou know'st the thoughts of men, Thou know'st that I did yearn to make Thy Word more lovely to the eyes Of sinful souls, for Christ his sake! Nathless, I leave the task undone: I give up all to follow Thee — Even like him who gave his nets To winds and waves by Galilee!"

Which said, he closed the precious Book In silence, with a reverent hand; And drawing his cowl about his face Went forth into the Stricken Land. And there was joy in heaven that day — More joy o'er this forlorn old friar Than over fifty sinless men Who never struggled with desire!

What deeds he did in that dark town, What hearts he soothed with anguish torn, What weary ways of woe he trod, Are written in the Book of God, And shall be read at Judgment Morn. The weeks crept on, when, one still day. God's awful presence filled the sky, And that black vapor floated by,

And lo! the sickness past away. With silvery clang, by thorpe and town, The bells made merry in their spires: O God! to think the Pest is flown! Men kissed each other on the street, And music piped to dancing feet The livelong night, by roaring fires!

Then Friar Jerome, a wasted shape — For he had taken the Plague at last — Rose up, and through the happy town, And through the wintry-woodlands, past Into the Convent. What a gloom Sat brooding in each desolate room! What silence in the corridor! For of that long, innumerous train Which issued forth a month before Scarce twenty had come back again!

Counting his rosary step by step, With a forlorn and vacant air, Like some unshriven churchyard thing, The Friar crawled up the mouldy stair To his damp cell, that he might look Once more on his belovéd Book.

And there it lay upon the stand, Open! — he had not left it so. He grasped it, with a cry; for, lo! He saw that some angelic hand, While he was gone, had finished it! There 't was complete, as he had planned; There, at the end, stood finis, writ And gilded as no man could do — Not even that pious anchoret, Bilfrid, the wonderful, nor yet The miniatore Ethelwold, Nor Durham's Bishop, who of old (England still hoards the priceless leaves) Did the Four Gospels all in gold. And Friar Jerome nor spoke nor stirred, But, with his eyes fixed on that word, He passed from sin and want and scorn; And suddenly the chapel-bells Rang in the holy Christmas-Morn!

In those wild wars which racked the land Since then, and kingdoms rent in twain, The Friar's Beautiful Book was lost — That miracle of hand and brain: Yet, though its leaves were torn and tost, The volume was not writ in vain !

MIANTOWONA.

I.

LONG ere the Pale Face Crossed the Great Water,

MIANTOWONA.

Miantowona Passed, with her beauty, Into a legend Pure as a wild-flower Found in a broken Ledge by the seaside.

Let us revere them — These wildwood legends, Born of the camp-fire. Let them be handed Down to our children — Richest of heirlooms. No land may claim them: They are ours only, Like our grand rivers, Like our vast prairies, Like our dead heroes.

II.

In the pine-forest, Guarded by shadows, Lieth the haunted Pond of the Red Men. Ringed by the emerald Mountains, it lies there Like an untarnished Buckler of silver, Dropped in that valley By the Great Spirit!

MIANTOWONA.

Weird are the figures Traced on its margins — Vine-work and leaf-work, Down-drooping fuchsias, Knots of sword-grasses, Moonlight and starlight, Clouds scudding northward. Sometimes an eagle Flutters across it; Sometimes a single Star on its bosom Nestles till morning.

Far in the ages, Miantowona. Rose of the Hurons. Came to these waters. Where the dank greensward Slopes to the pebbles, Miantowona Sat in her anguish. Ice to her maidens, Ice to the chieftains. Fire to her lover! Here he had won her. Here they had parted, Here could her tears flow. With unwet eyelash, Miantowona Nursed her old father.

MIANTOWONA.

Gray-eyed Tawanda, Oldest of Hurons, Soothed his complainings, Smiled when he chid her Vaguely for nothing — He was so weak now, Like a shrunk cedar White with the hoar-frost. Sometimes she gently Linked arms with maidens, Joined in their dances: Not with her people, Not in the wigwam, Wept for her lover.

Ah! who was like him? Fleet as an arrow, Strong as a bison, Lithe as a panther, Soft as the south-wind, Who was like Wawah? There is one other Stronger and fleeter, Bearing no wampum, Wearing no war-paint, Ruler of councils, Chief of the war-path — Who can gainsay him, Who can defy him? His is the lightning,

His is the whirlwind, Let us be humble, We are but ashes — 'T is the Great Spirit!

Ever at nightfall Miantowona Strayed from the lodges, Passed through the shadows Into the forest: There by the pond-side Spread her black tresses Over her forehead. Sad is the loon's cry Heard in the twilight; Sad is the night-wind, Moaning and moaning; Sadder the stifled Sob of a widow.

Low on the pebbles Murmured the water : Often she fancied It was young Wawah Playing the reed-flute. Sometimes a dry branch Snapped in the forest : Then she rose, startled, Ruddy as sunrise, Warm for his coming !

But when he came not, Back through the darkness, Half broken-hearted, Miantowona Went to her people.

When an old oak dies, First 't is the tree-tops, Then the low branches, Then the gaunt stem goes: So fell Tawanda, Oldest of Hurons, Chief of the chieftains.

Miantowona Wept not, but softly Closed the sad eyelids; With her own fingers Fastened the deer-skin Over his shoulders: Then laid beside him Ash-bow and arrows, Pipe-bowl and wampum, Dried corn and bear-meat -All that was needful On the long journey. Thus old Tawanda, Went to the hunting Grounds of the Red Man. Then, as the dirges

Rose from the village, Miantowona Stole from the mourners, Stole through the cornfields, Passed like a phantom Into the shadows Through the pine forest.

One who had watched her — It was Nahoho, Loving her vainly — Saw, as she passed him, That in her features Made his stout heart quail. He could but follow. Quick were her footsteps, Light as a snow-flake, Leaving no traces On the white clover.

Like a trained runner, Winner of prizes, Into the woodlands Plunged the young chieftain. Once he abruptly Halted, and listened; Then he sped forward Faster and faster Toward the bright water. Breathless he reached it.

Why did he crouch then, Stark as a statue? What did he see there Could so appall him? Only a circle Swiftly expanding, Fading before him; But, as he watched it, Up from the centre, Slowly, superbly, Rose a Pond-Lily.

One cry of wonder, Shrill as the loon's call, Rang through the forest, Startling the silence, Startling the mourners Chanting the death-song. Forth from the village, Flocking together Came all the Hurons -Striplings and warriors, Maidens and old men, Squaws with pappooses. No word was spoken: There stood the Hurons On the dank greensward, With their swart faces Bowed in the twilight. What did they see there?

THE GUERDON.

Only a Lily Rocked on the azure Breast of the water.

Then they turned sadly Each to the other, Tenderly murmuring, "Miantowona!" Soft as the dew falls Down through the midnight, Cleaving the starlight, Echo repeated, "Miantowona!"

THE GUERDON.

Vedder, this legend if it had its due, Would not be sung by me, but told by you In colors such as Tintoretto knew.

SOOTHED by the fountain's drowsy murmuring — Or was it by the west-wind's indolent wing? — The grim court-poet fell asleep one day In the lords' chamber, when chance brought that way The Princess Margaret with a merry train Of damozels and ladies — flippant, vain Court-butterflies — midst whom fair Margaret

Swayed like a rathe and slender lily set

THE GUERDON.

In rustling leaves, for all her drapery Was green and gold, and lovely as could be.

Midway in hall the fountain rose and fell, Filling a listless Naiad's outstretched shell And weaving rainbows in the shifting light. Upon the carven friezes, left and right, Was pictured Pan asleep beside his reed. In this place all things seemed asleep, indeed — The hook-billed parrot on his pendent ring, Sitting high-shouldered, half forgot to swing; The wind scarce stirred the hangings at the door, And from the silken arras evermore Yawned drowsy dwarfs with satyr's face and hoof.

A forest of gold pillars propped the roof, And like one slim gold pillar overthrown, The sunlight through a great stained window shone And lay across the body of Alain. You would have thought, perchance, the man was slain:

As if the checkered column in its fall Had caught and crushed him, he lay dead to all. The parrot's gray bead eye as good as said, Unclosing viciously, "The clown is dead." A dragon-fly in narrowing circles neared, And lit, secure, upon the dead man's beard, Then spread its iris vans in quick dismay, And into the blue summer sped away!

THE GUERDON.

Little was his of outward grace to win The eyes of maids, but white the soul within. Misshaped, and hideous to look upon Was this man, dreaming in the noontide sun, With sunken eyes and winter-whitened hair, And sallow cheeks deep seamed with thought and care.

And so the laughing ladies of the.court, Coming upon him suddenly, stopped short, And shrunk together with a nameless dread : Some, but fear held them, would have turned and fled,

Seeing the uncouth figure lying there. But Princess Margaret, with her heavy hair From out its diamond fillet rippling down, Slipped from the group, and plucking back her gown

With white left hand, stole softly to his side — The fair court gossips staring, curious-eyed, Half mockingly. A little while she stood, Finger on lip; then, with the agile blood Climbing her cheek, and silken lashes wet — She scarce knew what vague pity or regret Wet them — she stooped, and for a moment's space Her golden tresses touched the sleeper's face. Then she stood straight, as lily on its stem, But hearing her ladies titter, turned on them Her great queen's eyes, grown black with scornful frown —

Great eyes that looked the shallow women down.

"Nay, not for love" — one rosy palm she laid Softly against her bosom — "as I'm a maid! Full well I know what cruel things you say Of this and that, but hold your peace to-day. I pray you think no evil thing of this. Nay, not for love's sake did I give the kiss, Not for his beauty who's nor fair nor young, But for the songs which those mute lips have sung!"

That was a right brave princess, one, I hold, Worthy to wear a crown of beaten gold.

THE JEW'S GIFT.

A. D. 1200.

THE Abbot willed it, and it was done. They hanged him high in an iron cage For the spiteful wind and the patient sun To bleach him. Faith, 't was a cruel age! Just for no crime they hanged him there. When one is a Jew, why, one remains A Jew to the end, though he swing in air From year to year in a suit of chains.

'T was May, and the buds into blossom broke, And the apple-boughs were pink and white: What grewsome fruit was that on the oak,

THE JEW'S GIFT.

Swaying and swaying day and night! The miller, urging his piebald mare Over the cross-road, stopped and leered; But never an urchin ventured there, For fear of the dead man's long white beard.

A long white beard like carded wool, Reaching down to the very knee — Of a proper sort with which to pull A heretic Jew to the gallows-tree ! Piteous women-folk turned away, Having no heart for such a thing; But the blackbirds on the alder-spray For very joy of it seemed to sing.

Whenever a monk went shuffling by To the convent over against the hill, He would lift a pitiless pious eye, And mutter, "The Abbot but did God's will!" And the Abbot himself slept no whit less, But rather the more, for this his deed: And the May moon filled, and the loveliness Of springtide flooded upland and mead.

Then an odd thing chanced. A certain clown, On a certain morning breaking stone By the hill-side, saw, as he glanced down, That the heretic's long white beard was gone — Shaved as clean and close as you choose, As close and clean as his polished pate !

THE JEW'S GIFT.

Like wildfire spread the marvellous news, From the ale-house bench to the convent gate.

And the good folk flocked from far and near, And the monks trooped down the rocky height: 'T was a miracle, that was very clear — The Devil had shaved the Israelite! Where is the Abbot? Quick, go tell! Summon him, knave, God's death! straightway! The Devil hath sent his barber from hell, Perchance there will be the devil to pay!

Now a lad that had climbed an alder-tree, The better to overlook the rest, Suddenly gave a shout of glee At finding a wondrous blackbird-nest, Then suddenly flung it from his hand, For lo! it was woven of human hair, Plaited and braided strand upon strand — No marvel the heretic's chin was bare!

Silence fell upon priest and clown, Each stood riveted in his place; The brat that tugged at his mother's gown Caught the terror that blanched her face. Then one, a patriarch, bent and gray, Wise with the grief of years fourscore, Picked up his staff, and took his way By the mountain-path to the Abbot's door —

And bravely told this thing of the nest, How the birds had never touched cheek or eye, But daintily plucked the fleece from the breast To build a home for their young thereby. "Surely, if they were not afeard (God's little choristers, free of guile!) To serve themselves of the Hebrew's beard, It was that he was not wholly vile!

"Perhaps they saw with their keener eyes The grace that we missed, but which God sees: Ah, but He reads all hearts likewise, The good in those, and the guilt in these. Precious is mercy, O my lord!" Humbly the Abbot bowed his head, And, making a gesture of accord — "What would you have? The knave is dead."

"Certes, the man is dead! No doubt Deserved to die; as a Jew, he died; But now he hath served the sentence out (With a dole or two thrown in beside), Suffered all that he may of men — Why not earth him, and no more words?" The Abbot pondered, and smiled, and then — "Well, well! since he gave his beard to the birds!"

TITA'S TEARS.

A FANTASY.

A CERTAIN man of Ischia — it is thus The story runs — one Lydus Claudius, After a life of threescore years and ten, Passed suddenly from out the world of men Into the world of shadows.

In a vale Where shoals of spirits against the moonlight pale Surged ever upward, in a wan-lit place Near heaven, he met a Presence face to face ----A figure like a carving on a spire, Shrouded in wings and with a fillet of fire About the brows - who stayed him there, and said: "This the gods grant to thee, O newly dead! Whatever thing on earth thou holdest dear Shall, at thy bidding, be transported here, Save wife or child, or any living thing." Then straightway Claudius fell to wondering What he should wish for. Having heaven at hand, His wants were few, as you can understand, Riches and titles, matters dear to us, To him, of course, were now superfluous: But Tita, small brown Tita, his young wife, A two weeks' bride when he took leave of life, What would become of her without his care?

Tita, so rich, so thoughtless, and so fair! At present crushed with sorrow, to be sure -But by and by? What earthly griefs endure? They pass like joys. A year, three years at most, And would she mourn her lord, so quickly lost? With fine, prophetic ear, he heard afar The tinkling of some horrible guitar Under her balcony. "Such thing could be," Sighed Claudius; "I would she were with me, Safe from all harm." But as that wish was vain, He let it drift from out his troubled brain (His highly trained austerity was such That self-denial never cost him much), And strove to think what object he might name Most closely linked with the bereaved dame. Her wedding ring ?- 't would be too small to wear: Perhaps a ringlet of her raven hair? If not, her portrait, done in cameo, Or on a background of pale gold? But no,

Such trifles jarred with his severity.

At length he thought: "The thing most meet for me

Would be that antique flask wherein my bride Let fall her heavy tears the night I died." (It was a custom of that simple day To have one's tears sealed up and laid away, As everlasting tokens of regret — . They find the bottles in Greek ruins yet.) For this he wished, then.

THE LADY OF CASTELNORE.

Swifter than a thought The Presence vanished, and the flask was brought — Slender, bell-mouthed, and painted all around With jet-black tulips on a saffron ground; A tiny jar, of porcelain if you will, Which twenty tears would rather more than fill. With careful fingers Claudius broke the seal When, suddenly, a well-known merry peal Of laughter leapt from out the vial's throat, And died, as dies the wood-bird's distant note. Claudius stared; then, struck with strangest fears, Reversed the flask —

Alas, for Tita's tears!

THE LADY OF CASTELNORE.

A. D. 1700.

1.

- BRÉTAGNE had not her peer. In the Province far or near
- There were never such brown tresses, such a faultless hand;
- She had youth, and she had gold, she had jewels all untold,
- And many a lover bold wooed the Lady of the Land.

2.

- But she, with queenliest grace, bent low her pallid face,
- And "Woo me not, for Jesus' sake, fair gentlemen," she said.
- If they woo'd, then with a frown she would strike their passion down:
- She might have wed a crown to the ringlets on her head.

3.

- From the dizzy castle-tips, hour by hour she watched the ships,
- Like sheeted phantoms coming and going evermore,
- While the twilight settled down on the sleepy seaport town,
- On the gables peaked and brown, that had sheltered kings of yore.

4.

- Dusky belts of cedar-wood partly claspt the widening flood;
- Like a knot of daisies lay the hamlets on the hill; In the hostelry below sparks of light would come and go,
- And faint voices, strangely low, from the garrulous old mill.

- Here the land in grassy swells gently broke; there sunk in dells
- With mosses green and purple, and prongs of rock and peat;
- Here, in statue-like repose, an old wrinkled mountain rose,
- With its hoary head in snows, and wild-roses at its feet.

6.

- And so oft she sat alone in the turret of gray stone,
- And looked across the moorland, so woful, to the sea,
- That there grew a village-cry, how her cheek did lose its dye,
- As a ship, once, sailing by, faded on the sapphire lea.

7.

- Her few walks led all one way, and all ended at the gray
- And ragged, jagged rocks that fringe the lonely beach;
- There she would stand, the Sweet! with the white surf at her feet,
- While above her wheeled the fleet sparrow-hawk with startling screech.

- And she ever loved the sea, with its haunting mystery,
- Its whispering weird voices, its never-ceasing roar:
- And 't was well that, when she died, they made her a grave beside
- The blue pulses of the tide, by the towers of Castelnore.

9.

- Now, one chill November morn, many russet autumns gone,
- A strange ship with folded wings lay dozing off the lea;
- It had lain throughout the night with its wings of murky white
- Folded, after weary flight—the worn nursling of the sea.

10.

- Crowds of peasants flocked the sands; there were tears and clasping hands;
- And a sailor from the ship stalked through the church-yard gate.
- Then amid the grass that crept, fading, over her who slept,
- How he hid his face and wept, crying, Late, alas! too late!

- And they called her cold. God knows . . . Underneath the winter snows
- The invisible hearts of flowers grow ripe for blossoming!
- And the lives that look so cold, if their stories could be told,
- Would seem cast in gentler mould, would seem full of love and spring.

IN AN ATELIER.

I PRAY you, do not turn your head; And let your hands lie folded, so. It was a dress like this, wine-red, That Dante liked so, long ago. You don't know Dante? Never mind. He loved a lady wondrous fair — His model? Something of the kind. I wonder if she had your hair!

I wonder if she looked so meek, And was not meek at all (my dear, I want that side light on your cheek). He loved her, it is very clear, And painted her, as I paint you, But rather better, on the whole

.

IN AN ATELIER.

(Depress your chin; yes, that will do): He was a painter of the soul!

(And painted portraits, too, I think, In the INFERNO — devilish good! I 'd make some certain critics blink If I 'd his method and his mood.) Her name was (Fanny, let your glance Rest there, by that majolica tray) — Was Beatrice; they met by chance — They met by chance, the usual way.

(As you and I met, months ago, Do you remember? How your feet Went erinkle-crinkle on the snow Along the bleak gas-lighted street! An instant in the drug-store's glare You stood as in a golden frame, And then I swore it, then and there, To hand your sweetness down to fame.)

They met, and loved, and never wed (All this was long before our time), And though they died, they are not dead — Such endless youth gives mortal rhyme! Still walks the earth, with haughty mien, Great Dante, in his soul's distress; And still the lovely Florentine Goes lovely in her wine-red dress. You do not understand at all? He was a poet; on his page He drew her; and, though kingdoms fall, This lady lives from age to age: A poet — that means painter too, For words are colors, rightly laid; And they outlast our brightest hue, For varnish cracks and crimsons fade.

The poets — they are lucky ones! When we are thrust upon the shelves, Our works turn into skeletons Almost as quickly as ourselves; For our poor canvas peels at length, At length is prized — when all is bare: "What grace!" the critics cry, "what strength!" When neither strength nor grace is there.

Ah, Fanny, I am sick at heart, It is so little one can do; We talk our jargon — live for Art! I'd much prefer to live for you. How dull and lifeless colors are! You smile, and all my picture lies: I wish that I could crush a star To make a pigment for your eyes.

Yes, child, I know I 'm out of tune; The light is bad; the sky is gray: I paint no more this afternoon,

THE TRAGEDY.

So lay your royal gear away. Besides, you're moody — chin on hand — I know not what — not in the vein — Not like Anne Bullen, sweet and bland: You sit there smiling in disdain.

Not like Bluff Harry's radiant Queen, Unconscious of the coming woe, But rather as she might have been, Preparing for the headsman's blow. I see! I 've put you in a miff — Sitting bolt-upright, wrist on wrist. How should you look? Why, dear, as if — Somehow — as if you 'd just been kissed!

THE TRAGEDY.

LA DAME AUX CAMÉLIAS.

La Dame aux Camélias —

I think that was the play; The house was packed from pit to dome

With the gallant and the gay, Who had come to see the Tragedy, And while the hours away.

There was the ruined Spendthrift, And Beauty in her prime;

THE TRAGEDY.

There was the grave Historian, And there the man of Rhyme, And the surly Critic, front to front, To see the play of crime.

And there was pompous Ignorance, And Vice in flowers and lace; Sir Crœsus and Sir Pandarus — And the music played apace.

But of all that crowd I only saw A single, single face!

That of a girl whom I had known In the summers long ago,

When her breath was like the new-mown hay, Or the sweetest flowers that grow;

When her heart was light, and her soul was white As the winter's driven snow.

And there she sat with her great brown eyes, They wore a troubled look;

And I read the history of her life

As it were an open book;

And saw her Soul, like a slimy thing In the bottom of a brook.

There she sat in her rustling silk, With diamonds on her wrist, And on her brow a gleaming thread Of pearl and amethyst.

THE TRAGEDY.

"A cheat, a gilded grief!" I said, And my eyes were filled with mist.

I could not see the players play:
I heard the music moan;
It moaned like a dismal autumn wind, That dies in the woods alone;
And when it stopped I heard it still — The mournful monotone !

What if the Count were true or false?
I did not care, not I;
What if Camille for Armand died?
I did not see her die.
There sat a woman opposite
With piteous lip and eye!

The great green curtain fell on all, On laugh, and wine, and woe, Just as death some day will fall 'Twixt us and life, I know! The play was done, the bitter play, And the people turned to go.

And did they see the Tragedy? They saw the painted scene; They saw Armand, the jealous fool, And the sick Parisian queen:. But they did not see the Tragedy — The one I saw, I mean!

PEPITA.

They did not see that cold-cut face, That furtive look of care;Or, seeing her jewels, only said, "The lady's rich and fair."But I tell you, 't was the Play of Life, And that woman played Despair!

PEPITA.

SCARCELY sixteen years old Is Pepita! (You understand, A breath of this sunny land Turns green fruit into gold:

A maiden's conscious blood In the cheek of girlhood glows; A bud slips into a rose Before it is quite a bud!)

And I in Seville — sedate, An American, with an eye For that strip of indigo sky Half-glimpsed through a Moorish gate —

I see her, sitting up there, With tortoise-shell comb and fan; Red-lipped, but a trifle wan, Because of her coal-black hair;

PEPITA.

And the hair a trifle dull, Because of the eyes beneath,

And the radiance of her teeth When her smile is at its full!

Against the balcony rail She leans, and looks on the street; Her lashes, long and discreet, Shading her eyes like a veil.

Held by a silver dart, The mantilla's delicate lace Falls each side of her face And crosswise over her heart.

This is Pepita — this Her hour for taking her ease: A lover under the trees In the *calle* were not amiss!

Well, I must needs pass by, With a furtive glance, be it said, At the dusk Murillo head And the Andalusian eye!

In the Plaza I hear the sounds Of guitar and castanet; Although it is early yet, The dancers are on their rounds.

PEPITA.

Softly the sunlight falls On the slim Giralda tower, That now peals forth the hour O'er broken ramparts and walls.

Ah, what glory and gloom In this Arab-Spanish town! What masonry, golden-brown, And hung with tendril and bloom!

Place of forgotten kings! — With fountains, that never play, And gardens where day by day The lonely cicada sings!

Traces are everywhere Of the dusky race that came, And passed, like a sudden flame, Leaving their sighs in the air!

Taken with things like these, Pepita fades out of my mind: Pleasure enough I find In Moorish column and frieze.

And yet I have my fears, If this had been long ago, I might . . . well, I do not know . . . She with her sixteen years!

THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

I.

LOOKING at Fra Gervasio, Wrinkled and withered and old and gray, A dry Franciscan from crown to toe, You would never imagine, by any chance, That, in the convent garden one day, He spun this thread of golden romance.

Romance to me, but to him, indeed, 'T was a matter that did not hold a doubt; A miracle, nothing more nor less. Did I think it strange that, in our need, Leaning from Heaven to our distress, The Virgin brought such things about — Gave mute things speech, made dead things move? — Mother of Mercy, Lady of Love! Besides, I might, if I wished, behold The Bambino's self in his cloth of gold And silver tissue, lying in state In the Sacristy. Would the signor wait?

Whoever will go to Rome may see, In the chapel of the Sacristy Of Ara-Cœli, the Sainted Child — Garnished from throat to foot with rings And brooches and precious offerings,

And its little nose kissed quite away By dying lips. At Epiphany, If the holy winter day prove mild, It is shown to the wondering, gaping crowd On the church's steps — held high aloft — While every sinful head is bowed, And the music plays, and the censers' soft White breath ascends like silent prayer.

Many a beggar kneeling there, Tattered and hungry, without a home, Would not envy the Pope of Rome, If he, the beggar, had half the care Bestowed on him that falls to the share Of yonder Image - for you must know It has its minions to come and go, Its perfumed chamber, remote and still, Its silken couch, and its jewelled throne, And a special carriage of its own To take the air in, when it will; And though it may neither drink nor eat, By a nod to its ghostly seneschal It could have of the choicest wine and meat. Often some princess, brown and tall, Comes, and unclasping from her arm The glittering bracelet, leaves it, warm With her throbbing pulse, at the Baby's feet. Ah, he is loved by high and low, Adored alike by simple and wise. The people kneel to him in the street.

THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

What a felicitous lot is his — To lie in the light of ladies' eyes, Petted and pampered, and never to know The want of a dozen *soldi* or so! And what does he do for all of this? What does the little Bambino do? It cures the sick, and, in fact, 't is said Can almost bring life back to the dead. Who doubts it? Not Fra Gervasio. When one falls ill, it is left alone For a while with one — and the fever's gone!

At least, 't was once so; but to-day It is never permitted, unattended By monk or priest, to work its lure At sick folks' beds — all that was ended By one poor soul whose feeble clay Satan tempted and made secure.

It was touching this very point the friar Told me the legend, that afternoon, In the cloisteral garden all on fire With scarlet poppies and golden stalks. Here and there on the sunny walks, Startled by some slight sound we made, A lizard, awaking from its swoon, Shot like an arrow into the shade. I can hear the fountain's languorous tune, (How it comes back, that hour in June When just to exist was joy enough!)

152 THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

I can see the olives, silvery-gray, The carven masonry rich with stains, The gothic windows with lead-set panes, The flag-paved cortile, the convent grates, And Fra Gervasio holding his snuff In a squirrel-like meditative way 'Twixt finger and thumb. But the Legend waits.

п.

It was long ago (so long ago That Fra Gervasio did not know What year of our Lord), there came to Rome Across the Campagna's flaming red, A certain Filippo and his wife — Peasants, and very newly wed. In the happy spring and blossom of life, When the light heart chirrups to lovers' calls, These two, like a pair of birds, had come And built their nest 'gainst the city's walls.

He, with his scanty garden-plots, Raised flowers and fruit for the market-place, Where she, with her pensile, flower-like face — Own sister to her forget-me-nots — Played merchant: and so they thrived apace, In humble content, with humble cares, And modest longings, till, unawares, Sorrow crept on them; for to their nest Had come no little ones, and at last When six or seven summers had past, Seeing no baby at her breast, The husband brooded, and then grew cold; Scolded and fretted over this — Who would tend them when they were old, And palsied, maybe, sitting alone, Hungry, beside the cold hearth-stone? Not to have children, like the rest! It cankered the very heart of bliss.

Then he fell into indolent ways, Neglecting the garden for days and days, Playing at mora, drinking wine, With this and that one - letting the vine Run riot and die for want of care, And the choke-weeds gather; for it was spring, When everything needed nurturing. But he would drowse for hours in the sun, Or sit on the broken step by the shed, Like a man whose honest toil is done, Sullen, with never a word to spare, Or a word that were better all unsaid. And Nina, so light of thought before, Singing about the cottage door In her mountain dialect - sang no more; But came and went, sad-faced and shy, Wishing, at times, that she might die, Brooding and fretting in her turn. Often, in passing along the street, Her basket of flowers poised, peasant-wise, On a lustrous braided coil of her hair.

She would halt, and her dusky cheek would burn Like a poppy, beholding at her feet Some stray little urchin, dirty and bare. And sudden tears would spring to her eyes That the tiny waif was not her own, To fondle, and kiss, and teach to pray. Then she passed onward, making moan. Sometimes she would stand in the sunny square, Like a slim bronze statue of Despair, Watching the children at their play.

In the broad piazza was a shrine, With Our Lady holding on her knee A small nude waxen effigy. Nina passed by it every day, And morn and even, in rain or shine, Repeated an *ave* there. "Divine Mother," she'd cry, as she turned away, "Sitting in paradise, undefiled, O, have pity on my distress!" Then glancing back at the rosy Child, She would cry to it, in her helplessness, "Pray her to send the like to me!"

Now once as she knelt before the saint, Lifting her hands in silent pain, She paled, and her heavy heart grew faint At a thought which flashed across her brain — The blinding thought that, perhaps if she Had lived in the world's miraculous morn God might have chosen *her* to be The mother — O heavenly ecstasy! — Of the little babe in the manger born! She, too, was a peasant girl, like her, The wife of the lowly carpenter! Like Joseph's wife, a peasant girl!

Her strange little head was in a whirl As she rose from her knees to wander home, Leaving her basket at the shrine; So dazed was she, she scarcely knew The old familiar streets of Rome, Nor whither she wished to go, in fine; But wandered on, now crept, now flew, In the gathering twilight, till she came Breathless, bereft of sense and sight, To the gloomy Arch of Constantine, And there they found her, late that night, With her cheeks like snow and her lips like flame !

Many a time from day to day, She heard, as if in a troubled dream, Footsteps around her, and some one saying — Was it Filippo? — "Is she dead?" Then it was some one near her praying, And she was drifting — drifting away From saints and martyrs in endless glory! She seemed to be floating down a stream, Yet knew she was lying in her bed. The fancy held her that she had died,

156 THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

And this was her soul in purgatory, Until, one morning, two holy men From the convent came, and laid at her side The Bambino. Blessed Virgin! then Nina looked up, and laughed, and wept, And folded it close to her heart, and slept.

Slept such a soft, refreshing sleep, That when she awoke her eyes had taken The hyaline lustre, dewy, deep, Of violets when they first awaken; And the half-unravelled, fragile thread Of life was knitted together again. But she shrunk with sudden, strange new pain, And seemed to droop like a flower, the day The Capuchins came, with solemn tread, To carry the Miracle Child away!

III.

Ere spring in the heart of pansies burned, Or the buttercup had loosed its gold, Nina was busy as ever of old With fireside cares; but was not the same, For from the hour when she had turned To clasp the Image the fathers brought To her dying-bed, a single thought Had taken possession of her brain: A purpose, as steady as the flame Of a lamp in some cathedral crypt, Had lighted her on her bed of pain;

THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

The thirst and the fever, they had slipt Away like visions, but this had stayed — To have the Bambino brought again, To have it, and keep it for her own! That was the secret dream which made Life for her now — in the streets, alone, At night, and morning, and when she prayed.

How should she wrest it from the hand Of the jealous Church? How keep the Child? Flee with it into some distant land — Like mother Mary from Herod's ire? Ah, well, she knew not; she only knew It was written down in the Book of Fate That she should have her heart's desire, And very soon now, for of late, In a dream, the little thing had smiled Up in her face, with one eye's blue Peering from underneath her breast, Which the baby fingers had softly prest Aside, to look at her! Holy one! But that should happen ere all was done.

Lying dark in the woman's mind — Unknown, like a seed in fallow ground — Was the germ of a plan, confused and blind At first, but which, as the weeks rolled round, Reached light, and flowered, — a subtile flower, Deadly as nightshade. In that same hour She sought the husband and said to him, With crafty tenderness in her eyes And treacherous archings of her brows, "Filippo, mio, thou lov'st me well? Truly? Then get thee to the house Of the long-haired Jew Ben Raphaim — Seller of curious tapestries, (Ah, he hath everything to sell!) The cunning carver of images — And bid him to carve thee to the life A bambinetto like that they gave In my arms, to hold me from the grave , When the fever pierced me like a knife. Perhaps, if we set the image there By the Cross, the saints would hear the prayer Which in all these years they have not heard."

Then the husband went, without a word, To the crowded Ghetto; for since the days Of Nina's illness, the man had been A tender husband — with lover's ways Striving, as best he might, to wean The wife from her sadness, and to bring Back to the home whence it had fled The happiness of that laughing spring When they, like a pair of birds, had wed.

The image! It was a woman's whim — They were full of whims. But what to him Were a dozen pieces of silver spent, If it made her happy? And so he went

THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

To the house of the Jew Ben Raphaim. And the carver heard, and bowed, and smiled, And fell to work as if he had known The thought that lay in the woman's brain, And somehow taken it for his own: For even before the month was flown He had carved a figure so like the Child Of Ara-Cœli, you 'd not have told, Had both been decked with jewel and chain And dressed alike in a dress of gold, Which was the true one of the twain.

When Nina beheld it first, her heart Stood still with wonder. The skilful Jew Had given the eyes the tender blue, And the cheeks the delicate olive hue, And the form almost the curve and line Of the Image the good Apostle made Immortal with his miraculous art, What time the sculptor ¹ dreamed in the shade Under the skies of Palestine. The bright new coins that clinked in the palm Of the carver in wood were blurred and dim Compared with the eyes that looked at him From the low sweet brows, so seeming calm; Then he went his way, and her joy broke free,

¹ According to a monastic legend, the Santissimo Bambino was carved by a pilgrim, out of a tree which grew on the Mount of Olives, and painted by St. Luke while the pilgrim was sleeping over his work.

160 THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

And Filippo smiled to hear Nina sing In the old, old fashion — carolling Like a very thrush, with many a trill And long-drawn, flute-like, honeyed note, Till the birds in the farthest mulberry, Each outstretching its amber bill, Answered her with melodious throat.

Thus sped two days; but on the third Her singing ceased, and there came a change As of death on Nina; her talk grew strange, Then she sunk in a trance, nor spoke nor stirred; And the husband, wringing his hands dismayed, Watched by the bed; but she breathed no word That night, nor until the morning broke, When she roused from the spell, and feebly laid Her hand on Filippo's arm, and spoke: "Quickly, Filippo! get thee gone To the holy fathers, and beg them send The Bambino hither"-her cheeks were wan And her eyes like coals - "O, go, my friend, Or all is said !" Through the morning's gray Filippo hurried, like one distraught, To the monks, and told his tale; and they, Straight after matins, came and brought The Miracle Child, and went their way.

Once more in her arms was the Infant laid, After these weary months, once more ! Yet the woman seemed like a thing of stone While the dark-robed fathers knelt and prayed; But the instant the holy friars were gone She arose, and took the broidered gown From the Baby Christ, and the yellow crown And the votive brooches and rings it wore, Till the little figure, so gay before In its princely apparel, stood as bare As your ungloved hand. With tenderest care, At her feet, 'twixt blanket and counterpane, She hid the Babe; and then, reaching down To the coffer wherein the thing had lain. Drew forth Ben Raphaim's manikin In haste, and dressed it in robe and crown, With lace and bawble and diamond-pin. This finished, she turned to stone again, And lay as one would have thought quite dead, If it had not been for a spot of red Upon either cheek. At the close of day The Capuchins came, with solemn tread, And carried the false bambino away !

Over the vast Campagna's plain, At sunset, a wind began to blow (From the Apennines it came, they say), Softly at first, and then to grow — As the twilight gathered and hurried by — To a gale, with sudden tumultuous rain And thunder muttering far away. When the night was come, from the blackened sky The spear-tongued lightning slipped like a snake,

162 THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

And the great clouds clashed, and seemed to shake The earth to its centre. Then swept down Such a storm as was never seen in Rome By any one living in that day. Not a soul dared venture from his home, Not a soul in all the crowded town. Dumb beasts dropped dead, with terror, in stall; Great chimney-stacks were overthrown, And about the streets the tiles were blown Like leaves in autumn. A fearful night, With ominous voices in the air! Indeed, it seemed like the end of all. In the convent, the monks for very fright Went not to bed, but each in his cell Counted his beads by the taper's light, Quaking to hear the dreadful sounds, And shrivelling in the lightning's glare. It appeared as if the rivers of Hell Had risen, and overleaped their bounds.

In the midst of this, at the convent door, Above the tempest's raving and roar Came a sudden knocking! Mother of Grace, What a desperate wretch was forced to face Such a night as that was out-of-doors? Across the echoless, stony floors Into the windy corridors The monks came flocking, and down the stair, Silently, glancing each at each, As if they had lost the power of speech.



[&]quot;LEGEND OF ARA-CŒLI," Page 163.

THE LEGEND OF ARA-CŒLI.

Yes — it was some one knocking there ! And then - strange thing ! - untouched by a soul The bell of the convent 'gan to toll! It curdled the blood beneath their hair. Reaching the court, the brothers stood Huddled together, pallid and mute, By the massive door of iron-clamped wood, Till one old monk, more resolute Than the others - a man of pious will -Stepped forth, and letting his lantern rest On the pavement, crouched upon his breast And peeped through a chink there was between The cedar door and the sunken sill. At the instant a flash of lightning came, Seeming to wrap the world in flame. He gave but a glance, and straight arose With his face like a corpse's. What had he seen? Two dripping, little pink-white toes! Then, like a man gone suddenly wild, He tugged at the bolts, flung down the chain, And there, in the night and wind and rain -Shivering, piteous, and forlorn, And naked as ever it was born -On the threshold stood the SAINTED CHILD!

"Since then," said Fra Gervasio, "We have never let the Bambino go Unwatched — no, not by a prince's bed. Ah, signor, it made a dreadful stir." "And the woman — Nina — what of her?

Had she no story?" He bowed his head, And knitting his meagre fingers, so — "In that night of wind and wrath," said he, "There was wrought in Rome a mystery. What know I, signor? They found her dead!"

JUDITH.

I.

JUDITH IN THE TOWER.

Now Holofernes with his barbarous hordes Crost the Euphrates, laying waste the land To Esdraelon, and, falling on the town Of Bethulîa, stormed it night and day Incessant, till within the leaguered walls The boldest captains faltered; for at length The wells gave out, and then the barley failed, And Famine, like a murderer masked and cloaked, Stole in among the garrison. The air Was filled with lamentations, women's moans And cries of children; and at night there came A fever, parching as a fierce simoom. Yet Holofernes could not batter down The brazen gates, nor make a single breach With beam or catapult in those tough walls: And white with rage among the tents he strode, Among the squalid Tartar tents he strode, And curst the gods that gave him not his will,

And curst his captains, curst himself, and all; Then, seeing in what strait the city was, Withdrew his men hard by the fated town Amid the hills, and with a grim-set smile Waited, aloof, until the place should fall. All day the house-top lay in sweltering heat, All night the watch-fires flared upon the towers; And day and night with Israelitish spears The ramparts bristled.

In a tall square Tower, Full-fronting on the vile Assyrian camp, Sat Judith, pallid as the cloudy moon That hung half-faded in the dreary sky; And ever and anon she turned her eyes To where, between two vapor-haunted hills, The dreadful army liked a caldron seethed. She heard, far off, the camels' gurgling groan, The clank of arms, the stir and buzz of camps; Beheld the camp-fires, flaming fiends of night That leapt, and with red hands clutched at the dark;

And now and then, as some mailed warrior stalked Athwart the fires, she saw his armor gleam. Beneath her stretched the temples and the tombs, The city sickening of its own thick breath, And over all the sleepless Pleiades.

A star-like face, with floating clouds of hair — Merari's daughter, dead Manasses' wife,

Who (since the barley-harvest when he died), By holy charities, and prayers, and fasts, Walked with the angels in her widow's weeds, And kept her pure in honor of the dead. But dearer to her bosom than the dead Was Israel, its Prophets and its God: And that dread midnight in the Tower alone, Believing He would hear her from afar, She lifted up the voices of her soul Above the wrangling voices of the world:

"Oh, are we not Thy children who of old Trod the Chaldean idols in the dust, And built our altars only unto Thee?

Didst Thou not lead us unto Canaan For love of us, because we spurned the gods? Didst Thou not bless us that we worshipped Thee?

And when a famine covered all the land, And drove us unto Egypt, where the King Did persecute Thy chosen to the death —

Didst Thou not smite the swart Egyptians then, And guide us through the bowels of the deep That swallowed up their horsemen and their King?

For saw we not, as in a wondrous dream, The up-tost javelins, the plunging steeds, The chariots sinking in the wild Red Sea?

O Lord, Thou hast been with us in our woe, And from Thy bosom Thou hast cast us forth, And to Thy bosom taken us again:

For we have built our temples in the hills

By Sinai, and on Jordan's flowery banks,

- And in Jerusalem we worship Thee.
 - O Lord, look down and help us. Stretch Thy hand

And free Thy people. Make us pure in faith,

And draw us nearer, nearer unto Thee."

As when a harp-string trembles at a touch, And music runs through all its quivering length, And does not die, but seems to float away, A silvery mist uprising from the string — So Judith's prayer rose tremulous in the night, And floated upward unto other spheres; And Judith loosed the hair about her brows, And bent her head, and wept for Israel.

Now while she wept, bowed like a lotus-flower That watches its own shadow in the Nile, A stillness seemed to fall upon the land, As if from out the calyx of a cloud, That blossomed suddenly 'twixt the earth and moon, It fell — and presently there came a sound Of many pinions rustling in the dark, And voices mingling, far and near, and strange As sea-sounds on some melancholy coast When first the equinox unchains the Storm. And Judith started, and with one quick hand Brushed back the plenteous tresses from a cheek That whitened like a lily and so stood, Nor breathed nor moved, but listened with her soul;

And at her side, invisible, there leaned An Angel mantled in his folded wings — To her invisible, but other eyes Beheld the saintly countenance; for, lo! Great clouds of spirits swoopt about the Tower And drifted in the eddies of the wind. The Angel stoopt, and from his radiant brow, And from the gleaming amaranth in his hair, A splendor fell on Judith, and she grew, From her black tresses to her archéd feet, Fairer than morning in Arabia. Then silently the Presence spread his vans, And rose — a luminous shadow in the air — And through the zodiac, a white star, shot.

As one that wakens from a trance, she turned, And heard the twilight twitterings of birds, The wind in the turret, and from far below Camp-sounds of pawing hoof and clinking steel; And in the East she saw the early dawn Breaking the night's enchantment; saw the Moon, Like some wan sorceress, vanish in mid-heaven, Leaving a moth-like glimmer where she died.

And Judith rose, and down the spiral stairs Descended to the garden of the Tower, Where, at the gate, lounged Achior, lately fied From Holofernes; as she past she spoke: "The Lord be with thee, Achior, all thy days." And Achior saw the Spirit of the Lord

Had been with her, and, in a single night, Worked such a miracle of form and face As left her lovelier than all womankind Who was before the fairest in Judza. But she, unconscious of God's miracle, Moved swiftly on among a frozen group Of statues that with empty, slim-necked urns Taunted the thirsty Seneschal, until She came to where, beneath the spreading palms, Sat Chabris with Ozias and his friend Charmis, governors of the leaguered town. They saw a glory shining on her face Like daybreak, and they marvelled as she stood Bending before them with humility. And wrinkled Charmis murmured through his beard : "This woman walketh in the smile of God."

"So walk we all," spoke Judith. "Evermore His light envelops us, and only those Who turn aside their faces droop and die In utter midnight. If we faint we die. O, is it true, Ozias, thou hast sworn To yield our people to their enemies After five days, unless the Lord shall stoop From heaven to help us?"

And Ozias said : "Our young men die upon the battlements; Our wives and children by the empty tanks Lie down and perish." "If we faint we die. The weak heart builds its palace on the sand, The flood-tide eats the palace of a fool: But whoso trusts in God, as Jacob did, Though suffering greatly even to the end, Dwells in a citadel upon a rock That wind nor wave nor fire shall topple down."

"Our young men die upon the battlements," Answered Ozias; "by the dusty wells Our wives and children."

"They shall go and dwell With Seers and Prophets in eternal joy! Is there no God?"

"One only," Chabris spoke, "But now His face is darkened in a cloud. He sees not Israel."

"Is His mercy less Than Holofernes'? Shall we place our faith In this fierce bull of Assur? are we mad That we so tear our throats with our own hands?" And Judith's eyes flashed battle on the three, Though all the woman quivered at her lip Struggling with tears.

"In God we place our trust," Said old Ozias, "yet for five days more."

"Ah! His time is not man's time," Judith cried, "And why should we, the dust about His feet, Decide the hour of our deliverance, Saying to Him, *Thus shalt Thou do*, and so?"

Then gray Ozias bowed his head, abashed That eighty winters had not made him wise, For all the drifted snow of his long beard: "This woman speaketh wisely. We were wrong That in our anguish mocked the Lord our God, The staff, the scrip, the stream whereat we drink." And then to Judith: "Child, what wouldst thou have?"

"I know and know not. Something I know not Makes music in my bosom; as I move A presence goes before me, and I hear New voices mingling in the upper air; Within my hand there seems another hand Close-prest, that leads me to yon dreadful camp; While in my brain the fragments of a dream Lie like a broken string of diamonds, The choicest missing. Ask no more. I know And know not. . . . See! the very air is white With fingers pointing. Where they point I go."

She spoke and paused: the three old men looked up And saw a sudden motion in the air Of white hands waving; and they dared not speak, But muffled their thin faces in their robes,

And sat like those grim statues which the wind Near some unpeopled city in the East From foot to forehead wraps in desert dust.

"Ere thrice the shadow of the temple slant: Across the fountain, I shall come again." Thus Judith softly: then a gleam of light Played through the silken lashes of her eyes, As lightning through the purple of a cloud On some still tropic evening, when the breeze Lifts not a single blossom from the bough: "What lies in that unfolded flower of time No man may know. The thing I can I will, Leaning on God, remembering how He loved Jacob in Syria when he fed the flocks Of Laban, and what miracles Ho did For Abraham and for Isaac at their need. Wait thou the end; and, till I come, keep thou The sanctuaries." And Ozias swore By those weird fingers pointing in the air, And by the soul of Abraham gone to rest, To keep the sanctuaries, though she came And found the bat sole tenant of the Tower, And all the people bleaching on the walls, And no voice left. Then Judith moved away, Her head bowed on her bosom, like to one That moulds some subtle purpose in a dream, And in his passion rises up and walks Through labyrinths of slumber to the dawn.



"JUDITH." Page 173.

When she had gained her chamber she threw off The livery of sorrow for her lord, The cruel sackcloth that begint her limbs, And from those ashen colors issuing forth, Seemed like a golden butterfly new-slipt From its dull chrysalis. Then, after bath, She braided in the darkness of her hair A thread of opals; on her rounded breast Spilt precious ointment; and put on the robes Whose rustling made her pause, half-garmented, To dream a moment of her bridal morn. Of snow-white silk stuff were the robes, and rich With delicate branch-work, silver-frosted star, And many a broidered lily-of-the-vale. These things became her as the scent the rose, For fairest things are beauty's natural dower. The sun that through the jealous casement stole Fawned on the Hebrew woman as she stood, Toyed with the oval pendant at her ear, And, like a lover, stealing to her lips Taught them a deeper crimson; then slipt down The tremulous lilies to the sandal straps That bound her snowy ankles.

Forth she went, A glittering wonder, through the crowded streets, Her handmaid, like a shadow, following on. And as in summer when the beaded wheat Leans all one way, and with a longing look Marks the quick convolutions of the wind,

So all eyes went with Judith as she moved, All hearts leaned to her with a weight of love. A starving woman lifted ghostly hands And blest her for old charities; a child Smiled on her through its tears; and one gaunt chief Threw down his battle-axe and doffed his helm, As if some bright Immortal swept him by.

So forth she fared, the only thing of light In that dark city, thridding tortuous ways By gloomy arch and frowning barbacan, Until she reached a gate of triple brass That opened at her coming, and swung to With horrid clangor and a ring of bolts. And there, outside the city of her love, The warm blood at her pulses, Judith paused And drank the morning; then with silent prayers Moved on through flakes of sunlight, through the wood

To Holofernes and his barbarous hordes.

II.

THE CAMP OF ASSUR.

As on the house-tops of a seaport town, After a storm has lashed the dangerous coast, The people crowd to watch some hopeless ship Tearing its heart upon the unseen reef, And strain their sight to catch the tattered sail That comes and goes, and glimmers, till at last

No eye can find it, and a sudden awe Falls on the people, and no soul may speak: So, from the windy parapets and roofs Of the embattled eity, anxious groups Watched the faint flutter of a woman's dress — Judith, who, toiling up a distant hill, Seemed but a speck against the sunny green; Yet ever as the wind drew back her robes, They saw her from the towers, until she reached The crest, and past into the azure sky. Then, each one gazing on his neighbor's face, Speechless, descended to the level world.

Before his tent, stretched on a leopard-skin, Lay Holofernes, ringed by his dark lords -Himself the prince of darkness. At his side His iron helmet poured upon the grass Its plume of horsehair; on his ponderous spear, The flinty barb thrust half its length in earth, As if some giant had flung it, hung his shield, And on the burnished circuit of the shield A sinewy dragon, rampant, silver-fanged, Glared horrible with sea-green emerald eyes; And, as the sunshine struck across it, writhed, And seemed a type of those impatient lords Who, in the loud war-council here convened, Gave voice for battle, and with fiery words Opposed the cautious wisdom of their peers. So seemed the restless dragon on the shield.

Baleful and sullen as a sulphurous cloud Packed with the lightning, Holofernes lay, Brooding upon the diverse arguments, Himself not arguing, but listening most To the curt phrases of the gray-haired chiefs. And some said: "Take the city by assault, And grind it into atoms at a blow." And some said: "Wait. There's that within the walls

Shall gnaw its heart out — hunger. Let us wait."
To which the younger chieftains: "If we wait,
Ourselves shall starve. Like locusts we have fed
Upon the land till there is nothing left,
Nor grass, nor grain, nor any living thing.
And if at last we take a famished town
With fifty thousand ragged skeletons,
What boots it? We shall hunger all the same.
Now, by great Baäl, we'd rather die at once
Than languish, scorching, on these sun-baked hills!"
At which the others called them "fretful girls,"
And scoffed at them: "Ye should have stayed at home,

And decked your hair with sunny butterflies, Like King Arphaxad's harlots. Know ye not Patience and valor are the head and heart Of warriors? Who lacks in either, fails. Have we not hammered with our catapults Those stubborn gates? Have we not hurled our men Against the angry torrent of their spears? Mark how those birds that wheel above yon wood,

In clanging columns, settle greedily down Upon the unearthed bodies of our dead. See where they rise, red-beaked and surfeited! Has it availed? Let us be patient, then, And bide the sovran pleasure of the gods." "And when," quoth one, "our stores of meat are gone,

We'll even feed upon the tender flesh Of these tame girls, who, though they dress in steel, Like more the dulcet tremors of a lute Than the shrill whistle of an arrow-head."

At this a score of falchions leapt in air, And hot-breathed words took flight from bearded lips,

And they had slain each other in their heat, These savage captains, quick with bow and spear, But that dark Holofernes started up To his full height, and, speaking not a word, With anger-knitted forehead glared at them. As they shrunk back, their passion and their shame Gave place to wonder, finding in their midst A woman whose exceeding radiance Of brow and bosom made her garments seem Threadbare and lustreless, yet whose attire Outshone the purples of a Persian queen.

For Judith, who knew all the mountain paths As one may know the delicate azure veins, Each crossing each, on his belovéd's wrist,

Had stolen between the archers in the wood And gained the straggling outskirts of the camp, And seeing the haughty gestures of the chiefs, Halted, with fear, and knew not where to turn; Then taking heart, had silently approached, And stood among them, until then unseen. And in the air, like numerous swarms of bees, Arose the wondering murmurs of her throng, Which checking, Holofernes turned and cried, "Who breaks upon our councils?" angrily, But drinking then the beauty of her eyes, And seeing the rosy magic of her mouth, And all the fragrant summer of her hair Blown sweetly round her forehead, stood amazed; And in the light of her pure modesty His voice took gentler accent unawares: "Whence come ye?"

"From yon city."

"By our life,

We thought the phantom of some murdered queen Had risen from dead summers at our feet! If these Judæan women are so shaped, Daughters of goddesses, let none be slain. What seek ye, woman, in the hostile camps Of Assur?"

"Holofernes."

"This is he."

"O good my lord," cried Judith, "if indeed Thou art that Holofernes whom I seek,

And seeking dread to find, low at thy feet Behold thy handmaid, who in fear has flown From a doomed people."

"Wherein thou wert wise Beyond the usual measure of thy sex, And shalt have such observance as a king Gives to his mistress, though our enemy. As for thy people, they shall rue the hour That brought not tribute to the lord of all, Nabuchodonosor. But thou shalt live."

"O good my lord," spoke Judith, "as thou wilt, So would thy handmaid; and I pray thee now Let those that listen stand awhile aloof, For I have that for thine especial ear Most precious to thee." Then the crowd fell back, Muttering, and half reluctantly, because Her beauty drew them as the moon the sea -Fell back and lingered, leaning on their shields Under the trees, some couchant in the grass, Broad-throated, large-lunged Titans overthrown, Eying the Hebrew woman, whose sweet looks Brought them a sudden vision of their wives And longings for them: and her presence there Was as a spring that, in Sahara's wastes, Taking the thirsty traveller by surprise, Loosens its silver music at his feet. Then Judith, modest, with down-drooping eyes:

"My lord, if yet thou holdest in thy thought The words which Achior the Ammonite

Once spake to thee concerning Israel, O treasure them, for in them was no guile. True is it, master, that our people kneel To an unseen but not an unknown God: By day and night He watches over us. And while we worship Him we cannot die, Our tabernacles shall be unprofaned, Our spears invincible; but if we sin, If we transgress the law by which we live, Our temples shall be desecrate, our tribes Thrust forth into the howling wilderness. Scourged and accurséd. Therefore, O my lord, Seeing this nation wander from the faith Taught of the Prophets, I have fled dismayed, For fear the towers might crush me as they fall. Heed, Holofernes, what I speak this day, And if the thing I tell thee prove not true Ere thrice the sun goes down beyond those peaks, Then straightway plunge thy falchion in my breast, For 't were not meet that thy handmaid should live, Having deceived the crown and flower of men."

She spoke and paused : and sweeter on his ear Were Judith's words than ever seemed to him The wanton laughter of the Assyrian girls In the bazaars; and listening he heard not The never-ceasing murmurs of the camp, The neighing of the awful battle-steeds, Nor the vain wind among the drowsy palms. The tents that straggled up the hot hillsides,

The warriors lying in the tangled grass, The fanes and turrets of the distant town, And all that was, dissolved and past away, Save this one woman with her twilight eyes And the miraculous cadence of her voice.

Then Judith, catching at the broken thread Of her discourse, resumed, to closer draw The silken net about the foolish prince; And as she spoke, from time to time her gaze Dwelt on his massive stature, and she saw That he was shapely, knitted like a god, A tower beside the men of her own land.

"Heed, Holofernes, what I speak this day, And thou shalt rule not only Bethulîa, Rich with its hundred altars' crusted gold, But Cades-Barne, Jerusalem, and all The vast hill-country even to the sea: For I am come to give unto thy hands The key of Israel, - Israel now no more, Since she disowns her Prophets and her God. Know then, O lord, it is our yearly use To lay aside the first fruit of the grain, And so much oil, so many skins of wine, Which, being sanctified, are kept intact For the High Priests who serve before our God In the great temple at Jerusalem. This holy food — which even to touch is death — The rulers, sliding from their ancient faith,

Would fain lay hands on, being wellnigh starved;
And they have sent a runner to the Priests
(The Jew Ben Raphaim, who, at dead of night,
Shot like a javelin between thy guards),
Bearing a parchment begging that the Church
Yield them permit to eat the sacred corn.
But 't is not lawful they should do this thing,
Yet will they do it. Then shalt thou behold
The archers tumbling headlong from the walls,
Their strength gone from them; thou shalt see the spears

Splitting like reeds within the spearmen's hands, And the pale captains tottering like old men Stricken with palsy. Then, O glorious prince, Then with thy trumpets blaring doleful dooms, And thy silk banners flapping in the wind, With squares of men and eager clouds of horse Thou shalt swoop down on them, and strike them dead!

But now, my lord, before this come to pass, Three days must wane, for they touch not the food Until the Jew Ben Raphaim shall return With the Priests' message. Here among thy hosts, O Holofernes, will I dwell the while, Asking but this, that I and my handmaid Each night, at the twelfth hour, may egress have Unto the valley, there to weep and pray That God forsake this nation in its sin. And as my prophecy prove true or false, So be it with me."

Judith ceased, and stood, Her hands across her bosom, as in prayer; And Holofernes answered: "Be it so. And if, O pearl of women, the event Prove not a dwarf beside the prophecy, Then there's no woman like thee — no, not one. Thy name shall be renownéd through the world, Music shall wait on thee, thou shalt have crowns, And jewel-chests of costly camphor-wood, And robes as glossy as the ring-dove's neck, And milk-white mares, and chariots, and slaves: And thou shalt dwell with me in Nineveh, In Nineveh, the City of the Gods!"

At which the Jewish woman bowed her head Humbly, that Holofernes might not see How blanched her cheek grew. "Even as thou wilt, So would thy servant." At a word the slaves Brought meat and wine, and placed them in **a**

tent,

A silk pavilion, wrought with arabesques, . That stood apart, for Judith and her maid. But Judith ate not, saying: "Master, no. It is not lawful that we taste of these; My maid has brought a pouch of parchéd corn, And bread, and figs, and wine of our own land, Which shall not fail us." Holofernes said, "So let it be," and lifting up the screen Past out, and left them sitting in the tent.

That day he mixt not with the warriors As was his wont, nor watched them at their games In the wide shadow of the terebinth-trees; But up and down within a lonely grove Paced slowly, brooding on her perfect face, Saying her smooth words over to himself, Heedless of time, till he looked up and saw The spectre of the Twilight on the hills.

The fame of Judith's loveliness had flown From lip to lip throughout the canvas town, And as the evening deepened, many came From neighboring camps, with frivolous excuse, To pass the green pavilion — long-haired chiefs That dwelt by the Hydaspe, and the sons Of the Elymeans, and slim Tartar youths; But saw not her, who, shut from common air, Basked in the twilight of the tapestries.

But when night came, and all the camp was still, And nothing moved beneath the icy stars In their blue bourns, except some stealthy guard, A shadow among shadows, Judith rose, Calling her servant, and the sentinel Drew back, and let her pass beyond the lines Into the valley. And her heart was full, Seeing the watch-fires burning on the towers Of her own city: and she knelt and prayed For it and them that dwelt within its walls, And was refreshed — such balm there lies in prayer

For those who know God listens. Straightway then The two returned, and all the camp was still.

One cresset twinkled dimly in the tent Of Holofernes, and Bagoas, his slave, Lay prone across the matting at the door, Drunk with the wine of slumber; but his lord Slept not, or, sleeping, rested not for thought Of Judith's beauty. Two large lucent eyes, Tender and full as moons, dawned on his sleep; And when he woke, they filled the vacant dusk With an unearthly splendor. All night long A stately figure glided through his dream; Sometimes a queenly diadem weighed down Its braided tresses, and sometimes it came Draped only in a misty cloud of veils. Like the King's dancing-girls at Nineveh. And once it bent above him in the gloom, And touched his forehead with most hungry lips. Then Holofernes turned upon his couch, And, yearning for the daybreak, slept no more.

III.

THE FLIGHT.

In the far east, as viewless tides of time Drew on the drifting shallop of the Dawn, A fringe of gold went rippling up the gray, And breaking rosily on cliff and spur,

Still left the vale in shadow. While the fog Folded the camp of Assur, and the dew Yet shook in clusters on the new green leaf, And not a bird had dipt a wing in air, The restless captain, haggard with no sleep, Stept over the curved body of his slave, And thridding moodily the dingy tents, Hives packed with sleepers, stood within the grove, And in the cool, gray twilight gave his thought Wings; but however wide his fancies flew, They circled still the figure of his dream.

He sat: before him rose the fluted domes Of Nineveh, his city, and he heard The clatter of the merchants in the booths Selling their merchandise: and now he breathed The airs of a great river, sweeping down Past carven pillars, under tamarisk boughs, To where the broad sea sparkled : then he groped In a damp catacomb, he knew not where, By torchlight, hunting for his own grim name On some sarcophagus: and as he mused, From out the ruined kingdom of the Past Glided the myriad women he had wronged, The half-forgotten passions of his youth; Dark-browed were some, with haughty, sultry eyes, Imperious and most ferocious loves; And some, meek blondes with lengths of flaxen hair ---

Daughters of Sunrise, shaped of fire and snow,

And Holofernes smiled a bitter smile Seeing these spectres in his revery, When suddenly one face among the train Turned full upon him — such a piteous face, Blanched with such anguish, looking such reproach, So sunken-eyed and awful in its woe, His heart shook in his bosom, and he rose As if to smite it, and before him stood Bagoas, the bondsman, bearing in his arms A jar of water, while the morning broke In dewy splendor all about the grove.

Then Holofernes, vext that he was cowed By his own fantasy, strode back to camp, Bagoas following, sullen, like a hound That takes the color of his master's mood. And with the troubled captain went the shapes Which even the daylight could not exorcise.

"Go, fetch me wine, and let my soul make cheer,

For I am sick with visions of the night. Some strangest malady of breast and brain Hath so unnerved me that a rustling leaf Sets my pulse leaping. 'T is a family flaw, A flaw in men else flawless, this dark spell: I do remember when my grandsire died, He thought a lying Ethiop he had slain Was strangling him; and, later, my own sire Went mad with dreams the day before his death.

And I, too? Slave! go fetch me seas of wine, That I may drown these fantasies — no, stay! Ransack the camps for choicest flesh and fruit, And spread a feast within my tent this night, And hang the place with garlands of new flowers; Then bid the Hebrew woman, yea or nay, To banquet with us. As thou lov'st the light, Bring her; and if indeed the gods have called, The gods shall find me sitting at my feast Consorting with a daughter of the gods!"

Thus Holofernes, turning on his heel Impatiently; and straight Bagoas went And spoiled the camps of viands for the feast, And hung the place with flowers, as he was bid; And seeing Judith's servant at the well, Gave his lord's message, to which answer came: "O what am I that should gainsay my lord?" And Holofernes smiled within, and thought: "Or life or death, if I should have her not In spite of all, my mighty name would be A word for laughter among womankind."

"So soon!" thought Judith. "Flying pulse, be still!

O Thou who lovest Israel, give me strength And cunning such as never woman had, That my deceit may be his stripe and scar, My kisses his destruction. This for thee, My city, Bethulîa, this for thee!"

And thrice that day she prayed within her heart, Bowed down among the cushions of the tent In shame and wretchedness; and thus she prayed: "O save me from him, Lord! but save me most From mine own sinful self: for, lo! this man, Though viler than the vilest thing that walks, A worshipper of fire and senseless stone, Slaver of children, enemy of God --He, even he, O Lord, forgive my sin, Hath by his heathen beauty moved me more Than should a daughter of Judæa be moved, Save by the noblest. Clothe me with Thy love, And rescue me, and let me trample down All evil thought, and from my baser self Climb up to Thee, that aftertimes may say: She tore the guilty passion from her soul, -Judith the pure, the faithful unto death."

Half seen behind the forehead of a crag The evening-star grew sharp against the dusk, As Judith lingered by the curtained door Of her pavilion, waiting for Bagoas: Erewhile he came, and led her to the tent Of Holofernes; and she entered in, And knelt before him in the cresset's glare Demurely, like a slave girl at the feet Of her new master, while the modest blood Makes protest to the eyelids; and he leaned Graciously over her, and bade her rise And sit beside him on the leopard-skins.

But Judith would not, yet with gentlest grace Would not; and partly to conceal her blush, Partly to quell the riot in her breast, She turned, and wrapt her in her fleecy scarf, And stood aloof, nor looked as one that breathed, But rather like some jewelled deity Taken by a conqueror from its sacred niche, And placed among the trappings of his tent — So pure was Judith.

For a moment's space She stood, then stealing softly to his side, Knelt down by him, and with uplifted face, Whereon the red rose blossomed with the white: "This night, my lord, no other slave than I Shall wait on thee with fruits and flowers and wine.

So subtle am I, I shall know thy wish Ere thou canst speak it. Let Bagoas go Among his people: let me wait and serve, More happy as thy handmaid than thy guest."

Thereat he laughed, and, humoring her mood, Gave the black bondsman freedom for the night. Then Judith moved, obsequious, and placed The meats before him, and poured out the wine, Holding the golden goblet while he ate, Nor ever past it empty; and the wine Seemed richer to him for those slender hands. So Judith served, and Holofernes drank,

Until the lamps that glimmered round the tent In mad processions danced before his gaze.

Without, the moon dropt down behind the sky; Within, the odors of the heavy flowers, And the aromas of the mist that curled From swinging cressets, stole into the air; And through the mist he saw her come and go, Now showing a faultless arm against the light, And now a dainty sandal set with gems. At last he knew not in what place he was. For as a man who, softly held by sleep, Knows that he dreams, yet knows not true from false,

Perplext between the margins of two worlds, So Holofernes, flushed with the red wine.

Like a bride's eyes, the eyes of Judith shone, As ever bending over him with smiles She filled the generous chalice to the edge; And half he shrunk from her, and knew not why, Then wholly loved her for her loveliness, And drew her close to him, and breathed her breath; And once he thought the Hebrew woman sang A wine-song, touching on a certain king Who, dying of strange sickness, drank, and past Beyond the touch of mortal agony — A vague tradition of the cunning sprite

That dwells within the circle of the grape.

And thus he heard, or fancied that he heard: -

The small green grapes in countless clusters grew, Feeding on mystic moonlight and white dew And mellow sunshine, the long summer through;

Till, with faint tremor in her veins, the Vine Felt the delicious pulses of the wine; And the grapes ripened in the year's decline.

And day by day the Virgins watched their charge; And when, at last, beyond the horizon's marge, The harvest-moon droopt beautiful and large,

The subtle spirit in the grape was caught, And to the slowly dying Monarch brought, In a great cup fantastically wrought,

Whereof he drank; then straightway from his brain Went the weird malady, and once again He walked the Palace, free of scar or pain —

But strangely changed, for somehow he had lost Body and voice: the courtiers, as he crost The royal chambers, whispered — *The King's Ghost* !

"A potent medicine for kings and men," Thus Holofernes; "he was wise to drink. Be thou as wise, fair Judith." As he spoke, He stoopt to kiss the treacherous soft hand That rested like a snow-flake on his arm,

But stooping reeled, and from the place he sat Toppled, and fell among the leopard-skins: There lay, nor stirred; and ere ten beats of heart, The tawny giant slumbered.

Judith knelt

And gazed upon him, and her thoughts were dark; For half she longed to bid her purpose die — To stay, to weep, to fold him in her arms, To let her long hair loose upon his face, As on a mountain-top some amorous cloud Lets down its sombre tresses of fine rain. For one wild instant in her burning arms She held him sleeping; then grew wan as death, Relaxed her hold, and starting from his side As if an asp had stung her to the quick, Listened; and listening, she heard the moans Of little children moaning in the streets Of Bethulîa, saw famished women pass, Wringing their hands, and on the broken walls The flower of Israel dying.

With quick breath Judith blew out the tapers, all save one, And from his twisted girdle loosed the sword, And grasping the huge hilt with her two hands, Thrice smote the Prince of Assur as he lay, Thrice on his neck she smote him as he lay, And from the brawny shoulders rolled the head Winking and ghastly in the cresset's light;

Which done, she fled into the yawning dark, There met her maid, who, stealing to the tent, Pulled down the crimson arras on the corse, And in her mantle wrapt the brazen head, And brought it with her; and a great gong boomed Twelve, as the women glided past the guard With measured footstep: but outside the camp, Terror seized on them, and they fled like wraiths Through the hushed midnight into the black woods, Where, from gnarled roots and ancient, palsied trees, Dread shapes, upstarting, clutched at them ; and once A nameless bird in branches overhead Screeched, and the blood grew cold about their hearts.

By mouldy caves, the hooded viper's haunt, Down perilous steeps, and through the desolate gorge, Onward they flew, with madly streaming hair, Bearing their hideous burden, till at last, Wild with the pregnant horrors of the night, They dashed themselves against the City's gate.

The hours dragged by, and in the Assur camp The pulse of life was throbbing languidly, When from the outer waste an Arab scout Rushed pale and breathless on the morning watch, With a strange story of a Head that hung High in the air above the City's wall — A livid Head, with knotted, snake-like curls — And how the face was like a face he knew, And how it turned and twisted in the wind,

And how it stared upon him with fixt orbs, Till it was not in mortal man to stay; And how he fled, and how he thought the Thing Came bowling through the wheat-fields after him. And some that listened were appalled, and some Derided him; but not the less they threw A furtive glance toward the shadowy wood.

Bagoas, among the idlers, heard the man, And quick to bear the tidings to his lord, Ran to the tent, and called, "My lord, awake! Awake, my lord!" and lingered for reply. But answer came there none. Again he called, And all was still. Then, laughing in his heart To think how deeply Holofernes slept Wrapt in soft arms, he lifted up the screen, And marvelled, finding no one in the tent Save Holofernes, buried to the waist, Head foremost in the canopies. He stoopt, And drawing back the damask folds beheld His master, the grim giant, lying dead.

As in some breathless wilderness at night A leopard, pinioned by a falling tree, Shrieks, and the echoes, mimicking the cry, Repeat it in a thousand different keys By lonely heights and unimagined caves, So shrieked Bagoas, and so his cry was caught And voiced along the vast Assyrian lines, And buffeted among the hundred hills.

Then ceased the tumult sudden as it rose, And a great silence fell upon the camps, And all the people stood like blocks of stone In some deserted quarry; then a voice Blown through a trumpet clamored: He is dead ! The Prince is dead ! The Hebrew witch hath slain Prince Holofernes ! Fly, Assyrians, fly !

As from its lair the mad tornado leaps, And, seizing on the yellow desert sands, Hurls them in swirling masses, cloud on cloud, So, at the sounding of that baleful voice, A panic seized the mighty Assur hosts, And flung them from their places.

With wild shouts Across the hills in pale dismay they fled, Trampling the sick and wounded under foot, Leaving their tents, their camels, and their arms, Their horses, and their gilded chariots. Then with a dull metallic clang the gates Of Bethulîa opened, and from each A sea of spears surged down the arid hills And broke remorseless on the flying foe -Now hemmed them in upon a river's bank, Now drove them shrieking down a precipice, Now in the mountain-passes slaughtered them, Until the land, for many a weary league, Was red, as in the sunset, with their blood. And other cities, when they saw the rout Of Holofernes, burst their gates, and joined

With trump and banner in the mad pursuit. Three days before those unrelenting spears The cohorts fled, but on the fourth they past Beyond Damascus into their own land.

So, by God's grace and this one woman's hand, The tombs and temples of the Just were saved; And evermore throughout fair Israel The name of Judith meant all nob'est things In thought and deed; and Judith's life was rich With that content the world takes not away. And far-off kings, enamored of her fame, Bluff princes, dwellers by the salt sea-sands, Sent caskets most laboriously carved Of ivory, and papyrus scrolls, whereon Was writ their passion; then themselves did come With spicy caravans, in purple state, To seek regard from her imperial eyes. But she remained unwed, and to the end Walked with the angels in her widow's weeds.

-

-

•

SONNETS AND QUATRAINS.

 ∇ .



SONNETS AND QUATRAINS.

SONNETS.

I.

MIRACLES.

SICK of myself and all that keeps the light Of the blue skies away from me and mine, I climb this ledge, and by this wind-swept pine Lingering, watch the coming of the night. 'T is ever a new wonder to my sight. Men look to God for some mysterious sign, For other stars than those that nightly shine, For some unnatural symbol of His might: — Wouldst see a miracle as grand as those The prophets wrought of old in Palestine? Come watch with me the shaft of fire that glows In yonder West; the fair, frail palaces, The fading alps and archipelagoes, And great cloud-continents of sunset-seas.

(201)

п.

FREDERICKSBURG.

THE increasing moonlight drifts across my bed,
And on the churchyard by the road, I know
It falls as white and noiselessly as snow. . . .
'T was such a night two weary summers fled;
The stars, as now, were waning overhead.
Listen! Again the shrill-lipped bugles blow
Where the swift currents of the river flow
Past Fredericksburg: far off the heavens are red
With sudden conflagration: on yon height,
Linstock in hand, the gunners hold their breath:
A signal-rocket pierces the dense night,
Flings its spent stars upon the town beneath:
Hark ! — the artillery massing on the right,
Hark ! — the black squadrons wheeling down to Death !

III.

PURSUIT AND POSSESSION.

WHEN I behold what pleasure is Pursuit, What life, what glorious eagerness it is; Then mark how full Possession falls from this, How fairer seems the blossom than the fruit— I am perplext, and often stricken mute



"EGYPT." Page 203.

Wondering which attained the higher bliss, The wingéd insect, or the chrysalis It thrust aside with unreluctant foot. Spirit of verse, that still elud'st my art, Thou airy phantom that dost ever haunt me, O never, never rest upon my heart, If when I have thee I shall little want thee! Still flit away in moonlight, rain, and dew, Will-of-the-wisp, that I may still pursue!

IV.

EGYPT.

FANTASTIC Sleep is busy with my eyes: I seem in some waste solitude to stand Once ruled of Cheops: upon either hand A dark illimitable desert lies, Sultry and still — a realm of mysteries; A wide-browed Sphinx, half buried in the sand, With orbless sockets stares across the land, The woefulest thing beneath these brooding skies, Where all is woeful, weird-lit vacancy. 'T is neither midnight, twilight, nor moonrise. Lo! while I gaze, beyond the vast sand-sea The nebulous clouds are downward slowly drawn, And one bleared star, faint-glimmering like a bee, Is shut in the rosy outstretched hand of Dawn.

A PREACHER.

THUS spake the Preacher: "O, my friends, beware! How ever smooth and tempting seems the path, With bowers of cooling shade, the end is wrath: Here 't is unsafe, that 's dangerous footing there; But follow me and have no further care; Make me your guide, for I am one that hath Lived long and gathered in life's aftermath — Experience. I bid you not despair. Reach me your hands and cast away all doubt; I 'll lead you safe along the glacier's shelf: You say 't is dark? 'T is noon-day, I insist; Besides, I know each pitfall hereabout, I know each chasm" — just then the Preacher's self

Stumbled and plunged into eternal mist.

VI.

EUTERPE.

Now if Euterpe held me not in scorn, I 'd shape a lyric, perfect, fair, and round As that thin band of gold wherewith I bound Your slender finger our betrothal morn.

Not of Desire alone is music born, Not till the Muse wills is our passion crowned: Unsought she comes, if sought but seldom found. Hence is it Poets often are forlorn, Taciturn, shy, self-immolated, pale, Taking no healthy pleasure in their kind — Wrapt in their dream as in a coat-of-mail. Hence is it I, the least, a very hind, Have stolen away into this leafy vale Drawn by the flutings of the silvery wind.

VII.

AT BAY RIDGE, LONG ISLAND.

PLEASANT it is to lie amid the grass Under these shady locusts, half the day, Watching the ships reflected on the Bay, Topmast and shroud, as in a wizard's glass: To see the happy-hearted martins pass, Brushing the dew-drops from the lilac spray: Or else to hang enamored o'er some lay Of fairy regions: or to muse, alas! On Dante, exiled, journeying outworn; On patient Milton's sorrowfulest eyes Shut from the splendors of the Night and Morn; To think that now, beneath the Italian skies, In such clear air as this, by Tiber's wave, Daisies are trembling over Keats's grave.

VIII.

GHOSTS.

THOSE forms we fancy shadows, those strange lights That flash on dank morasses, the quick wind That smites us by the roadside — are the Night's Innumerable children. Unconfined By shroud or coffin, disembodied souls, Uneasy spirits, steal into the air From ancient graveyards when the curfew tolls At the day's death. Pestilence and despair Fly with the sightless bats at set of sun; And wheresoever murders have been done, In crowded palaces or lonely woods, Where'er a soul has sold itself and lost Its high inheritance, there, hovering, broods Some sad, invisible, accurséd ghost!

IX.

BY THE POTOMAC.

THE soft new grass is creeping o'er the graves By the Potomac; and the crisp ground-flower Lifts its blue cup to catch the passing shower; The pine-cone ripens, and the long moss waves Its tangled gonfalons above our braves.

Hark, what a burst of music from yon bower! — The Southern nightingale that, hour by hour, In its melodious summer madness raves. Ah, with what delicate touches of her hand, With what sweet voices, Nature seeks to screen The awful Crime of this distracted land — Sets her birds singing, while she spreads her green Mantle of velvet where the Murdered lie, As if to hide the horror from God's eye.

x.

ENAMORED ARCHITECT OF AIRY RHYME.

ENAMORED architect of airy rhyme, Build as thou wilt; heed not what each man says. Good souls, but innocent of dreamers' ways, Will come, and marvel why thou wastest time; Others, beholding how thy turrets climb 'Twixt theirs and heaven, will hate thee all their days:

But most beware of those who come to praise. O Wondersmith, O worker in sublime And heaven-sent dreams, let art be all in all; Build as thou wilt, unspoiled by praise or blame, Build as thou wilt, and as thy light is given: Then, if at last the airy structure fall, Dissolve, and vanish — take thyself no shame. They fail, and they alone, who have not striven.

XI.

THREE FLOWERS.

TO BAYARD TAYLOR.

HEREWITH I send you three pressed withered flowers :

This one was white, with golden star; this, blue As Capri's cave; that, purple and shot through With sunset-orange. Where the Duomo towers In diamond air, and under hanging bowers The Arno glides, this faded violet grew On Landor's grave; from Landor's heart it drew Its magic azure in the long spring hours. Within the shadow of the Pyramid Of Caius Cestius was the daisy found, White as the soul of Keats in Paradise. The pansy — there were hundreds of them, hid In the thick grass that folded Shelley's mound, Guarding his ashes with most lovely eyes.

XII.

AN ALPINE PICTURE.

STAND here and look, and softly hold your breath Lest the vast avalanche come crashing down!

How many miles away is yonder town Set flower-wise in the valley? Far beneath — A scimitar half drawn from out its sheath — The river curves through meadows newly mown; The ancient water-courses are all strown With drifts of snow, fantastic wreath on wreath; And peak on peak against the turquoise-blue The Alps like towering campanili stand, Wondrous, with pinnacles of frozen rain, Silvery, crystal, like the prism in hue. O tell me, Love, if this be Switzerland — Or is it but the frost-work on the pane?

XШ.

TO L. T. IN FLORENCE.

You by the Arno shape your marble dream, Under the cypress and the olive trees, While I, this side the wild, wind-beaten seas, Unrestful by the Charles's placid stream, Long once again to catch the golden gleam Of Brunelleschi's dome, and lounge at ease In those pleached gardens and fair galleries. And yet, perhaps, you envy me, and deem My star the happier, since it holds me here. Even so, one time, beneath the cypresses My heart turned longingly across the sea, Aching with love for thee, New England dear!

And I'd have given all Titian's goddesses For one poor cowslip or anemone.

XIV.

ENGLAND.

WHILE men pay reverence to mighty things, They must revere thee, thou blue-cinctured isle Of England — not to-day, but this long while In the front of nations, Mother of great kings, Soldiers, and poets. Round thee the Sea flings His steel-bright arm, and shields thee from the guile And hurt of France. Secure, with august smile, Thou sittest, and the East its tribute brings. Some say thy old-time power is on the wane, Thy moon of grandeur filled, contracts at length — They see it darkening down from less to less. Let but a hostile hand make threat again, And they shall see thee in thy ancient strength, Each iron sinew quivering, lioness !

XV.

THE LORELEI.

YONDER we see it from the steamer's deck, The haunted Mountain of the Lorelei —

The o'erhanging erags sharp-cut against a sky Clear as a sapphire without flaw or fleck. 'T was here the Siren lay in wait to wreck The fisher-lad. At dusk, as he passed by, Perchance he'd hear her tender amorous sigh, And, seeing the wondrous whiteness of her neck, Perchance would halt, and lean towards the shore; Then she by that soft magic which she had Would lure him, and in gossamers of her hair, Gold upon gold, would wrap him o'er and o'er, Wrap him, and sing to him, and set him mad, Then drag him down to no man knoweth where.

XVI.

BARBERRIES.

In scarlet clusters o'er the gray stone-wall The barberries lean in thin autumnal air: Just when the fields and garden-plots are bare, And ere the green leaf takes the tint of fall, They come, to make the eye a festival! Along the road, for miles, their torches flare. Ah, if your deep-sea coral were but rare (The damask rose might envy it withal), What bards had sung your praises long ago, Called you fine names in honey-worded books — The rosy tramps of turnpike and of lane, September's blushes, Ceres' lips aglow,

Little Red-Ridinghoods, for your sweet looks! — But your plebeian beauty is in vain.

XVII.

HENRY HOWARD BROWNELL.

THEY never crowned him, never knew his worth, But let him go unlaurelled to the grave: Hereafter there are guerdons for the brave, Roses for martyrs who wear thorns on earth, Balms for bruised hearts that languish in the dearth Of human love. So let the lilies wave Above him nameless. Little did he crave Men's praises. Modestly, with kindly mirth, Not sad nor bitter, he accepted fate — Drank deep of life, knew books, and hearts of men, Cities and camps, and war's immortal woe, Yet bore through all (such virtue in him sate His Spirit is not whiter now than then!) A simple, loyal nature, pure as snow.

XVIII.

"EVEN THIS WILL PASS AWAY."

TOUCHED with the delicate green of early May, Or later, when the rose unveils her face,

The world hangs glittering in star-strown space, Fresh as a jewel found but yesterday. And yet 't is very old; what tongue may say How old it is? Race follows upon race, Forgetting and forgotten; in their place Sink tower and temple; nothing long may stay. We build on tombs, and live our day, and die; From out our dust new towers and temples start; Our very name becomes a mystery. What cities no man ever heard of lie Under the glacier, in the mountain's heart, In violet glooms beneath the moaning sea!

XIX.

AT STRATFORD-UPON-AVON.

TO EDWIN BOOTH.

THUS spake his dust (so seemed it as I read The words): Good frend, for Jesvs' sake forbeare (Poor ghost!) To digg the dvst enclosed heare — Then came the malediction on the head Of whoso dare disturb the sacred dead. Outside the mavis whistled strong and clear, And, touched with the sweet glamour of the year, The winding Avon murmured in its bed. But in the solemn Stratford church the air Was chill and dank, and on the foot-worn tomb

The evening shadows deepened momently: Then a great awe crept on me, standing there, As if some speechless Presence in the gloom Was hovering, and fain would speak with me.

XX.

THE RARITY OF GENIUS.

WHILE yet my lip was breathing youth's first breath, Too young to feel the utmost of their spell I saw Medea and Phædra in Rachel: Later I saw the great Elizabeth. Rachel, Ristori — we shall taste of death Ere we meet spirits like these: in one age dwell Not many such; a century may tell Its hundred beads before it braid a wreath For two so queenly foreheads. If it take Æons to form a diamond, grain on grain, Æons to crystallize its fire and dew — By what slow processes must Nature make Her Shakespeares and her Raffaels? Great the gain If she spoil thousands making one or two.

XXI.

SLEEP.

WHEN to soft Sleep we give ourselves away, And in a dream as in a fairy bark Drift on and on through the enchanted dark To purple daybreak — little thought we pay To that sweet bitter world we know by day. We are clean quit of it, as is a lark So high in heaven no human eye can mark The thin swift pinion cleaving through the gray. Till we awake ill fate can do no ill, The resting heart shall not take up again The heavy load that yet must make it bleed; For this brief space the loud world's voice is still, No faintest echo of it brings us pain. How will it be when we shall sleep indeed?

QUATRAINS.

1.

DAY AND NIGHT.

DAY is a snow-white Dove of heaven That from the East glad message brings : Night is a stealthy, evil Raven, Wrapped to the eyes in his black wings.

2.

MAPLE LEAVES.

OCTOBER turned my maple's leaves to gold; The most are gone now; here and there one lingers: Soon these will slip from out the twigs' weak hold, Like coins between a dying miser's fingers. (216)

A CHILD'S GRAVE.

A LITTLE mound with chipped headstone, The grass, ah me! uncut about the sward, Summer by summer left alone With one white lily keeping watch and ward.

4.

PESSIMIST AND OPTIMIST.

THIS one sits shivering in Fortune's smile, Taking his joy with bated, doubtful breath. This other, gnawed by hunger, all the while Laughs in the teeth of Death.

5.

GRACE AND STRENGTH.

MANOAH'S son, in his blind rage malign Tumbling the temple down upon his foes, Did no such feat as yonder delicate vine That day by day untired holds up a rose.

QUATRAINS.

6.

AMONG THE PINES.

FAINT murmurs from the pine-tops reach my ear, As if a harp-string — touched in some far sphere — Vibrating in the lucid atmosphere, Let the soft south wind waft its music here.

7.

FROM THE SPANISH.

To him that hath, we are told, Shall be given. Yes, by the Cross! To the rich man fate sends gold, To the poor man loss on loss.

8.

MASKS.

BLACK Tragedy lets slip her grim disguise And shows you laughing lips and roguish eyes; But when, unmasked, gay Comedy appears, 'T is ten to one you find the girl in tears.

COQUETTE.

OR light or dark, or short or tall, She sets a springe to snare them all; All 's one to her — above her fan She 'd make sweet eyes at Caliban.

10.

EPITAPHS.

Honest Iago. When his breath was fled Doubtless these words were carven at his head. Such lying epitaphs are like a rose That in unlovely earth takes root and grows.

11.

POPULARITY.

SUCH kings of shreds have wooed and won her, Such crafty knaves her laurel owned, It has become almost an honor Not to be crowned.

QUATRAINS.

12.

HUMAN IGNORANCE.

WHAT mortal knows Whence come the tint and odor of the rose? What probing deep Has ever solved the mystery of sleep?

13.

SPENDTHRIFT.

THE fault's not mine, you understand: God shaped my palm so I can hold But little water in my hand And not much gold.

14.

THE IRON AGE.

THE wide-lipped Sphinx, with bent perplexéd brow, Crouches in desert sand, inert and pale, Hearing the engine's raucous scream, that now Sends Echo flying through the Memphian vale.

MYRTILLA.

THIS is the difference, neither more nor less, Between Medusa's and Myrtilla's face: The former slays us with its awfulness, The latter with its grace.

16.

ON HER BLUSHING.

Now the red wins upon her cheek; Now white with crimson closes In desperate struggle — so to speak, A War of Roses.

17.

ON A VOLUME OF ANONYMOUS POEMS ENTITLED A MASQUE OF POETS.

VAIN is the mask. Who cannot at desire Name every Singer in the hidden choir? That is a thin disguise which veils with care The face, but lets the changeless heart lie bare.

FAME.

OF all the thousand verses you have writ, If Time spare none, you will not care at all; If Time spare one, you will not know of it: Nor shame nor fame can scale a churchyard wall.

19. 🕤

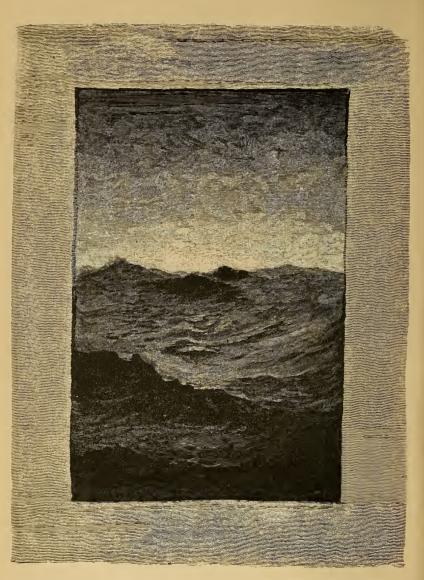
THE DIFFERENCE.

SOME weep because they part, And languish broken-hearted, And others — O my heart ! — Because they never parted.

20.

ON READING -----.

GREAT thoughts in crude, unshapely verse set forth, Lose half their preciousness, and ever must. Unless the diamond with its own rich dust Be cut and polished, it seems little worth.



[&]quot;MOONRISE AT SEA." Page 223.

THE ROSE.

FIXED to her necklace, like another gem, A rose she wore — the flower June made for her; Fairer it looked than when upon the stem, And must, indeed, have been much happier.

22.

MOONRISE AT SEA.

UP from the dark the moon begins to creep; And now a pallid, haggard face lifts she Above the water-line: thus from the deep A drownéd body rises solemnly.

23.

ROMEO AND JULIET.

FROM mask to mask, amid the masquerade, Young Passion went with challenging, soft breath: "Art Love?" he whispered; "art thou Love, sweet maid?"

Then Love, with glittering eyelids, "I am Death."

QUATRAINS.

24.

OMAR KHAYYÁM.

(After Fitzgerald.)

SULTAN and Slave alike have gone their way With Bahrám Gúr, but whither none may say;

Yet he who charmed the wise at Naishápúr Seven centuries since still charms the wise to-day.

25.

CIRCUMSTANCE.

LINKED to a clod, harassed, and sad With sordid cares, she never knew life's sweet Who should have moved in marble halls, and had Kings and crown-princes at her feet.

26.

HERRICK.

IT often chances that the staunchest boat Goes down in seas whereon a leaf might float. What mighty epics have been wrecked by Time Since Herrick launched his cockle-shells of rhyme!

224

27.

MEMORIES.

Two things there are with Memory will abide — Whatever else befall — while life flows by : That soft cold hand-touch at the altar side; The thrill that shook you at your child's first cry.

28.

FROM EASTERN SOURCES.

I.

IN youth my hair was black as night, My life as white as driven snow: As white as snow my hair is now, And that is black which once was white.

п.

No wonder Sajib wrote such verses, when He had the bill of nightingale for pen; Or that his lyrics were divine Whose only ink was tears and wine.

III.

A FOOR dwarf's figure, looming through the dense Mists of a mountain, seemed a shape immense, On seeing which, a giant, in dismay, Took to his heels and ran away.

29.

EVIL EASIER THAN GOOD.

ERE half the good I planned to do Was done, the short-breathed day was through. Had my intents been dark instead of fair I had done all, and still had time to spare.

30.

THE PARCÆ.

In their dark House of Cloud The three weird sisters toil till time be sped: One unwinds life; one ever weaves the shroud; One waits to cut the thread. VI.

MERCEDES.

CHARACTERS.

ACHILLE LOUVOIS. LABOISSIÈRE. PADRE JOSÉF. MERCEDES. URSULA. SERGEANT & SOLDIERS.

SCENE: SPAIN. PERIOD: 1810.

ACT I.

A detachment of French troops bivouacked on the edge of the forest of Covelleda. — A sentinel is seen on the cliffs overhanging the camp. — The guard is relieved in dumb-show as the dialogue progresses. — Louvois and Laboissière, wrapped in great-coats, are seated by a smouldering fire of brushwood in the foreground. — Starlight.

Scene I.

LOUVOIS, LABOISSIÈRE.

LABOISSIÈRE.

Louvois!

LOUVOIS, starting from a reverie.

Eh? What is it? I must have slept.

LABOISSIÈRE.

With eyes staring at nothing, like an Egyptian idol! This is not amusing. You are as gloomy tonight as an undertaker out of employment.

LOUVOIS.

Say, rather, an executioner who loathes his trade. (229)

No, I was not asleep. I cannot sleep with this business on my conscience.

LABOISSIÈRE.

In affairs like this, conscience goes to the rear — with the sick and wounded.

LOUVOIS.

One may be forgiven, or can forgive himself, many a cruel thing done in the heat of battle; but to steal upon a defenceless village, and in cold blood sabre old men, women, and children — that revolts me.

LABOISSIÈRE.

What must be, must be.

LOUVOIS.

Yes - the poor wretches.

LABOISSIÈRE.

The orders are —

LOUVOIS.

Every soul!

LABOISSIÈRE.

They have brought it upon themselves, if that comforts them. Every defile in these infernal mountains bristles with carabines; every village gives shelter or warning to the guerrillas. The army is being deci-

230

mated by assassination. It is the same ghastly story throughout Castile and Estremadura. After we have taken a town we lose more men than it cost us to storm it. I would rather look into the throat of a battery at forty paces than attempt to pass through certain streets in Madrid or Burgos after night-fall. You go in at one end, but, *diantre* ! you don't come out at the other.

LOUVOIS.

What would you have? It is life or death with these people.

LABOISSIÈRE.

I would have them fight like Christians. Poisoning water-courses is not fighting, and assassination is not war. Some such blow as we are about to strike is the sort of rude surgery the case demands.

LOUVOIS.

Certainly the French army on the Peninsula is in a desperate strait. The men are worn out contending against shadows, and disheartened by victories that prove more disastrous than defeats in other lands.

LABOISSIÈRE.

It is the devil's own country. The very birds here have no song.¹ Even the cigars are damnable. Will you have one?

¹ Except in a few provinces, singing-birds are rare in Spain, owing to the absence of woodland.

231

LOUVOIS.

Thanks, no.

LABOISSIÈRE, after a pause.

This village of Arguano which we are to discipline, as the brave Junot would say, is it much of a village?

LOUVOIS.

No; an insignificant hamlet — one wide *calle* with a zigzag line of stucco houses on each side; a posada, and a forlorn chapel standing like an overgrown tombstone in the middle of the cemetery. In the marketplace, three withered olive trees. On a hilltop overlooking all, a windmill of the time of Don Quixote. In brief, the regulation Spanish village.

LABOISSIÈRE.

You have been there, then ? — with your three withered olive trees !

LOUVOIS, slowly.

Yes, I have been there. . . .

LABOISSIÈRE, aside.

He has that same odd look in his eyes which has puzzled me these two days. (Aloud.) If I have touched a wrong chord, pardon! You have unpleasant associations with the place.

LOUVOIS.

I? O, no; on the contrary I have none but agreeable memories of Arguano. I was quartered there, or, rather, in the neighborhood, for several weeks a year or two ago. I was recovering from a wound at the time, and the air of that valley did me better service than a platoon of surgeons. Then the villagers were simple, honest folk - for Spaniards. Indeed, they were kindly folk. I remember the old padre, he was not half a bad fellow, though I have no love for the long-gowns. With his scant black soutane, and his thin white hair brushed behind his ears under a skull-cap, he somehow reminded me of my old mother in Languedoc, and we were good comrades. We used now and then to empty a bottle of Valdepeñas together in the shady posada garden. The native wine here, when you get it pure, is better than it promises.

LABOISSIÈRE.

Why, that was consorting with the enemy! The Church is our deadliest foe now. Since the bull of Pius VII., excommunicating the Emperor, we all are heretical dogs in Spanish eyes. His Holiness has made murder a short cut to heaven.¹ By poniarding

¹ In Andalusia, and in fact throughout Spain at that period, the priests taught the children a catechism of which this is a specimen : "How many Emperors of the French are there?" "One actually, in three deceiving persons."—"What are they

or poisoning a Frenchman, these fanatics fancy that they insure their infinitesimal souls.

LOUVOIS.

Yes, they believe that; yet when all is said, I have no great thirst for this poor padre's blood. If the maréchal had only turned over to me some other village! No - I do not mean what I say. Since the work was to be done, it was better I should do it. There's a fatality in sending me to Arguano. Remember that. From the moment the order came from headquarters I have had such a heaviness here. (Pauses.) Awhile ago, in a half doze, I dreamed of cutting down this harmless old priest who had come to me to beg mercy for the women and children. I cut him 'across the face, Laboissière! I saw him still smiling, with his lip slashed in two. The irony of it! When I think of that smile I am tempted to break my sword over my knee, and throw myself into the ravine yonder.

LABOISSIÈRE, aside.

This is the man who got the cross for sabring three gunners in the trench at Saragossa. It is droll he called ?" "Napoleon, Murat, and Manuel Godoy, Prince of the Peace."—"Which is the most wicked ?" "They are all equally so."—"What is the French ?" "Apostate Christians turned heretics."—"What punishment does a Spaniard deserve who fails in his duty ?" "The death and infamy of a traitor." —"Is it a sin to kill a Frenchman ?" "No, my father ; heaven is gained by killing one of these heretical dogs." should be so moved by the idea of killing a beggarly old Jesuit more or less. (Aloud.) Bah! it was only a dream, *voilá tout* — one of those villainous nightmares which run wild over these hills. I have been kicked by them myself many a time. What, the devil! dreams always go by contraries; in which case you will have the satisfaction of being knocked on the head by the venerable padre — and so quits. It may come to that. Who knows? We are surrounded by spies; I would wager a week's rations that Arguano is prepared for us.

LOUVOIS.

If I thought that! An assault with resistance would cover all. Yes, yes — the spies. They must be aware of our destination and purpose. A movement such as this could not have been made unobserved. (Abruptly.) Laboissière!

LABOISSIÈRE.

Well?

LOUVOIS.

There was a certain girl at Arguano, a niece or god-daughter to the old padre — a brave girl.

LABOISSIÈRE.

Ah — so? Come now, confess, my captain, it was the *sobrina*, and not the old priest, you struck down in your dream.

LOUVOIS.

Yes, that was it. How did you know?

LABOISSIÈRE.

By instinct and observation. There is always a woman at the bottom of everything. You have only to go deep enough.

LOUVOIS.

This girl troubles me. I was ordered from Arguano without an instant's warning — at midnight — between two breaths, as it were. Then communication with the place was cut off. . . . I have never heard word of her since.

LABOISSIÈRE.

So? Did you love her?

LOUVOIS.

I have not said that.

LABOISSIÈRE.

Speak your thought, and say it. I ever loved a love-story, when it ran as clear as a trout-brook and had the right heart-leaps in it. With this wind sighing in the tree-tops, and these heavy stars drooping over us, it is the very place and hour for a bit of romance. Come, now.

236

LOUVOIS.

It was all of a romance.

LABOISSIÈRE.

I knew it! I will begin for you : You loved her.

LOUVOIS.

Yes, I loved her! It was the good God that sent her to my bedside. She nursed me day and night. She brought me back to life. . . . I know not how it happened; the events have no sequence in my memory. I had been wounded; I dropped from the saddle as we entered the village, and was carried for dead into one of the huts. Then the fever took me. . . . Day after day I plunged from one black abyss into another, my wits quite gone. At odd intervals I was conscious of some one bending over me. Now it seemed to be a demon, and now a white-hooded sister of the Sacred Heart at Paris. Oftener it was that madonna above the altar in the old mosque at Cordova. Such strange fancies take men with gunshot wounds! One night I awoke in my senses, and there she sat, with her fathomless eyes fixed upon my face, like a statue of pity. You know those narrow, melting eyes these women have, with a dash of Arab fire in them. . . .

LABOISSIÈRE.

Know them? Sacrebleu!

LOUVOIS.

The first time I walked out she led me by the hand, I was so very weak, like a little child learning to walk. It was spring, the skies were blue, the almonds were in blossom, the air was like wine. Great heaven ! how beautiful and fresh the world was, as if God had just made it ! From time to time I leaned upon her shoulder, not thinking of her. . . . Later I came to know her — a saint in disguise, a peasant-girl with the instincts of a duchess !

LABOISSIÈRE.

They are always like that, saints and duchesses by brevet! I fell in with her own sister at Barcelona. Look you — braids of purple-black hair and the complexion of a newly-minted napoleon! I forget her name. (Knitting his brows.) Paquita. . . . Mariquita? It was something-quita, but no matter.

LOUVOIS

How it all comes back to me! The wild footpaths in the haunted forest of Covelleda; the broken Moorish water-tank, in the plaza, against which we leaned to watch the gypsy dances; the worn stone-step of the cottage, where we sat of evenings with guitar and cigarette! What simple things make a man forget that his grave lies in front of him! (Pauses.) There was a lover, a contrabandista, or something — a fellow who might have played the spadassin in one of Lope de

Vega's cloak-and-dagger comedies. The gloom of the lad, fingering his stiletto - hilt! Presently she sent him to the right-about, him and his scowls — the poor devil.

LABOISSIÈRE.

Oh, a very bad case !

LOUVOIS.

I would not have any hurt befall that girl, Laboissière !

LABOISSIÈRE.

Surely.

LOUVOIS.

And there's no human way to warn her of her danger!

LABOISSIÈRE.

To warn her would be to warn the village — and defeat our end. However, no French messenger could reach the place alive.

LOUVOIS.

And no other is possible. Now you understand my misery. I am ready to go mad!

LABOISSIÈRE.

You take the thing too seriously. Nothing ever is so bad as it looks, except a Spanish ragoût. After

all, it is not likely that a single soul is left in Arguano. The very leaves of this dismal forest are lips that whisper of our movements. The villagers have doubtless made off with that fine store of grain and aguardiente we so sorely stand in need of, and a score or two of the brigands are probably lying in wait for us in some narrow cañon.

LOUVOIS.

God will it so.

LABOISSIÈRE.

Louvois, if the girl is at Arguano, not a hair of her head shall be harmed, though I am shot for it when we get back to Burgos!

LOUVOIS.

You are a brave soul, Laboissière! Your words have lifted a weight from my bosom.

LABOISSIÈRE.

Are we not comrades, we who have fought side by side these six months and lain together night after night with this blue arch for our tent-roof? Dismiss your anxiety. What is that Gascogne proverb?— "We suffer most from the ills that never happen." Let us get some rest; we have had a rude day. . . . See, the stars have doubled their pickets out there to the westward.

240

LOUVOIS.

You are right; we should sleep. We march at daybreak. Good-night.

LABOISSIÈRE ..

Good-night, and vive la France!

LOUVOIS.

Vive l'Empéreur !

LABOISSIÈRE walks away humming.

"Reposez-vous, bons chevaliers !"

LOUVOIS, looking after him.

There goes a light heart. But mine . . . mine is as heavy as lead.

SCENE II.

LYRICAL INTERLUDE.

SOLDIERS' SONG.

While this is being sung behind the scenes the guard is relieved on the cliffs. Louvois wraps his cloak around him and falls into a troubled sleep.

> THE camp is hushed ; the fires burn low ; Like ghosts the sentries come and go : Now seen, now lost, upon the height

A keen drawn sabre glimmers white. Swiftly the midnight steals away — *Reposez-vous, bons chevaliers !*

Perchance into your dream shall come Visions of love or thoughts of home; The furtive night wind, hurrying by, Shall kiss away the half-breathed sigh, And softly whispering, seem to say, *Reposez-vous, bons chevaliers!*

Through star-lit dusk and shimmering dew It is your lady comes to you ! Delphine, Lisette, Annette — who knows By what sweet wayward name she goes ? Wrapped in white arms till break of day, *Reposez-vous, bons chevaliers !*

ACT II.

Morning. — The interior of a stone hut in Arguano. — Through the door opening upon the calle are seen piles of Indian corn, sheaves of wheat, and loaves of bread partly consumed. — Empty wine-skins are scattered here and there among the cinders. — In one corner of the chamber, which is low-studded but spacious, an old woman, propped up with pillows, is sitting on a pallet and corooning to herself. — At the left, a settle stands against the wall. — In the centre of the room a child lies asleep in a cradle. — Mercedes. — Padre Joséf entering abruptly.

SCENE I.

MERCEDES, Padre JOSÉF, then URSULA.

Padre JOSÉF.

Mercedes ! daughter ! are you mad to linger so ?

MERCEDES.

Nay, father, it is you who are mad to come back.

Padre JOSÉF.

We were nearly a mile from the village when I missed you and the child. I had stopped at your cottage, and found no one. I thought you were with those who had started at sunrise.

MERCEDES.

Nay, I brought Chiquita here last night when I heard the French were coming. (243)

Padre JOSÉF.

Quick, Mercedes! there is not an instant to waste.

MERCEDES.

Then hasten, Padre Joséf, while there is yet time. (Pushes him towards the door.)

Padre JOSÉF.

And you, child ?

MERCEDES.

I shall stay.

Padre JOSÉF.

Listen to her, Sainted Virgin! she will stay, and the French bloodhounds at our very heels !

MERCEDES, glancing at Ursula.

Could I leave old Ursula, and she not able to lift foot? Think you — my own flesh and blood !

Padre JOSÉF.

Ah, cielo ! true. They have forgotten her, the cowards ! and now it is too late. God willed it — santificado sea tu nombre ! (Hesitates.) Mercedes, Ursula is old — very old; the better part of her is already dead. See how she laughs and mumbles to herself, and knows naught of what is passing.

MERCEDES.

The poor grandmother! she thinks it is a saint's day. (Seats herself on the settle.)

Padre JOSÉF.

What is life or death to her whose soul is otherwhere? What is a second more or less to the leaf that clings to a shrunken bough? But you, Mercedes, the long summer smiles for such as you. Think of yourself, think of Chiquita. Come with me, child, come !

URSULA.

Ay, ay, go with the good padre, dear. There is dancing on the plaza. The gitanos are there, mayhap. I hear the music. I had ever an ear for tamborines and castanets. When I was a slip of a girl I used to foot it with the best in the cachuca and the bolera. I was a merry jade, Mercedes — a merry jade. Wear your broidered garters, dear.

MERCEDES.

She hears music. (Listens.) No. Her mind wanders strangely to-day, now here, now there. The gray spirits are with her. (To Ursula gently.) No, grandmother, I came to stay with you, I and Chiquita.

Padre JOSÉF.

You are mad, Mercedes. They will murder you all.

MERCEDES.

They will not have the heart to harm Chiquita, nor me, perchance, for her sake.

Padre JOSÉF.

They have no hearts, these Frenchmen. Ah, Mercedes, do you not know better than most that a Frenchman has no heart?

MERCEDES, hastily.

I know nothing. I shall stay. Is life so sweet to me? Go, Padre Joséf. What could save you if they found you here? Not your priest's gown.

Padre JOSÉF.

You will follow, my daughter?

MERCEDES.

No.

Padre JOSÉF.

I beseech you!

MERCEDES.

No.

Padre JOSÉF.

Then you are lost!

MERCEDES.

Nay, padrino, God is everywhere. Have you not yourself said it? Lay your hands for a moment on my head, as you used to do when I was a little child, and go — go !

Padre JOSÉF.

Thou wert ever a wilful girl, Mercedes.

MERCEDES.

O, say not so; but quick - your blessing, quick !

Padre JOSÉF.

 $\mathbf{\acute{A}}$ Dios. . . .

He makes the sign of the cross on Mercedes' forehead, and slowly turns away. Mercedes rises, follows him to the door, and looks after him with tears in her eyes. Then she returns to the middle of the room, and sits on a low stool beside the cradle.

SCENE II.

MERCEDES, URSULA.

URSULA, after a silence.

Has he gone, the good padre?

MERCEDES.

Yes, dear soul.

URSULA, reflectively.

He was your uncle once.

MERCEDES.

Once? Yes, and always. How you speak!

URSULA.

He is not gay any more, the good padre. He is getting old . . . getting old.

MERCEDES.

To hear her! and she eighty years last San Miguel's day!

URSULA,

What day is it?

MERCEDES, laying one finger on her lips.

Hist! Chiquita is waking.

URSULA, querulously.

Hist? Nay, I will say my say in spite of all. Hist? God save us! who taught thee to say hist to thy elders? Ay, ay, who taught thee? . . . What day is it?

MERCEDES, aside.

How sharp she is awhiles! (Aloud.) Pardon, pardon! Here is little Chiquita, with both eyes wide open, to

help me beg thy forgiveness. (Takes up the child.) See, she has a smile for grandmother . . . Ah, no, little one, I have no milk for thee; the trouble has taken it all. Nay, cry not, dainty, or that will break my heart.

URSULA.

Sing to her, *nieta*. What is it you sing that always hushes her? 'T is gone from me.

MERCEDES.

I know not.

URSULA.

Bethink thee.

MERCEDES.

I cannot. Ah — the rhyme of The Three Little White Teeth?

URSULA, clapping her hands.

Ay, ay, that is it !

MERCEDES rocks the child, and sings :

Who is it opens her bright blue eye, Bright as the sea and blue as the sky ?— Chiquita ! Who has the smile that comes and goes Like sunshine over her mouth's red rose ?— Muchachita !

What is the softest laughter heard, Gurgle of brook or trill of bird, Chiquita? Nay, 't is thy laughter makes the rill Hush its voice and the bird be still, *Muchachita !*

Ah, little flower-hand on my breast, How it soothes me and gives me rest ! Chiquita ! What is the sweetest sight I know ? Three little white teeth in a row, Three little white teeth in a row, Muchachita !

As Mercedes finishes the song a roll of drums is heard in the calle. At the first tap she starts and listens intently, then assumes a stolid air. The sound approaches the door and suddenly ceases.

SCENE III.

LABOISSIÈRE, MERCEDES, then SOLDIERS.

LABOISSIÈRE, outside.

A sergeant and two men to follow me! (Mutters.) Curse me if there is so much as a mouse left in the whole village. Not a drop of wine, and the bread burnt to a crisp — the *scélérats* / (Appears at the threshold.) Hulloa! what is this? An old woman and a young one — an Andalusian by the arch of her instep and the length of her eyelashes! (In Spanish.) Girl, what are you doing here?

MERCEDES, in French.

Where should I be, monsieur?

LABOISSIÈRE.

You speak French?

MERCEDES.

Caramba! since you speak Spanish.

LABOISSIÈRE.

It was out of politeness. But talk your own jargon — it is a language that turns to honey on the tongue of a pretty woman. (Aside.) It was my luck to unearth the only woman in the place! The captain's white blackbird has flown, bag and baggage, thank Heaven! Poor Louvois, what a grim face he made over the empty nest! (Aloud.) Your neighbors have gone. Why are you not with them?

MERCEDES, pointing to Ursula.

It is my grandmother, señor; she is paralyzed.

LABOISSIÈRE.

So? You could not carry her off, and you remained?

MERCEDES.

Precisely.

LABOISSIÈRE.

That was like a brave girl. (Touching his cap.) I salute valor whenever I meet it. Why have all the villagers fied?

MERCEDES.

Did they wish to be massacred?

LABOISSIÈRE, shrugging his shoulders.

And you?

MERCEDES.

It would be too much glory for a hundred and eighty French soldiers to kill one poor peasant girl. And then to come so far!

LABOISSIÈRE, aside.

She knows our very numbers, the fox! How she shows her teeth!

MERCEDES.

Besides, señor, one can die but once.

LABOISSIÈRE.

That is often enough. — Why did your people waste the bread and wine ?

MERCEDES.

That yours might neither eat the one nor drink the other. We do not store food for our enemies.

LABOISSIÈRE.

They could not take away the provisions, so they destroyed them?

MERCEDES, mockingly.

Nothing escapes you !

LABOISSIÈRE.

Is that your child?

MERCEDES.

Yes, the *hija* is mine.

LABOISSIÈRE.

Where is your husband — with the brigands yonder?

MERCEDES.

My husband?

LABOISSIÈRE.

Your lover, then.

MERCEDES.

I have no lover. My husband is dead.

LABOISSIÈRE.

I think you are lying now. He's a guerrilla.

MERCEDES.

If he were I should not deny it. What Spanish

woman would rest her cheek upon the bosom that has not a carabine pressed against it this day? It were better to be a soldier's widow than a coward's wife.

LABOISSIÈRE, aside.

The little demon! But she is ravishing! She would have upset St. Anthony, this one — if he had belonged to the Second Chasseurs! What is to be done? Theoretically, I am to pass my sword through her body; practically, I shall make love to her in ten minutes more, though her readiness to become a widow is not altogether pleasing! (Aloud.) Here, sergeant, go report this matter to the captain. He is in the posada at the farther end of the square.

Exit sergeant. Shouts of exultation and laughter are heard in the calle, and presently three or four soldiers enter bearing several hams and a skin of wine.

1st SOLDIER.

Voilà, lieutenant!

LABOISSIÈRE.

Where did you get that?

2d SOLDIER.

In a cellar hard by, hidden under some rushes.

3d SOLDIER.

There are five more skins of wine like this jolly fellow in his leather jacket. Pray order a division of the booty, my lieutenant, for we are as dry as herrings in a box.

254

LABOISSIÈRE.

A moment, my braves. (Looks at Mercedes significantly.) Woman, is that wine good?

MERCEDES.

The vintage was poor this year, señor.

LABOISSIÈRE.

I mean — is that wine good for a Frenchman to drink?

MERCEDES.

Why not, señor?

LABOISSIÈRE, sternly.

Yes or no?

MERCEDES.

Yes.

LABOISSIÈRE.

Why was it not served like the rest, then?

MERCEDES.

They hid a few skins, thinking to come back for it when you were gone. An ill thing does not last forever.

LABOISSIÈRE.

Open it, some one, and fetch me a glass. (To Mercedes.) You will drink this.

MERCEDES, coldly.

When I am thirsty I drink.

LABOISSIÈRE.

Pardieu! this time you shall drink because I am thirsty.

MERCEDES.

As you will. (Empties the glass.) To the King !

LABOISSIÈRE.

That was an impudent toast. I would have preferred the Emperor or even Godoy; but no matter each after his kind. To whom will the small-bones drink?

MERCEDES.

The child, señor?

LABOISSIÈRE.

Yes, the child; she is pale and sickly-looking; a draught will do her no harm. All the same she will grow up and make some man wretched.

MERCEDES.

But señor. . . .

LABOISSIÈRE.

Do you hear?

256

MERCEDES.

But Chiquita, señor — she is so little, only thirteen months old, and the wine is strong !

LABOISSIÈRE.

She shall drink.

MERCEDES.

No, no!

LABOISSIÈRE.

I have said it, sacré nom —

MERCEDES.

Give it me, then. (Takes the glass and holds it to the child's lips.)

LABOISSIÈRE, watching her closely.

Woman! your hand trembles.

MERCEDES.

Nay, it is Chiquita swallows so fast. See! she has taken it all. Ah, señor, it is a sad thing to have no milk for the little one. Are you content?

LABOISSIÈRE.

Yes; I now see that the men may quench their thirst without fear. One cannot be too cautious in this hospitable country! Fall to, my children; but first a glass for your lieutenant. (Drinks.)

URSULA.

Ay, ay, the young forget the old . . . forget the old.

LABOISSIÈRE, laughing.

Why, the depraved old sorceress! But she has reason. She should have her share. *Place aux dames*! A cup, somebody, for Madame la Diablesse!

MERCEDES, aside.

José-Maria!

One of the men carries wine to Ursula. Mercedes lays the child in the cradle, and sits on the stool beside it, resting her forehead on her palms. Laboissière stretches himself on the settle. Several soldiers come in, and fill their canteens from the wine-skin. They stand in groups, talking in undertones among themselves.

LABOISSIÈRE suddenly starts to his feet and dashes his glass on the floor.

The child! look at the child! What is the matter with it? It turns livid — it is dying! Comrades, we are poisoned!

MERCEDES rises hastily and throws her mantilla over the cradle.

Yes, you are poisoned! Al fuego — al fuego — todos al fuego ! 1 You to perdition, we to heaven !

LABOISSIÈRE.

Quick, some of you, go warn the others! (Unsheathes his sword.) I end where I ought to have begun.

¹ To the flames — to the flames — all of you to the flames !

MERCEDES, tearing aside her neckerchief.

Strike here, señor. . . .

LOUVOIS enters, and halts between the two with a dazed expression; he glances from Laboissière to the woman, and catches his breath.

Mercedes !

LABOISSIÈRE.

Louvois, we are dead men! Beware of her, she is a fiend! Kill her without a word! The drink already throttles me — I — I cannot breathe here. (Staggers out, followed wildly by the soldiers.)

SCENE IV.

LOUVOIS, MERCEDES.

LOUVOIS.

What does he say?

MERCEDES.

You heard him.

LOUVOIS.

His words have no sense. (Advancing towards her.) O, why are you in this place, Mercedes?

MERCEDES, recoiling.

I am here, señor -

LOUVOIS.

You call me señor — you shrink from me —

MERCEDES.

Because we Spaniards do not desert those who depend upon us.

LOUVOIS.

Is that a reproach? Ah, cruel! Have you forgotten —

MERCEDES.

I have forgotten nothing. I have had cause to remember all. I remember, among the rest, that a certain wounded French officer was cared for in this village as if he had been one of our own people and now he returns to massacre us.

LOUVOIS.

Mercedes!

MERCEDES.

I remember the morning, nearly two years ago, when Padre Joséf brought me your letter. You had stolen away in the night — like a deserter ! Ah, that letter — how it pierced my heart, and yet bade me live ! Because it was full of those smooth oaths which women love, I carried it in my bosom for a twelvemonth; then for another twelvemonth I carried it be-

cause I hoped to give it back to you. (Takes a paper from her bosom.) See, señor, what slight things words are ! (Tears the paper into small pieces which she scatters at his feet.)

LOUVOIS.

Ah!

MERCEDES.

Sometimes it comforted me to think that you were dead. You were only false!

LOUVOIS.

It is you who have broken faith. I should be the last of men if I had deserted you. Why, even a dog has gratitude. How could I now look you in the face?

MERCEDES.

'T was an ill day you first did so!

LOUVOIS.

Listen to me!

MERCEDES.

Too many times I have listened. Nay, speak not; I might believe you !

LOUVOIS.

If I do not speak the truth, despise me! Since I left Arguano I have been at Lisbon, Irun, Aranjuez, among the mountains — I know not where, but ever

in some spot whence it was impossible to get you tidings. A wall of fire and steel shut me from you. Thrice I have had my letters brought back to me with the bearers' blood upon them; thrice I have trusted to messengers whose treachery I now discover. For a chance bit of worthless gold they broke the seals, and wrecked our lives! Ah, Mercedes, when my silence troubled you, why did you not read the old letter again? If the words you had of mine lost their value, it was because they were like those jewels in the padre's story, which changed their color when the wearer proved unfaithful.

MERCEDES.

Aquilles !

LOUVOIS.

Though I could not come to you nor send to you, I never dreamed I was forgotten. I used to say to myself: "A week, a month, a year — what does it matter? That brown girl is as true as steel!" I think I bore a charmed life in those days; I grew to believe that neither sword nor bullet could touch me until I held you in my arms again. (The girl stands with her hands crossed upon her bosom and looks at him with a growing light in her eyes.) It was the day before yesterday that our brigade returned to Burgos — at last! at last! O, love, my eyes were hungry for you! Then that dreadful order came. Arguano had been to me what Mecca is to the Mohammedan — a shrine to be reached through toil

and thirst and death. O, what a grim freak it was of fate, that I should lead a column against Arguano — my shrine, my Holy Land !

Mercedes moves swiftly across the room, and kneeling on the flag-stones near Louvois's feet begins to pick up the fragments of the letter. He suddenly stoops and takes her by the wrists.

Mercedes!

MERCEDES.

Ah, but I was so unhappy! Was I unhappy? I forget. (Looks up in his face and laughs.) It is so very long ago! An instant of heaven would make one forget a century of hell! When I hear your voice, two years are as yesterday. It was not I, but some poor girl I used to know who was like to die for you. It was not I - I have never been anything but happy. Nay, I needs must weep a little for her, the days were so heavy to that poor girl. And when you go away again, as go you must —

LOUVOIS.

I shall take you with me, Mercedes. Do you understand? You are to go with me to Burgos. (Aside.) What a blank look she wears! She does not seem to understand.

MERCEDES, abstractedly.

With you to Burgos? I was there once, in the great cathedral, and saw the bishops in their golden robes and all the jewelled windows ablaze in the sun-

set. But with you? Am I dreaming this? The very room has grown unfamiliar to me. The crucifix yonder, at which I have knelt a hundred times, was it always there? My head is full of unwonted visions. I think I hear music and the sound of casta. nets, like poor old Ursula. Those cries in the calle — is it a merry-meeting? Ah! what a pain struck my heart then! O God! I had forgotten! (Clutches his arm and pushes him from her.) Have you drunk wine this day?

LOUVOIS.

Why, Mercedes, how strange you are !

MERCEDES.

No, no! have you drunk wine?

LOUVOIS.

Well, yes, a cup without. What then? How white you are !

MERCEDES.

Quick! let me look you in the face. I wish to tell you something. You loved me once . . . it was in May . . . your wound is quite well now? No, no, not that! All things slip from me. Chiquita — Nay, hold me closer, I do not see you. Into the sunlight — into the sunlight!

LOUVOIS.

She is fainting !

MERCEDES.

I am dying — I am poisoned. The wine was drugged for the French. I was desperate. Chiquita — there in the cradle — she is dead — and I — (Sinks down at his feet.)

LOUVOIS, stooping over her.

Mercedes! Mercedes!

After an interval a measured tramp is heard outside. A sergeant with a file of soldiers in disorder enters the hut.

SCENE V.

SERGEANT and SOLDIERS.

1st SOLDIER.

Behold ! he has killed the murderess.

2d SOLDIER.

If she had but twenty lives now!

3d SOLDIER.

That would not bring back the brave Laboissière and the rest.

2d SOLDIER.

Sapristi, no! but it would give us life for life.

4th SOLDIER.

Miséricorde! are twenty ----

SERGEANT.

Hold your peace, all of you! (Advances and salutes Louvois, who is half kneeling beside the body of the woman.) My captain! (Aside.) He does not answer me. (Lays his hand hurriedly on Louvois's shoulder, and starts.) Silence, there! and stand uncovered. He is dead!

VII. LATER LYRICS.



1.0

LATER LYRICS.

INTAGLIOS.

By the chance turning of a spade In Roman earth, to view are laid Bits of carnelian, bronze and gold, Laboriously carved of old — Sleek Bacchus with his leaves and grapes; Bow-bending Centaurs; Gorgon shapes; Pallas Athene helmeted; Some grim, forgotten emperor's head. . . . This one, most precious for its make, That other, for the metal's sake.

A touch — and lo! are brought to light Fancies long buried out of sight In hearts of poets . . . bits of rhyme Fashioned in some forgotten time And thrown aside, but, found to-day, Have each a value in its way . . . This, for the skill with which 't is wrought, That, for the pathos of its thought.

(269)

270 LYRICS AND EPICS - HEREDITY.

LYRICS AND EPICS.

I WOULD be the Lyric Ever on the lip,
Rather than the Epic Memory lets slip!
I would be the diamond At my lady's ear,
Rather than the June-rose Worn but once a year!

HEREDITY.

A SOLDIER of the Cromwell stamp, With sword and psalm-book by his side, At home alike in church and camp: Austere he lived, and smileless died.

But she, a creature soft and fine — From Spain, some say, some say from France Within her veins leapt blood like wine — She led her Roundhead lord a dance!

In Grantham church they lie asleep; Just where, the verger may not know. Strange that two hundred years should keep The old ancestral fires aglow!

COMEDY.

In me these two have met again; To each my nature owes a part: To one, the cool and reasoning brain; To one, the quick, unreasoning heart.

COMEDY.

THEY parted, with clasps of hand, And kisses, and burning tears. They met, in a foreign land, After some twenty years:

Met as acquaintances meet, Smilingly, tranquil-eyed — Not even the least little beat Of the heart, upon either side!

They chatted of this and that, The nothings that make up life; She in a Gainsborough hat, And he in black for his wife.

Ah, what a comedy this! Neither was hurt, it appears: Yet once she had leaned to his kiss, And once he had known her tears!

PRESCIENCE.

PRESCIENCE.

- THE new moon hung in the sky, the sun was low in the west,
- And my betrothed and I in the church-yard paused to rest —
- Happy maiden and lover, dreaming the old dream over:
- The light winds wandered by, and robins chirped from the nest.
- And lo! in the meadow-sweet was the grave of a little child,
- With a crumbling stone at the feet and the ivy running wild —

Tangled ivy and clover folding it over and over: Close to my sweetheart's feet was the little mound up-piled.

- Stricken with nameless fears, she shrank and clung to me,
- And her eyes were filled with tears for a sorrow I did not see:
- Lightly the winds were blowing, softly her tears were flowing —
- Tears for the unknown years and a sorrow that was to be!

ONE WOMAN-REALISM.

ONE WOMAN.

THOU listenest to us with unlistening ear; Alike to thee our censure and our praise: Thou hearest voices that we may not hear; Thou livest only in thy yesterdays!

We see thee move, erect and pale and brave;
Soft words are thine, sweet deeds, and gracious will;
Yet thou art dead as any in the grave — Only thy presence lingers with us still.

With others, joy and sorrow seem to slip Like light and shade, and laughter kills regret: But thou — the fugitive tremor of thy lip Lays bare thy secret — thou canst not forget!

REALISM.

ROMANCE beside his unstrung lute, Lies stricken mute. The old-time fire, the antique grace, You will not find them anywhere. To-day we breathe a commonplace, Polemic, scientific air: We strip Illusion of her veil;

DISCIPLINE.

We vivisect the nightingale To probe the secret of his note. The Muse in alien ways remote Goes wandering.

DISCIPLINE.

In the crypt at the foot of the stairs They lay there, a score of the Dead: They could hear the priest at his prayers, And the litany overhead.

They knew when the great crowd stirred As the Host was lifted on high; And they smiled in the dark when they heard Some light-footed nun trip by.

Side by side on their shelves For years and years they lay; And those who misbehaved themselves Had their coffin-plates taken away.

Thus is the legend told In black-letter monkish rhyme, Explaining those plaques of gold That vanished from time to time!

APPRECIATION.

To the sea-shell's spiral round 'T is your heart that brings the sound: The soft sea-murmurs that you hear Within, are captured from your ear.

You do poets and their song A grievous wrong, If your own soul does not bring To their high imagining As much beauty as they sing.

THORWALDSEN.

WE often fail by searching far and wide For what lies close at hand. To serve our turn We ask fair wind and favorable tide. From the dead Danish sculptor let us learn To make Occasion, not to be denied: Against the sheer, precipitous mountain-side Thorwaldsen carved his Lion at Lucerne.

276 THE VOICE OF THE SEA-KNOWLEDGE.

THE VOICE OF THE SEA.

In the hush of the autumn night I hear the voice of the sea, In the hush of the autumn night It seems to say to me — Mine are the winds above, Mine are the caves below, Mine are the dead of yesterday And the dead of long ago!

And I think of the fleet that sailed From the lovely Gloucester shore, I think of the fleet that sailed And came back nevermore ! My eyes are filled with tears, And my heart is numb with woe — It seems as if 't were yesterday, And it all was long ago !

KNOWLEDGE.

KNOWLEDGE — who hath it? Nay, not thou, Pale student, pondering thy futile lore! A little space it shall be thine, as now 'T is his whose funeral passes at thy door: Last night a clown that scarcely knew to spell — Now he knows all. O wondrous miracle!

IN THE BELFRY OF THE NIEUWE KERK. 277

IN THE BELFRY OF THE NIEUWE KERK.

(AMSTERDAM.)

Nor a breath in the stifled, dingy street! On the Stadhuis tiles the sun's strong glow Lies like a kind of golden snow. In the square one almost sees the heat. The mottled tulips over there By the open casement pant for air. Grave, portly burghers, with their *vrouws*, Go hat in hand to cool their brows.

But high in the fretted steeple, where The sudden chimes burst forth and scare The lazy rooks from the belfry beam, And the ring-doves as they coo and dream On flying-buttress or carven rose — Up here, *mein Gott* ! a tempest blows !— Such a wind as bends the forest tree, And rocks the great ships out at sea.

Plain simple folk, who come and go On humble levels of life below, Little dream of the gales that smite Mortals dwelling upon the height!

278 APPARITIONS – MARÉCHAL NIEL.

APPARITIONS.

AT noon of night, and at the night's pale end, Such things have chanced to me

As one, by day, would scarcely tell a friend For fear of mockery.

- Shadows, you say, mirages of the brain! I know not, faith, not I.
- Is it more strange the dead should walk again Than that the quick should die?

MARÉCHAL NIEL.

BEFORE those counterscarps of lace,

Which offer such undreamed resistance,

I have so fallen into disgrace,

O Marshal, that I crave assistance.

In vain I send my JacqueminotEach day to speak her fair and tender;With scornful lip the lovely foeEach day refuses to surrender.

I cry you help, O flower of knights, Upon my bended knee I sue it;

If any man can scale those heights, You, Marshal, you're the man can do it!

BAYARD TAYLOR.

To plant above that heart of steel (In front of which I bend despairing) Your golden ensign — Marshal Niel, It were a venture worth your daring!

BAYARD TAYLOR.

In other years - lost youth's enchanted years, Seen now, and evermore, through blinding tears And empty longing for what may not be -The Desert gave him back to us; the Sea Yielded him up; the icy Norland strand Lured him not long, nor that soft German air He loved could keep him. Ever his own land Fettered his heart and brought him back again. What sounds are these of farewell and despair Blown by the winds across the wintry main! What unknown way is this that he has gone, Our Bayard, in such silence and alone? What new strange quest has tempted him once more To leave us? Vainly, standing by the shore, We strain our eyes. But patience ! . . . when the soft

Spring gales are blowing over Cedarcroft, Whitening the hawthorn; when the violets bloom Along the Brandywine, and overhead The sky is blue as Italy's — he will come! Ay, he will come! To us he is not dead.

THE leafless branches snap with cold; The night is still, the winds are laid; And you are sitting, as of old, Beside my hearth-stone, heavenly maid! What would have chanced me all these years, As boy and man, had you not come And brought me gifts of smiles and tears From your Olympian home?

"The blackest cloud that ever lowers," You sang when I was most forlorn, "If we but watch some patient hours, Takes silver edges from the morn." Thanks for the lesson; thanks for all, Not only for ambrosia brought, But for those drops which fell like gall Into the cup of thought.

Dear Muse, 't is twenty years or more Since that enchanted, fairy time When you came tapping at my door, Your reticule stuffed full of rhyme. What strange things have befallen, indeed, (280)

Since then! Who has the time to say What bards have flowered (and gone to seed) — Immortal for a day!

We've seen Pretense with cross and crown, And Folly caught in self-spun toils; Merit content to pass unknown, And Honor scorning public spoils — Seen Bottom wield the critic's pen While Ariel sang in sun-lit cloud: Sometimes we wept, and now and then

We could but laugh aloud.

And once we saw — ah, day of woe! — The lurid fires of civil war, The blue and gray frocks laid a-row, And many a name rise like a star To shine in splendor evermore. The fiery flood swept hill and plain, But clear above the battle's roar

Rang slavery's falling chain.

With pilgrim staff and sandal-shoon, One time we sought the Old-World shrines: Saw Venice lying in the moon, The Jungfrau and the Apennines; Beheld the Tiber rolling dark, Rent temples, fanes, and gods austere; In English meadows heard the lark

That charmed her Shakspeare's ear.

What dreams and visions we have had, What tempests we have weathered through ! Been rich and poor, and gay and sad, But never hopeless — thanks to you. A draught of water from the brook, Or *alt hochheimer* — it was one; Whatever fortune fell we took, Children of shade and sun.

Though lacking gold, we never stooped To pick it up in all our days; Though lacking praise we sometimes drooped, We never asked a soul for praise. The exquisite reward of song Was song — the self-same thrill and glow Which to unfolding flowers belong

And wrens and thrushes know!

I tried you once — the day I wed: Dear Muse, do you remember how You rose in haste, and turned and fled, With sudden-knitted, scornful brow? But you relented, smiled, at last Returned, and, with your tears half dried, "Ah well, she cannot take the Past,

Though she have all beside !"

What gilt-winged hopes have taken flight, And dropped, like Icarus, in mid-sky! What cloudy days have turned to bright! What fateful years have glided by!

What lips we loved vain memory seeks! What hands are cold that once pressed ours! What lashes rest upon the cheeks Beneath the snows and flowers!

We would not wish them back again; The way is rude from here to there: For us, the short-lived joy and pain, For them, the endless rest from care, The crown, the palm, the deathless youth: We would not wish them back — ah, no! And as for us, dear Muse, in truth, We've but half way to go.

 $\mathbf{283}$

~

INDEX.

Across the Street, 57. After the Rain, 36. Apparitions, 278. Appreciation, 275. Arab Welcome, An, 17.

Baby Bell, 73. Ballad, 42. Bayard Taylor, 279. Before the Rain, 36. Bluebells of New England, The, 48.

Castles, 37. CLOTH OF GOLD, 17. Comedy, 271. Crescent and the Cross, The, 19.

Dæmon Lover, The, 45. December, 39. Destiny, 51. Discipline, 274. Dressing the Bride, 21.

Epilogue, 280.

Fable, 56. Faded Violet, The, 41. Flower and Thorn, 13. Flight of the Goddess, The, 88. FRIAR JEROME'S BEAUTIFUL BOOK, ETC., 111. Friar Jerome's Beautiful Book, 111. Frost-Work, 53.

Guerdon, The, 127.

Hascheesh, 30. Haunted, 55. Heredity, 270. Hesperides, 35.

Identity, 53. In an Atelier, 140. Ingratitude, 38. In the Belfry of the Nieuwe Kerk, 277. Intaglios, 269. INTERLUDES, 35. In the Old Church Tower, 85. Invocation to Sleep, 81.

Jew's Gift, The, 130.

Judith: I. Judith in the Tower, 164; II. The Camp of Assur, 174; III. The Flight, 185.

Knowledge, 276.

Lady of Castelnore, 136. Landscape, 53. Latakia, 26. LATER LYRICS, 269. Legend of Ara Cœli, The, 149. Lost at Sea, 95. Love's Calendar, 62. Lunch, The, 42. Lyrics and Epics, 270.

Maréchal Niel, 278. May, 47. Metempsychosis, The, 104. MERCEDES: I. The Bivouac, 229; **IF. A:** Arguano, 243. Miantowona, 119.

Nameless Pain, 43. Nocturne, 59.

Old Castle, An, 92. On an Intaglio Head of Minerva, 90. One White Rose, The, 43. One Woman, 273. On Lynn Terrace, 100.

Palabras Cariñosas, 46. Palinode, 62. Pampina, 77. Pepita, 146. Persian, Two Songs from the, 22. Piazza of St. Mark at Midnight, The, 103. Piscataqua River, 86. Prelude, A, 31. Prescience, 272. Prosem, 17.

QUATRAINS: A Child's Grave, 217. Among the Pines, 218. Circumstance, 224. Coquette, 219. Day and Night, 216. Epitaphs, 219. * Evil easier than Good, 226.

INDEX.

Fame, 222. From Eastern Sources, 225. From the Spanish, 218. Grace and Strength, 217. Herrick, 224. Human Ignorance, 220. Maple Leaves, 216. Masks, 218. Memorics, 225. Myrtilla, 221. Omar Khayyám, 224. On a Volume of Anonymous Poems, 221. On Reading —, 222. Pessimist and Optimist, 217. Popularity, 219. Romeo and Juliet, 223. Spendthritt, 220. The Difference, 222. The Jifference, 222. The Jifference, 220. The Parce, 226. The Parce, 226. The Parce, 927. Queen's Ride, The, 97. Realism, 273.

Rencontre, 61. Rococo, 54. Romance, 50.

Seadrift, 83. Snow-Flake, A, 57. Sony-Time, 45. SonyErs: An Alpine Picture, 208. A Preacher, 204. At Bay Ridge, L. I., 205. At Stratford-upon-Avon, 213. Barberries, 211. By the Potomac, 206. Egypt, 203. Enamored Architect of Airy Rhyme, 207. England, 210. Euterpe, 204. Even this will Pass Away, 212. Fredericksburg, 202. Ghosts, 206. Henry Howard Brownell, 212. Miracles, 201. Pursuit and Possession, 202. Sileep, 215. The Lorelei, 210. The Rarity of Genius, 214. Three Flowers, 208. To L. T. in Florence, 209. Sorcery, 80. SPRING IN NEW ENGLAND AND OTHER POEMS, 67. Spring in New England, 67. Sultana, The, 24. Thorwaldsen, 275. Tiore Lilies, 23.

Thorwaldsen, 275. Tiger Lilies, 23. Tita's Tears, 134. Tragedy, The, 143. Turkish Legend, A., 18. Two-and-Twenty, At, 44.

Unforgiven, The, 20. Untimely Thought, An, 60. Unsung, 52.

Voice of the Sea, The, 276.

Wedded, 49. When the Sultan goes to Ispahan, 28. Winter-Piece, A, 61. World's Way, The, 25.

-

·

4

· · · ·

.

.

.

-•



